इस अंक मे

R.N.I NO. MPHIN/2002/14167

National News Magazine
पब्लिक प्वाइन्ट
PUBLIC POINT
www.publicpointnews.com

वर्ष-9 अंक-10 नवम्बर 2010

सम्पादक : अरुण द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक : सत्यनारायण भटेले
सलाहकार सम्पादक : ईश्वरचंद्र त्रिपाठी
विज्ञापन प्रबंधक : विनोद कुमार
प्रसार प्रबंधक : दीपक द्विवेदी

प्रशासकीय कार्यालय
35,नीलम कॉलोनी,जहांगीबाद,
भोपाल मध्यप्रदेश
मोबाइल: 9303134311, 9424413392,
9893088024

●

दिल्ली कार्यालय
सुधीर शर्मा
153-67, बलवीर नगर, एक्स शाहदरा,
नई दिल्ली, दूरभाष 011-22132661

●

मुंबई कार्यालय
बी.आर.दुबे
बुद्व कालोनी, रूम नं, 8-1, पाईप रोड
कुर्ला, मुंबई, दूरभाष 9821082661

●

इलाहाबाद कार्यालय
धनन्जय सिंह
शिवनगर कालोनी, अल्लापुर, इलाहाबाद,
उत्तरप्रदेश दूरभाष 2501801

●

रायपुर कार्यालय
भगवानदीन प्रजापति
पिथौरा, रायपुर, छत्तीसगढ़
दूरभाष- 2271294

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक,संपादक,अरुण द्विवेदी द्वारा पब्लिकपब्लिकेशन35,नीलमकॉलोनी,जहांगीबाद, भोपाल-462008 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेख, विचार, सूचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार, किसी भी प्रकार के कानूनीविवाद हेतु न्यायिक क्षेत्र भोपाल होगा।

साख पर सवाल

संघ लोक सेवा आयोग के इतिहास में यह पहली घटना है, जब सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा परिणाम के विरोध में इतनी बड़ी संख्या में छात्र सड़क पर उतर आए हैं। वे सभी आयोग का सामूहिक विरोध कर रहे हैं। आयोग द्वारा जारी किए गए नतीजे की पेजवार समीक्षा करते हुए प्रतियोगी परीक्षार्थी रामजी मिश्र कहते हैं, ''परीक्षा परिणाम कई दृष्टिकोण से अचंभित करते हैं।

हाउसिंग बोर्ड को सपनि बनाने की साजिश

मप्र हाउसिंग बोर्ड के ही कुछ अधिकारी बोर्ड को मप्र सड़क परिवहन निगम बनाने पर आमदा हैं। इसके चलते बोर्ड को गुपचुप तरीके से आर्थिक हानि पहुंचाई जा रही है। बोर्ड के सतना कार्यालय ने जबलपुर संभाग से एक कदम आगे बढ़ कर बोर्ड की जमीन को ही बेच डाला

कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी

विश्व में अनेक संस्कृतियाँ पनपी और मिट गई। आज उनका कहीं नामोंनिशान तक नहीं है, सिर्फ उनकी स्मृति बाकी है, लेकिन भारतीय संस्कृति में है ऐसा कुछ कि वह कुछ नहीं मिटा। उसे मिटाने के बहुत प्रयास हुए और यह सिलसिला आज भी जारी है,

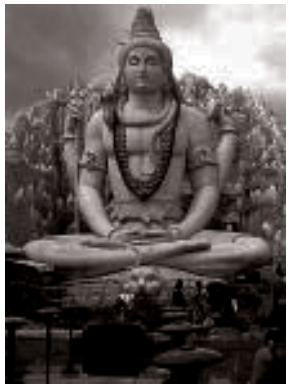

पर कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी। भारतीय संस्कृति में आखिर क्या है, जो उसे हमेशा बचाए रखता है, जिसकी वजह से वह हजारों साल से विदेशी हमलावरों से लोहा लेती रही और इन दिनों इन पर जो हमले हो रहे हैं, उसका मुकाबला कर रही है ? आखिर कैसा है वह भारतीय संस्कृति का वह तंत्र, जिसे हमलावार संस्कृतियाँ छिन्न-भिन्न नहीं कर पातीं ? हर बार उन्हें लगता है कि इस बार वे इसे अवश्य पदाक्रांत कर लेंगी, पर हुआ हमेशा उलटा है, वे खुद ही पदाक्रांत होकर भारतीय संस्कृति में विलीन हो गईं, क्यों और कैसे ?

हम सब मिलकर देश को आगे बढ़ाये

आज संचार माध्यम की तेजी के साथ-साथ मीडियाँ में भी आश्चर्यजनक रफ्तार आयी है, किसी भी अहम खबर को दुनियाँ भर में मिंनटों में पहुँचने में देर नहीं लगती है। नतीजे में जनता बेहद जागरूक हो गई है। लेकिन ख़बरों की इस भाग-दौड़ में देश और समाज की असल समस्याये और उसके हल की ओर जनता का ध्यान केंन्दित करने में अधिकतर मीडिया सफल नहीं हो पायी है, और न ही देशवासियों में देशहित में कुछ करने का ज़ज्बा पैदा करने में विशेष योगदान दे पायी है। क्योकि उनके सामने विज्ञापन लेने और टीआरपी बढ़ाने की होड़ है, इसलिए यही वो लिखते और दिखाते है, जिससे लोग वाह वाह करें। कोई हर्ज़ नहीं है, लेकिन कुछ ऐसा भी कीजियें जिससे आत्मिक संतोष भी मिले। जबकि हक़ीकत है कि देश के सामने विकराल समस्याये जैसे भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, बेरोजगारी, महँगाई, छुआछूत, गरीबी, भेदभाव, अदालतों के फैसलों में देरी, जातवाद, क्षेत्रीयता, भाषावाद व कश्मीर, पड़ोसी देशो से संबंध विदेशनीति आदि जैसे अनगिनत समस्याये है, जिसपर भी मीड़ियाँ को खास ध्यान देना चाहियें और चटकारे या वक्त गुजारने के लिए ख़बरो को ज़रिया बनने देने के बजाय, देश व समाज को दिशा निर्देश की जिम्मेदारी आज के सबसे मजबूत स्तंभ मीडियाँ को भी समझनी चाहिये। अगरचे ये भी सही है कि जो कुछ भी अच्छा देखने या सुनने को मिल रहा है उसमें मीडिया का बहुत योगदान है वरना हमारे नेताओं ने तो जैसे देश को बर्बाद करने की कसम खा रखी हो। अगर सही मानों में आप इन समस्यायों का विष्लेषण करने बैठेगें तो ये बात आइने की तरह से साफ हो जायेगी कि देश को बनाने और बिगाड़ने में इन नेताओं का कितना हाथ हैं। साथ ही इस बात से इंकार नहीं कि नेताओं की किस्मों और योगदान में भी अपवाद स्वरूप महान हस्तियां भी मिल जायेगी। साथ ही मीडिया और राजनीति जो लोग अच्छे है, उनका हमें हार्दिक स्वागत करना चाहियें। आज देश हिन्दू-मुस्लिम और समझदार लोगों में बट गया है, मीडिया भी किसी हद तक इस बटवारे की शिकार है। नतीजे में जहर फैल रहा है, जो देशहित में किसी भी तरह नहीं है। हम नेताओं के चक्कर में पड़कर उनके हितो को साधने के लिए देश को तरह-तरह के खानों में बाँट रहे है। क्या ही अच्छा होता कि हम सब मिलकर देश को आगे बढ़ाने के उपायों के बारे में सोचते। ऐसी मिसाल कायम करते की दुनियां हमारा अनुसरण करती, जैसे की आज दुनियां के जापान,चीन, अमेरिका, यहां तक की इज़राइल जैसे जो हमसे हर मामले में बहुत छोटा देश है लेकिन अधिकतर मामलों में देखते-देखते कितना आगे बढ़ गया है। आइयें हम सब देश और समाज को बेहतर बनाने का फैसला ले ताकि आत्मिक संतोष मिल सके और देश व समाज के प्रति हमारी जो जिम्मेदारी है उसमें कुछ योगदान कर सके।

संपादक

मध्यप्रदेश

मण्डला का अंखफोड़वा काण्ड

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से करीब साढ़े चार सौ किलोमीटर दूर स्थित आदिवासी बहुल जिला मण्डला आज कल चर्चा का विषय है। एक तरफ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश में आदिवासी- वनवासियों की दशा व दिशा को सुधारने की शायद नेक नियति से सम्मान यात्रा तथा आने वाले फरवरी माह में मण्डला मे ही आदिवासी- वनवासी कुंभ के आयोजन की तैयारी में व्यस्त हैं। वहीं दूसरी तरफ उन्हीं का प्रशासनिक अमला एवं उनके पार्टी के लोग आदिवासी-वनवासियों पर कितना क्रूर अत्याचार कर रहे हैं, इस बात को देखने-सुननेवाला कोई नही है। मण्डला जिला मुख्यालय से करीब बीस किलोमीटर दूर स्थित आदिवासी-वनवासी ग्राम झिरिया सहित आस पास के कई गांव में आदिवासी-वनवासियो के साथ हुए इस क्रूर अत्याचारी अंखफोड़वा कृत्य की जितनी भी भर्त्सना की जाय वह कम है। अंखफोड़वा अत्याचार की तरफ न राज्य सरकार का ध्यान है, और न ही जिला प्रशसन का। झिरिया सहित आस पास के गांवो का जायजा ले कर लौट रहे इस संवाददाता से एक बुजुर्ग आदिवासी द्वारा कही बात मन में कौंध रही है। बेटा, रावन के दस सिर बीस आंख थी लेकिन उसके-शार्गिदों द्वारा किया गया अत्याचार उसे भी नही दिखताथा। अन्त में एक निर्वासित, वनवासी सा जीवन जीने बाले श्री राम के हाथों उसका क्या हश्र हुआ, पूरी दुनिया जनती है। आँखो की रोशनी गवाँ कर इन अंधेरा पसरे गांवो में असहनीय दर्द से कराहते आदिवासियों की आवाज जब गांव के सन्नाटे को चीरती हुई निकलती है तो हर जुबान यही निकाल रही है। हे राम क्या हो गया? यहां प्रस्तुत है मण्डला जिले के झिरिया गांव से लौट कर पब्लिक प्वांइट के सम्पादक अरूण द्विवेदी की आँखों देखी रिर्पोट का एक अंश।

मण्डला मुख्यालय से करीब बीस किलोमीटर दूर स्थित आदिवासी-वनवासी ग्राम झिरिया - सन्नाटा पसरा ,उबड़-खाबड़ गलियारा मैं व एक और पत्रकार साथी दिन के करीब डेढ़ बजे पसरे सन्नाटे को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे, कि अचानक गलियारे के किनारे बनी एक झोपड़ी से कराहने की आवाज आई, और हमारे पैर रूक गए । कुछ क्षण सोचने के बाद उस अजनबी झोपड़ी कीओर अनायास हमने बढ़ना शुरू किया। चंद मिनिट गुजरते ही मैं और मेरे साथी उस झोपड़ी के दरवाजे पर खड़े आवाज लगा रहे थे। है कोई ,दरवाजा खोलो। अन्दर से पीड़ा भरी आवाज आई कौन है , मैंने जबाव दिया मैं एक आगन्तुक हूँ । भोपाल से आया हूँ । उधर से पुन: पीड़ा भरी एक वृद्ध महिला की आवाज आई। बेटा दरवाजा खुला है ,अन्दर आ जाओ। झोपड़ी में प्रवेश करते ही रोंगटे खड़े हो गए । देखते हैं, सामने घास-फूस की दसनी पर लेटी एक आँख कि वृद्ध

क्या है योगीराज हास्पिटल ?

महिला कराहें भर रही है। मैंने पूछा माता जी क्या तकलीफ है। बेटा तुम कौन हो ? मैंने आज तक तुमको नही देखा, इसलिए नहीं पहचानती। मैंने उत्तर दिया माता जी मैं भोपाल से आया हूँ । पत्रकार हूँ। वह अपने कांपते हाथों में ताकत भरने का प्रयास कर उठने की कोशिश कर ही रही थी, कि मेरे साथी ने उसे सहारा दिया। पता चला वृद्धा को तेज बुखार था। उसका बदन जल रहा था। मैने पूछा-कुछ दवा-गोली खाई है। उत्तर आया, नही बेटा,यह दवा से जाने वाला बुखार नहीं है। इसी बुखार कि दबाई नि:शुल्क कराने मंडला गई थी तो आंख निकलवा के आई हूं । उसने फफकते-फफकते अपने मैली -कुचैली धोती केआंचल मे बधीं गांठ को खोल एक नकली आंख हमारी ओर बढ़ा दी। हमने पूछा यह क्या है? वह बोली डाक्टर बता रहे थे इसी आंख के कारण बुखार आ रहा था डाक्टरों ने आंख भी निकाल दी फिर भी बुखार ठीक नही हुआ। अब यह बुखार मेरे मौत के साथ ही जायेगा बेटा। हमने पूछा डाक्टर का पर्चा है। उसने अपने बिछौने के नीचे रखे पर्चे को हमारी ओर बढ़ाते हुए कहा-बेटा,इस पर्चे की सभी गोली खाई लेकिन बुखार नही ठीक हुई। अब आंख

का दर्द नही सहा जाता। भगवान जल्दी उठा ले,यही चाहती हूं। हमने पर्चे को हाथ में थामते हुए देखा। यह मंडला के योगीराज हास्पिटल का था। पर्चे में डाक्टर द्वारा आंख का आपरेशनकरने के बाद दवाई के नाम पर एसीलाक और काम्बीफ्लेम के अलावा कुछ भी नही लिखा था। उक्त वृद्धा की तरह झिरिया व आसपास के चार अन्य गांवों के करीब ४० बुजुर्गों की भी यही व्यथा है।

मंडला जिला मुख्यालय पर स्थित यह

हास्पिटल इस इलाके के जाने माने संत ब्रम्हलीन स्वामीश्री सीताराम जी महाराज आश्रम के नाम पर संचालित ट्रस्ट द्वारा चलाया जाता है। इस ट्रस्ट की स्थापना महाराजश्री की चल -अचल संपत्ति को बचाने के लिये की गई थी। जानकारो के अनुसार यह हास्पिटल महाराष्ट्र के नागपुर स्थित मेसर्स स्ट्रेटजिक कन्सेप्ट इंडिया नामक संस्था से भी जुड़ा हुआ है। यह संस्था देश मे आई बैंक चलाती है। पदमश्रीअर्वाड प्राप्त करने वाले डाक्टर महात्मने भी इस हास्पिटल से जुड़े बताये जाते हैं। इसके अलावा भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता टी एस मिश्रा सहित यहा के जाने माने उद्योगपति दीपक छावड़ा भी इस संस्थान के ट्रस्टी हैं। यहा का प्रबंधन मरीजों को लुभाने के लिए समय-समय पर नि:शुल्क शिविर आयोजन के पर्चे बुलेटिन बांटता ही रहता है। इस संवाददाता ने देखा मंडला के हर आम खास जगहों पर बड़े -बड़े होर्डिंग्स मंडला की शान योगीराज हास्पिटल के स्लोगन के साथ जिला प्रशासन के नाक के नीचे टंगे हैं। यहा का जिला प्रशासन मूक दर्शक बना बैठा है। जैसे उसने ग्रामीण गरीब दीनदयालों पर जुल्म करते रहने की मौन स्वीकृत सी दे रखी है।

क्या कहते हैं हास्पिटल के कर्मचारी ?

जब इस प्रकरण मे तहकीकात करने यह संवाददाता हास्पिटल पहुंचा तो वहां सन्नाटा पसरा था । खाली पलगों को देख कर,यह संवाददाता यह जानना चाहा की यहां के मरीज कहां हैं । पता चला ,कि यहां मरीज नि:शुल्क कैंम्प के समय ही भर्ती होते हैं । बाकी समय ये पलग ऐसे ही खाली रहते हैं। हास्पिटल का कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति बात करने को ही तैयार नही। जैसे ही उन्हें पता चला की मीडिया के दो संवाददाता भोपाल से आये हैं ,बात करना चाहते हैं। हास्पिटल के एक कर्मचारी को मोबाइल पर यह निर्देश दिया की इन्हे टी एस शर्मा का

मोबाइल नंबर दे कर अपना पीछा छुड़ाओ और स्वयं पीछे के दरवाजे से खिसखते नजर आए। जब टीएस शर्मा से मोबाइल पर बात हुई और उनका ध्यान इस बात की ओर दिलाया गया तो उन्होने कहा मैं घर पर हूं आप यहाँ आ जाए।

क्या कहते हैं हास्पिटल के ट्रस्टी टी एस मिश्रा

कुछ बदमाश किस्म के लोग इस हास्पिटल

को बदनाम करने कि साजिश रच रहे हैं। हमारे यहा बहुत सारे आपरेशन हुए हैं। उनमे एक भी शिकायत नही हैं । उसकी चर्चा कोई नही कर रहा है। इस प्रकरण में हमारे हास्पिटल का कोई दोष नही है। यह बात अब तक कि जाँच रिपोर्ट से साबित हो चुकी है। केवल मरीजों की लापरवाही व संक्रमण के करण आँखें खराब हुई हैं। यदि मरीज समय पर हास्पिटल आ जाते तो कुछ किया जा सकता था। जब उन्हें यह बताया गया कि आपरेशन के बाद हास्पिटल के डाक्टरों ने सभी पर्चो पर एक ही दवा एसीलाक और काम्बीफ्लेम के अलावा कुछ भी नही लिखा है। क्या ?आपरेशन के बाद एसीलाक और काम्बीफ्लेम के अलावा और कोई दवा नही दी जाती । एसीलाक तो गैस और काम्बीफ्लेम तो साधारण बुखर की दवा है, तो उनके पास इसका कोई भी उत्तर नही था।

अब आप पूरी तरह समझ सकते हैं ,कि हास्पिटल प्रबंधन, पीड़ित गरीब,वनवासियों,आदिवासियों पर ही आँखें गवाने का आरोप मढ़ने जा रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि गरीबों की असली आँखे निकाल कर उन्हें नकली आँखे लगा दी। राज्य सरकार तथा यहांका धृतराष्ट्री प्रशासनिक अमला हॉस्पिटल प्रबंधन को बचाने में लगा है।

प्रशासन ने साधी चुप्पी

योगीराज अस्पताल प्रबंधन की इस करतूत व पीड़ित आदिवासियों को राहत देने के नाम पर जिला प्रशासन भी चुप्पी साधे हुए है। विशेषकर जिले के प्रमोटी कलेक्टर केके खरे का रवैया इस मामले में सर्वाधिक गैर जिम्मेदारना है। जिले की आम जनता में उनकी छवि भी ठीक नहीं। श्री खरे से इस मामले में उनका पक्ष जानने पर अव्वल तो उन्होंने प्रकरण की अद्यतन स्थिति

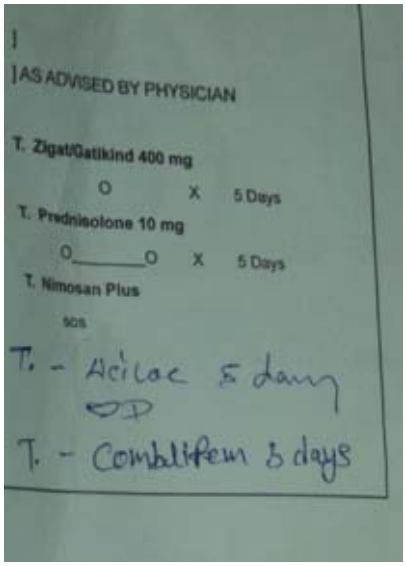

के बारे में अनभिज्ञता जताते हुए कहा कि आप सीएमओ से बात कर लें। मैंने उनकी अध्यक्षता में पांच सदस्यीय जांच समिति गठित की है। जब उन्हें बताया गया कि सीएमओ आरके श्रीवास्तव इस मामले में बात करने को राजी नहीं है। इस पर उन्होंने टालने वाले अंदाज में योगीराज अस्पताल प्रबंधन से बातचीत करने की सलाह दी। बताया जाता है कि जिला कलेक्टर अस्पताल

से जुड़े डॉ. विकास महात्मे से खासे अविभूत हैं।उनसे बातचीत में भी उनका ज्यादा जोर इस बात पर था कि डॉ.महात्मे पद्म श्री हैं। बताया जाता है कि जिला सीएमओ भी शराब के शौकीन हैं व चौबीसों घंटे नशे में धुत्त रहते हैं। इस संवाददाता से बातचीत के समय भी वह नशे में नजर आए। वहीं जिले में पदस्थ एक मात्र नेत्र चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ.तरुण अहरवाल ने अपने निज निवास पर सर्व सुविधायुक्त अस्पताल खोल रखा है। वह सरकारी अस्पताल पहुंचने वाले गरीबों का वहां उनका उपचार करने की बजाए उन्हें अपने इसी निजी अस्पताल में बुलाते हैं। योगीराज अस्पताल के शिकार आदिवासी भी जब अपना उपचार कराने जिला अस्पताल पहुंचे तो डॉ.अहरवाल का उनका यही रवैया रहा। अपने इसी प्रभाव के बलवूते उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष ईश्वरदास रोहाणी को भी प्रभावित कर उनसे पुरुस्कार हॉसिल किया। मरीजों को प्रभावित करने व सरकार में अपनी पहुंच का अहसास कराने उन्होंने यह छायाचित्र प्रमुख रूप से अपनी अस्पताल क ी दीवार पर जड़ रखा है। डॉ अहरवाल ने बातचीत में यह स्वीकार किया कि जिले में मोतियाबिंद के छह हजार से अधिक रोगी हैं। योगीराज अस्पताल में जिन आदिवासियों का आपरेशन किया गया वे मोतियाबिंद से पीड़ित थे। आपरेशन के दौरान हुई लापरवाही से ही आदिवासियों की आंखे गईं।

हाउसिंग बोर्ड टेंडर घोटाला

हवा में निर्माण

भोपाल(पब्लिक प्वाइंट)। हम मकान नहीं घर बनाते हैं। मप्र हाउसिंग बोर्ड का मैदानी अमला अब बोर्ड के इस ध्येय वाक्य से भी एक कदम आगे जाकर हवा में निर्माण कार्य करवाने की तैयारी में है। बोर्ड के जबलपुर संभागीय कार्यालय ने तो अपने ऐसे ही सपने को साकार करने बिना जमीन हॉसिल किए निर्माण कार्यों के लिए निविदाएं भी बुला ली और निर्माण का ठेका भी दे डाला। सूत्रों के मुताबिक, संभागीय कार्यालय ने गत अगस्त माह में विज्ञापन जारी कर डिंडोरी जिले के शहपुरा ब्लाक के इमलाई गांव में आदिवासी छात्राओं के लिए आश्रम बनाने निविदाएं आमंत्रित की। आमंत्रित निविदाओं में इमलाई की निविदा को बीते सप्ताह स्वीकृत भी कर दिया गया। गौरतलब बात यह है कि जिस गांव में निर्माण कार्य होना है वह जमीन अब तक कन्या आश्रम केलिए स्वीकृत ही नहीं की गई और यह अब भी राजस्व विभाग के खाते में दर्ज है(देंखे संबंधित पटवारी द्वारा दी गई रिपोर्ट की छायाप्रति)। इस तरह मंडल जमीन हॉसिल किए बिना ही निर्माण कार्य कराने की तैयारी में है। जबकि आमंत्रित निविदा में आश्रम का निर्माण वर्षा ऋतु समेत १० माह में पूरा करने की शर्त रखी गई है। बताया जाता है कि इमलाई में भी प्रस्तावित निर्माण कार्य की स्थिति इसी जिले के मनिकपुर आश्रम की तरह है। इस संबंध में जिले के ब्लाक शिक्षा श्री शर्मा ने बताया कि आश्रम के लिए जमीन हॉसिल करने के प्रयास जारी हैं। विकासखंड को ही भूले इसी जिले के एक अन्य गांव बरगांव में बालक आश्रम बनाने के लिए भी मंडल ने निविदाएं आमंत्रित की लेकिन हैरत की बात यह है कि विज्ञापन दाता मंडल अधिकारी निर्माण स्थल विकासखंड ही नहीं बता सके। विज्ञापन में गांव के आगे विकासखंड का उल्लेख ही नहीं किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि संभाग में निर्माण कार्यों को लेकर मंडल का मैदानी अमला किस तरह के फर्जीवाड़े कर रहा है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व पब्लिक प्वाइंट शहपुरा ब्लाक के ही मनिकपुरा का मामला उजागर कर चुका है जहां कन्या आश्रम की वाउण्ड्री वाल पहले से ही निर्मित है लेकिन मंडल ने निर्माण कार्य कराने के लिए निविदाएं बुला कर इन्हें स्वीकृत भी कर दिया। इस फर्जीवाड़े का खुलासा होने के बाद संबंधित निर्माण कार्य किसी अन्य जगह कराने के कुतर्क दिए जा रहे हैं। बताया जाता है कि मनिकपुर समेत करीब अनेक स्थानों पर इस तरह के काल्पनिक निर्माण कार्यों के लिए करोड़ो रुपए के फर्जी बिलिंग की तैयारी थी।

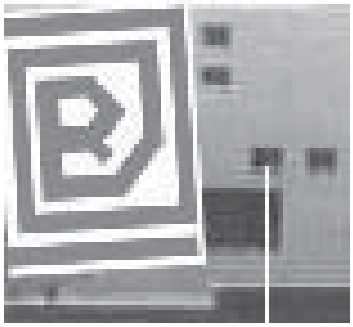

मुख्यालय की मिलीभगत

हैरत की बात यह है कि उक्त गड़बड़ी का खुलासा होने के बाद भी इमलाई में करीब ७८ लाख के निर्माण कार्य की यह स्वीकृति मुख्यालय द्वारा जारी की गई। जो दर्शाता है कि भांग समूचे कुंए में ही घुली हुई है और इस तरह के क्रिया कलापों से मंडल के ईमानदार नवागत कमिशनर प्रवीण गर्ग की छवि धूमिल करने के प्रयास किए जा रहे हैं। बताया जाता है कि श्री गर्ग की सख्त मिजाजी तथा ईमानदारी से कार्य करने की उनकी शैली उनके कुछ मातहत अधिकारियों को रास नहीं आ रही है।

हाउसिंग बोर्ड को सपनि बनाने की साजिश

मप्र हाउसिंग बोर्ड के ही कुछ अधिकारी बोर्ड को मप्र सड़क परिवहन निगम बनाने पर आमदा हैं। इसके चलते बोर्ड को गुपचुप तरीके से आर्थिक हानि पहुंचाई जा रही है। बोर्ड के सतना कार्यालय ने जबलपुर संभाग से एक कदम आगे बढ़ कर बोर्ड की जमीन को ही बेच डाला।

अफसरों ने खुर्दबुर्द की सरकारी जमीन,

मुख्यालय को भी रखा अंधेरे में

अब बता रहे अतिक्रमण

जमीन पर काबिज लोगों में असंतोष बोर्ड की उक्त प्रस्तावित योजना से जमीन पर वर्तमान में काबिज लोगो में असंतोष है। उनका दावा है कि संबंधित भूखंड उन्होंने बोर्ड के अधिकारियों को भुगतान कर हासिल किया है। अब अतिक्रमण बता कर उन्हें बेदखल करने की योजना बनाई जा रही है। इसका वह पुरजोर विरोध करेंगे। ..... बोर्ड की उक्त भूमि में से करीब आधा-पौन एकड़ पर अतिक्रमण है। इसकी जानकारी बोर्ड केमुख्यालय को तो नहीं,लेकिन स्थानीय जिला प्रशासन की दी गई है। प्रस्तावित योजना को लेकर कुछ लोग शिकवा शिकायत कर बोर्ड को नुकसान पहुंचाने की साजिश कर रहे हैं। शैलेन्द्र वर्मा ,उपायुक्त हाउसिंग बोर्ड रीवा

भोपाल(पब्लिक प्वाइंट) । मप्र हाउसिंग बोर्ड के ही कुछ अधिकारी बोर्ड को मप्र सड़क परिवहन निगम बनाने पर आमदा हैं। इसके चलते बोर्ड को गुपचुप तरीके से आर्थिक हानि पहुंचाई जा रही है। बोर्ड के सतना कार्यालय ने जबलपुर संभाग से एक कदम आगे बढ़ कर बोर्ड की जमीन को ही बेच डाला। न्यायालय का फैसला बोर्ड के पक्ष में आने के बाद अब जमीन पर अतिक्रमण बताया जा रहा है। हैरत की बात यह है ,कि रीवा संभागीय कार्यालय ने इतने महत्वपूर्ण मामले की जानकारी अब तक अपने मुख्यालय को नहीं दी। सूत्रों के मुताबिक, सतना के पाश इलाके में कोलगंवा में हाउसिंग बोर्ड के अधिपत्य वाली करीब २.७० एकड़ जमीन में से लगभग ०.७७ एकड़ भूमि पर वर्तमान में कथित अतिक्रमण है। बताया जाता है कि यह अतिक्रमण भी बोर्ड के अधिकारियों की ही देन है,जिन्होंने जमीन को लेकर विवाद के चलते तथा मामला न्यायालय में विचाराधीन होने का फायदा उठा कर उक्त जमीन को टुकड़े-टुकड़े में औने-पौने दाम वसूल कर अनधिकृत कब्जा करा दिया। बीते साल अगस्त में उच्च न्यायालय का फैसला बोर्ड के पक्ष में आने पर संभागीय कार्यालय के अधिकारी हक्के-बक्के रह गए। जमीन को खुर्द-बुर्द करने की कलई खुलने से बचने के लिए संभागीय कार्यालय ने शहर की उक्त बेशकीमती जमीन में से महज १.९३ एकड़ पर ईडब्ल्यु आवास बनाने का प्रस्ताव भेजा। गौरतलब बात यह

www.publicpointnews.com

है कि इस प्रस्ताव में भी महज सात भूखंडों पर ईडब्ल्यू एस बनाने तथा शेष ४४ भूखंड़ बेचना तय किया गया। जमीन की जमीनी हकीकत से अंजान बोर्ड आयुक्त प्रवीण गर्ग ने इस प्रस्ताव को हरी झंडी दे दी व उक्त योजना गत ३१ अक्टूबर तक लांच करने की मियाद तय की। इस प्रक्रिया के तहत मंडल के संभागीय कार्यालय द्वारा विज्ञापन जारी करने की प्रक्रिया फिलहाल अपनाई जा रही है। ईडब्ल्युएस ही क्यों? सतना शहर के बीचोंबीच उक्त बेशकीमती भूमि पर ईडब्ल्युएस आवास बनाए जाने की योजना सामने आने पर जानकार हैरत में हैं। मामूली मामलों में भी व्यवसायिक तरीका अपनाने वाला बोर्ड आखिर इस बेशकीमती भूमि पर गरीबों के लिए सस्ते मकान क्यों तैयार कर आर्थिक हानि उठाने पर आमदा है। बताया जाता है कि मैदानी अफसरों ने उक्त प्रस्ताव बेहद योजनाबद्ध तरीके से तैयार किया। महंगी जमीन के सात भूखंडों पर सस्ते मकान खड़े करने पर शेष भूखंडों की कीमत भी कम ही रहेगी। इसके चलते हाईप्रोपाइल लोग जमीन से दूर रहेंगे। इस तरह प्रस्तावित योजना से लगे भूखंड पर कथित अतिक्रमण पर भी अंगुली उठने से रही और इस तरह इस गंभीर अपराधिक मामले की दबाया जा सकेगा। ५.४७ एकड़ से अधिक का मालिक है बोर्ड कोलगंवा सतना में हाउसिंग बोर्ड ५.४७ एकड़ जमीन का मालिक है। यह भूमि बोर्ड के गठन के बाद सतना में आवास विकसित करने के लिए उसे आवंटित की गई थी। शहर में हवाईअड्डा बनाने का प्रस्ताव आने पर इसी भूमि में से करीब २.७० एकड़ भूमि राज्य शासन ने एविएशन विभाग के लिए आरक्षित की,लेकिन कालान्तर में बिरला रोड स्थित कोलगवां गांव पाश इलाके में तब्दील होने पर यह क्षेत्र आवासीय इलाके में तब्दील हो गया। इसके चलते एविएशन विभाग ने जमीन से अपना दावा छोड़ दिया। बोर्ड को आवंटित किए जाने से पूर्व यह भूमि नर्मदा प्रसाद नामक व्यक्ति के निजी अधिपत्य में थी। वर्ष १९६८ में उसकी मौत के बाद उसके पुत्र इस पर काबिज रहे। इधर,भूमि हाउसिंग बोर्ड को जमीन आवंटित होने पर नर्मदाप्रसाद के पुत्रों ने तहसीलदार से लेकर हाईकोर्ट तक में दस्तक दी। अंतत: फैसला बोर्ड के पक्ष में रहा।

यह है स्थिति

बताया जाता है कि उक्त भूमि में से कुछ पर पूर्व में बोर्ड द्वारा निर्माण कार्य किया जा चुका है। अदालती प्रकरण के चलते सर्वे क्र मांक १६९/२ की करीब २.७० एकड़ भूमि कालांतर में रिक्त रही। इसमें से अब १.९३ के लिए उक्त नई योजना स्वीकृत की लेकिन शेष भूमि पर अतिक्रमण बताया जा रहा है। हैरत की बात यह है कि इस अतिक्रमण की जानकारी संभागीय कार्यालय ने अब तक अपने मुख्यालय को नहीं दी। न आवंटन ,न भू-भाटक बताया जाता है कि उक्त २.७० एकड़ भूमि वैधानिक तौर पर अब भी राजस्व विभाग के अधिपत्य में है। नियमानुसार बोर्ड को न तो इसका आवंटन ही नहीं किया गया, न ही बोर्ड ने इसका भू-भाटक ही शासन को अदा किया है। बोर्ड अग्रिम अधिपत्य को आधार मान रहा है, जबकि यह पुरातन नियम समाप्त हो चुका है।

जमीन पर काबिज लोगों में असंतोष

जमीन पर काबिज लोगों में असंतोष बोर्ड की उक्त प्रस्तावित योजना से जमीन पर वर्तमान में काबिज लोगो में असंतोष है। उनका दावा है कि संबंधित भूखंड उन्होंने बोर्ड के अधिकारियों को भुगतान कर हासिल किया है। अब अतिक्रमण बता कर उन्हें बेदखल करने की योजना बनाई जा रही है। इसका वह पुरजोर विरोध करेंगे।..... बोर्ड की उक्त भूमि में से करीब आधा-पौन एकड़ पर अतिक्रमण है। इसकी जानकारी बोर्ड के मुख्यालय को तो नहीं,लेकिन स्थानीय जिला प्रशासन की दी गई है। प्रस्तावित योजना को लेकर कुछ लोग शिकवा शिकायत कर बोर्ड को नुकसान पहुंचाने की साजिश कर रहे हैं। शैलेन्द्र वर्मा ,उपायुक्त हाउसिंग बोर्ड रीवा

भारतीय संस्कृति

.....कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी

विश्व में अनेक संस्कृतियाँ पनपी और मिट गई। आज उनका कहीं नामोनिशान तक नहीं है, सिर्फ उनकी स्मृति बाकी है, लेकिन भारतीय संस्कृति में है ऐसा कुछ कि वह कुछ नहीं मिटा। उसे मिटाने के बहुत प्रयास हुए और यह सिलसिला आज भी जारी है, पर कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी। भारतीय संस्कृति में आखिर क्या है, जो उसे हमेशा बचाए रखता है, जिसकी वजह से वह हजारों साल से विदेशी हमलावरों से लोहा लेती रही और इन दिनों इन पर जो हमले हो रहे हैं, उसका मुकाबला कर रही है ? आखिर कैसा है वह भारतीय संस्कृति का वह तंत्र, जिसे हमलावार संस्कृतियाँ छिन्न-भिन्न नहीं कर पातीं ? हर बार उन्हें लगता है कि इस बार वे इसे अवश्य पदाक्रांत कर लेंगी, पर हुआ हमेशा उलटा है, वे खुद ही पदाक्रांत होकर भारतीय संस्कृति में विलीन हो गईं, क्यों और कैसे ?

भारत की संस्कृति कई चीज़ों को मिला जुलाकर बनती है जिसमें भारत का लम्बा इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं। इसके साथ ही पडोसी देशों के रिवाज़, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है. पिछले पाँच सहस्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति रिवाज , भाषाएं , प्रथाएं और परंपराएं इसकी एक दुसरे से परस्पर संबंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती हैं भारत कई धार्मिक प्रणाली (religious systems), जैसे की हिन्दू धर्म, जैन धर्म , बौद्ध धर्म, और सिख धर्म जैसे धर्मों की जननी है इस मिश्रण से भारत में उत्पन्न हुए विभिन्न धर्म और परम्पराओं (traditions) ने विश्व के अलग - अलग हिस्सों को भी काफी प्रभावित किया है

भारतीय संस्कृति की महत्ता

भारतीय संस्कृति विश्व के इतिहास में कई दृष्टियों से विशेष महत्त्व रखती है।

यह संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से है। मोहनजोदड़ो की खुदाई के बाद से यह मिस्र, मेसोपोटेमिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं के समकालीन समझी जाने लगी है।

प्राचीनता के साथ इसकी दूसरी विशेषता अमरता है। चीनी संस्कृति के अतिरिक्त पुरानी दुनिया की अन्य सभी - मेसोपोटेमिया की सुमेरियन, असीरियन, बेबीलोनियन और खाल्दी प्रभृति तथा मिस्र ईरान, यूनान और रोम की-संस्कृतियाँ काल के कराल गाल में समा चुकी हैं, कुछ ध्वंसावशेष ही उनकी गौरव-गाथा गाने के लिए बचे हैं; किन्तु भारतीय संस्कृति कई हजार वर्ष तक काल के क्रूर थपेड़ों को खाती हुई आज तक जीवित है।

उसकी तीसरी विशेषता उसका जगद्गुरु होना है। उसे इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उसने न केवल महाद्वीप-सरीखे भारतवर्ष को सभ्यता का पाठ पढ़ाया, अपितु भारत के बाहर बड़े हिस्से की जंगली जातियों को सभ्य बनाया, साइबेरिया के सिंहल (श्रीलंका) तक और मैडीगास्कर टापू, ईरान तथा अफगानिस्तान से प्रशांत महासागर के बोर्नियो, बाली के द्वीपों तक के विशाल भू-खण्ड पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा।

भारत उपमहाद्वीप की क्षेत्रीय सांस्कृतिक सीमाओं और क्षेत्रों की स्थिरता और ऐतिहासिक स्थायित्व को प्रदर्शित करता है. सर्वांगीणता, विशालता, उदारता और सहिष्णुता की दृष्टि से भारत में बोली जाने वाली भाषाओँ की बड़ी संख्या ने यहाँ की संस्कृति और पारंपरिक विविधता को बढ़ाया है. 1000 (यदि आप प्रादेशिक बोलियों और प्रादेशिक शब्दों को गिनें तो, जबकि यदि आप उन्हें नहीं गिनते हैं तो ये संख्या घट कर 216 रह जाती है) भाषाएँ ऐसी हैं जिन्हें 10,000 से ज्यादा लोगों के समूह द्वारा द्वारा बोला जाता है, जबकि कई ऐसी भाषाएँ भी हैं जिन्हें 10,000 से कम लोग ही बोलते है.भारत में कुल मिलाकर 415 भाषाएं उपयोग में हैं भारतीय संविधान ने संघ सरकार के संचार के लिए हिंदी और अंग्रेजी, इन दो भाषाओं

के इस्तेमाल को आधिकारिक भाषा (official language) घोषित किया है व्यक्तिगत राज्यों के उनके अपने आतंरिक संचार के लिए उनकी अपनी राज्य भाषा (state's language) का इस्तेमाल किया जाता है भारत में दो प्रमुख भाषा सम्बन्धी परिवार हैं - भारतीय-आर्य भाषाएं और द्रविण भाषाएँ, इनमें से पहला भाषा के परिवार मुख्यत: भारत के उत्तरी (northern), पश्चिमी (western), मध्य (central) और पूर्वी (eastern) क्षेत्रों के फैला हुआ है जबकि दूसरा भाषा परिवार भारत के दक्षिणी भाग में.भारत का अगला सबसे बड़ा भाषा परिवार है एस्ट्रो-एशियाई (Austro-Asiatic) भाषा समूह, जिसमें शामिल हैं भारत के मध्य और पूर्व में बोली जाने वाली मुंडा भाषाएँ (Munda languages), उत्तरपूर्व में बोई जाने वाली खासी भाषाएँ (Khasian languages), और निकोबार द्वीप (Nicobarese languages) में बोली जाने वाली निकोबारी भाषाएँ (ह्वष्थ्ड्डड्डह्ह ड्डह्यद्यड्डठ्ठस्त्रह्य).भारत का चौथा सबसे बड़ा भाषा परिवार है तिब्बती- बर्मन भाषाओँ (Tibeto-Burman languages) का परिवार जो अपने आप में चीनी- तिब्बती भाषा परिवार का एक उपसमूह है.

भारत में धर्म और भारतीय धार्मिक समुदाय

अब्राहमिक के बाद भारतीय धर्म विश्व के धर्मों में प्रमुख है , जिसमें हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, जैन धर्म , आदि जैसे धर्म शामिल हैं आज, हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म क्रमश: दुनिया में तीसरे और चौथे सबसे बड़े धर्म हैं, जिनमें लगभग 1.4 बिलियन अनुयायी साथ हैं

विश्व भर में भारत में धर्मों में विभिन्नता सबसे ज्यादा है , जिनमें कुछ सबसे कट्टर धार्मिक संस्थायें और संस्कृतियाँ शामिल हैं

आज भी धर्म यहाँ के ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच मुख्य और निश्चित भूमिका निभाता है

80.4% से ज्यादा लोगों का धर्म हिन्दू धर्म है कुल भारतीय जनसँख्या का 13.4 % हिस्सा इस्लाम धर्म को मानता है.सिख धर्म , जैन धर्म और खासकर के बौद्ध धर्म का केवल भारत में नहीं बल्कि पुरे विश्व भर में प्रभाव है ईसाई धर्म, पारसी धर्म, यहूदी और बहाई विश्वास (Bahá'í Faith) भी प्रभावशाली हैं लेकिन उनकी संख्या कम है भारतीय जीवन में धर्म की मज़बूत भूमिका के बावजूद नास्तिकता और अज्ञेयवादीओं (agnostic) का भी प्रभाव दिखाई देता है

समाज

यूजीन एम. मकर के अनुसार, भारतीय पारंपरिक संस्कृति अपेक्षाकृत कठोर सामाजिक पदानुक्रम द्वारा परिभाषित किया गया है उन्होंने यह भी कहा कि बच्चों को छोटी उम्र में ही उनकी भूमिकाओं और समाज में उनके स्थान के बारे में बताते रहा जाता है उनको इस बात से और बल मिलता है की और इसका मतलब यह है कि बहुत से लोग इस बात को मानते हैं की उनकी जीवन को निर्धारण करने में देवताओं और आत्माओं की ही पूरी भूमिका होती है धर्म विभाजित संस्कृति जैसे कई मतभेद. जबकि, इनसे कहीं ज्यादा शक्तिशाली विभाजन है हिन्दू परंपरा में मान्य अप्रदूषित और प्रदूषित व्यवसायों का. सख्त सामाजिक अमान्य लोग इन हजारों लोगों के समूह को नियंत्रित नियंत्रित करते है. हाल के वर्षों, खासकर शहरों में, इनमें से कुछ श्रेणी धुंधली पड़ गई हैं और कुछ घायब हो गई हैं एकल परिवार (Nuclear family) भारतीय संस्कृति के लिए केंद्रीय है.महत्वपूर्ण पारिवारिक सम्बन्ध उतनी दूर तक होते हैं जहाँ तक समान गोत्र (द्गश्ह्लह्र्ड्ड) के सदस्य हैं, गोत्र हिन्दू धर्म के अनुसार पैतृक यानि पिता की ओर से मिले कुटुंब या पंथ के अनुसार निर्धारित होता है जो की जन्म के साथ ही तय हो जाता है. ग्रामीण क्षेत्रों में, परिवार के तीन या चार पीढ़ियों का एक ही छत के नीचे रहना आम बात है वंश या धर्म प्रधान (Patriarch) प्राय: परिवार के मुद्दों को हल करता है

विकासशील देशों में, भारत अपनी निम्न स्तर की भौगोलिक और व्यावसायिक गतिशीलता की वजह से वृहद रूप से दर्शनीय है यहाँ के लोग कुछ ऐसे व्यवसाय को चुनते हैं जो उनके माता-पिता पहले से करते आ रहे हैं और कभी कभार भौगोलिक रूप से वो अपने समाज से दूर जाते हैं

जीत की राजनीति

बीजेपी ने महाराष्ट्र और गुजरात में ध्रुवीय राजनीति का सहारा लिया है और यह उम्मीद करना बेमानी है कि आरएसएस बिहार मॉडल का प्रयोग मध्यप्रदेश, कर्नाटक और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में करेगा, जहां उसकी राजनीति क्षेत्रीय जातीयता और धार्मिक राजनीति पर टिकी है. आरएसएस नीतीश द्वारा बिहार में अल्पसंख्यकों के लिए शुरू की गयी योजनाओं को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने का सर्मथन भी नहीं करेगा.

बिहार विधानसभा चुनावों के परिणाम आने के बाद आरएसएस के एक सीनियर नेता ने एसएमएस भेजा, लोहियावाद का वापस आना भारत के लिए एक अच्छा संकेत है. यह गुप्त मैसेज केसरिया बाने की चिंताओं को उद्घाटित कर रहा है.

हालांकि भारतीय जनता पार्टी ने बिहार के इन विधानसभा चुनावों में लड़ी गयी सीटों में से नब्बे प्रतिशत से ज्यादा सीटें हासिल की है. लेकिन यह बात सब लोग जानते हैं, इस जीत में जिस फ़िलॉसफ़ी ने काम किया है, वह संघ परिवार के विपरीत काम करती है. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की इस समावेशी राजनीतिक जीत में भी संघ परिवार से 'हम बनाम वे' की वैचारिकी ने काम किया है.

इस संदेश ने संघ परिवार को असमंजस की स्थिति में डाल दिया है. वे बिहार में जनता दल यूनाइटेड और बीजेपी के द्वारा पाये गये सर्मथन से इनकार नहीं कर सकते हैं और न ही खुलकर इसका स्वागत कर सकते हैं. पार्टी इस जीत का मूल्यांकन सिर्फ़ इतना कर रही है कि यह शहरी, आधुनिक, अंग्रेजी भाषी इंडिया से अलग भारत के लिए बेहतर है.

वहीं नीतीश कुमार भारत और इंडिया के बीच में कोई अंतर नहीं कर रहे हैं.शैवाल गुप्ता, जो ऐशयन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट के सदस्य हैं, नीतीश कुमार के इस मॉडल को अतियों का गठबंधन कहते हैं. इसमें शहरी मध्यम वर्ग भी वैसे ही शामिल है जैसे कि समाज में दूरदराज के लोग. इसके अलावा नीतीश कुमार ने बीजेपी के साथ गठजोड़ होने के बावजूद अपना राजनीतिक समीकरण मुसलमानों के लिए भी स्वीकार्य बना दिया है.

यह देश में एक नये राजनीतिक समीकरण का संकेत है. क्या बीजेपीई इस मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर अपना सकते हैं? इस सवाल का उत्तर सिर्फ़ यही नहीं निर्धारित करेगा, बल्कि आने वाले समय में देश की राजनीति का ढांचा भी तय करेगा. अपनी ऐतिहासिक जीत से नीतीश कुमार देश के सबसे मजबूत नेता बनके उभरे हैं. यदि उनके निजी सोच के बारे में कहा जाये तो उन्होंने इसका जबाब चुनाव परिणाम आने के बाद के प्रेस कांफ्रेंस में बता दिया था- 'न काहू से दोस्ती न काहू से बैर'.

उन्होंने साफ़-साफ़ शब्दों में कहा था कि वे अपने विरोधियों का सम्मान करते हैं. यहां तक कि लालू प्रसाद भी चुनाव परिणाम को रहस्यमयी बताने के बावजूद नीतीश के ऊपर आक्षेप करने से बचते रहे. नीतीश कुमार ने एक बड़ी ताकत की शक्ल ग्रहण कर ली है जो उनकी भ्रष्टाचार के खिलाफ़ मुहिम चलाने की उनकी योजना से बड़ी है.

क्या बीजेपी राष्ट्रीय स्तर पर वैसी ही राजनीति करेगी जैसी उसने बिहार में की है ?राजनीतिक समीक्षक महेश रंगराजन कहते हैं कि नीतीश कुमार राष्ट्रीय स्तर पर भी संघ परिवार के लिए चिंता का कारण बने रहेंगे. रंगराजन कहते हैं कि यह सच है कि बीजेपी ने बिहार में नीतीश की सहायता से बड़ी सफ़लता हासिल की है परंतु राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा करना कठिन प्रतीत होता है.

भ्रष्टाचार का सामना कर रही कांग्रेस की केंद्र सरकार के बरक्स राष्ट्रीय स्तर पर नीतीश कुमार बड़ी शख्सीयत के रूप में उभर कर सामने आये हैं और उन्होंने अपनी स्वीकार्यता को बढ़ाया है. हालांकि भारतीय जनता पार्टी के बहुत से मुख्यमंत्रियों ने कार्यो के जरिये अपनी छवि में सुधार किये हैं.

यहां तक कि गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में क्षेत्रीय चुनावों में मुसलमानों का सर्मथन पाने के लिए कदम उठाया है. इसी तरह मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्रियों का काम किसी निजी करिश्मे से बढ़कर है. लेकिन नीतीश कुमार इन सबसे आगे इसलिए हैं कि उन्होंने उपलब्धियों को समावेशी राजनीति के साथ जोड़ दिया है.

क्या बीजेपी राष्ट्रीय स्तर पर वैसी ही राजनीति करेगी जैसी उसने बिहार में की है ?राजनीतिक समीक्षक महेश रंगराजन कहते हैं कि नीतीश कुमार राष्ट्रीय स्तर पर भी संघ परिवार के लिए चिंता का कारण बने रहेंगे. रंगराजन कहते हैं कि यह सच है कि बीजेपी ने बिहार में नीतीश की सहायता से बड़ी सफ़लता हासिल की है परंतु राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा करना कठिन प्रतीत होता है.

शायद ही बीजेपी के बड़े नेता और संघ परिवार राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी दूरदर्शिता और परिपक्वता का परिचय दें. वे कहते हैं कि बीजेपी ने कई राज्यों जैसे कि महाराष्ट्र और गुजरात में ध्रुवीय राजनीति का सहारा लिया है और यह उम्मीद करना बेमानी है कि आरएसएस बिहार मॉडल का प्रयोग मध्यप्रदेश, कर्नाटक और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में करेगा, जहां उसकी राजनीति क्षेत्रीय जातीयता और धार्मिक राजनीति पर टिकी है.

वे आगे कहते हैं कि आरएसएस नीतीश कुमार द्वारा बिहार में अल्पसंख्यकों के लिये शुरू की गयी योजनाओं को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने का सर्मथन भी नहीं करेगा. आज आरएसएस की भूमिका इसलिए और भी महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि वाजपेयी-आडवाणी युग बीतने के बाद बीजेपी पर इसकी पकड़ और भी मजबूत हो गयी है.

पिछले कई मामलों में बीजेपी अध्यक्ष नितिन गडकरी ने आरएसएस की आज्ञा का पालन किया है, खासकर सरसंघचालक मोहन भागवत की आज्ञाओं का. इस तरह के परिदृश्य में पार्टी का शीर्ष नेतृत्व प्रगतिशील नीति को बिहार तक ही सीमित रखना चाहेगा.इसके अलावा प्रसिद्ध सामाजिक चिंतक सुरेंद्र मोहन नीतीश मॉडल के लंबे समय तक बिहार में भी कारगर रहने पर आशंका व्यक्त करते हैं.

वे कहते हैं कि नीतीश लालू की तुलना में बेहतर साबित हुये हैं जिन्होंने अपने पंद्रह वर्षो के कार्यकाल में कुछ भी नहीं किया. लेकिन उनका असली काम पार्टी के ढांचे को मजबूत करना, मजबूत पंचायत का निर्माण और नौकरशाही के मजबूत शिकंजे को तोड़ना होगा. यही कमजोरी चुनावों में भी दिखायी पड़ी, जब बीजेपी नीतीश की कीमत पर आगे बढ़ी.

जहां रंगराजन का कहना है कि नीतीश कुमार ने इतिहासकार रामचंद्र गुहा से लेकर नंदन निलेकनी तक प्रसंशकों की एक नयी जमात तैयार की है, वहीं सुरेंद्र मोहन का मानना है कि 'प्रशंसक पार्टी के भीतर के सहयोगियों का स्थान नहीं ले सकते'.नीतीश कुमार को अपनी सीमाओं का भी बखूबी अंदाजा है, यह इस बात से भी साबित होती है कि उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी महत्वाकांक्षा से बार-बार इंकार किया है.

नीतीश अब परिपक्व राजनेता हो चुके हैं, यह इस बात से भी साबित हो गया कि उन्होंने अपनी राजनीतिक रणनीति इतिहास से सबक लेते हुये बड़ी बारीकी से तैयार की. बीजेपी में नरेंद्र मोदी के बड़े प्रभाव के बावजूद उन्हें विधानसभा चुनावों में बिहार आने से रोक देना ऐसा कदम था, जिसके जरिये नीतीश ने यह संदेश दे दिया कि भगवा खेमे की ओर से कोई भी बकवास बर्दाश्त नहीं की जायेगी.

भगवा खेमे की बढ़त भी सिर्फ़ यही दिखाती है कि बिहार में नीतीश की कितनी लोकप्रियता है और लोग उन पर कितना विश्वास करते हैं. लेकिन उन्हें पता है कि लोगों का विश्वास डगमगाते देर नहीं लगती. इसलिये अपने दूसरे कार्यकाल में उन्हें कुछ कठोर निर्णय लेने पड़ सकते हैं.यही वह संदर्भ है, जहां नीतीश कुमार अपने दूसरे कार्यकाल में ज्यादा कठिन चुनौतियों का सामना करने जा रहे हैं.

बीजेपी को न सुहाने वाली अपनी राजनीतिक रणनीतियों को बनाते समय उन्हें ध्यान रखना पड़ेगा कि उनका प्रशासन लोगों की आकांक्षाओं पर खरा उतर सके. इतिहासकार रामचंद्र गुहा द्वारा भारतीय ओबामा की उपाधि से नवाजे गये नीतीश ऐसे चुनौतियों से रूबरू हैं, जिनसे असली ओबामा को भी भय लगता.

(लेखक गवर्नेंस नाउ पत्रिका के मैनेजिंग ऐडटर हैं)

www.publicpointnews.com

साख पर सवाल

-ब्रजेश कुमार

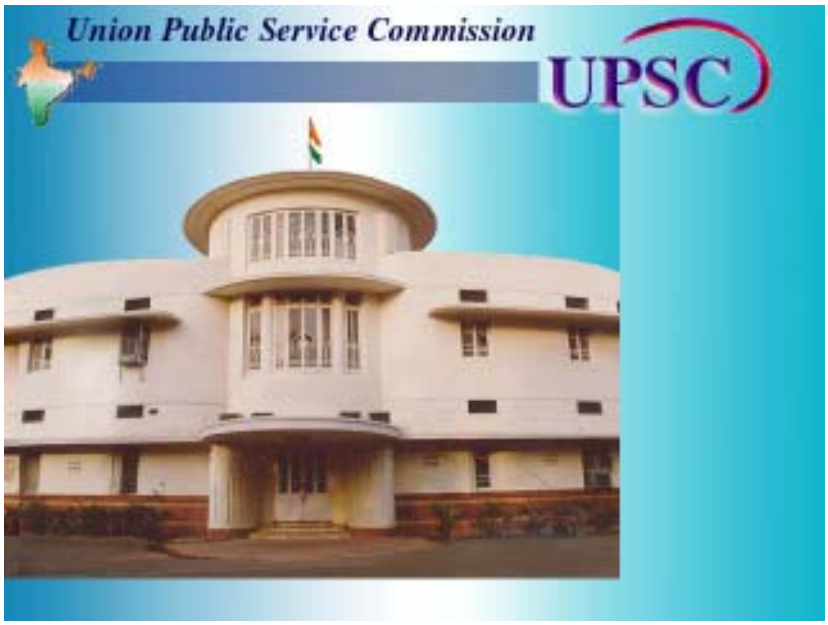

संघ लोक सेवा आयोग के इतिहास में यह पहली घटना है, जब सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा परिणाम के विरोध में इतनी बड़ी संख्या में छात्र सड़क पर उतर आए हैं। वे सभी आयोग का सामूहिक विरोध कर रहे हैं। आयोग द्वारा जारी किए गए नतीजे की पेजवार समीक्षा करते हुए प्रतियोगी परीक्षार्थी रामजी मिश्र कहते हैं, ''परीक्षा परिणाम कई दृष्टिकोण से अचंभित करते हैं।

देश की नौकरशाही को चुनने का काम केन्द्र सरकार की एजेंसी यूपीएससी अर्थात संघ लोक सेवा आयोग के जिम्मे है। आइएएस और आइपीएस जैसी शीर्ष केन्द्रीय सेवाओं में स्थान पाने के लिए लाखों विद्यार्थी इस एजेंसी द्वारा आयोजित परीक्षाओं में प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। आज कल यही विद्यार्थी यूपीएससी के खिलाफ आंदोलन चला रहे हैं। उनका कहना है कि आयोग में वैसे ही धांधली होती है, जैसे दूसरी भर्तियों में आम तौर पर पाई जाती है। सिविल सेवा के अभ्यर्थी आरोप लगा रहे हैं कि संघ लोक सेवा आयोग ने प्रारंभिक परीक्षा में भारी हेराफेरी की है। अभ्यर्थियां की ओर से रखे जाने वाले नए-फराने साक्ष्य चैंकाने वाले हैं, जिससे आयोग संदेह के घेरे में आ गया है। इस धांधली के खिलाफ अभ्यर्थियों ने आयोग को अदालत में ला खड़ा किया है।

फिलहाल मामला सर्वोच्च न्यायालय में है। हालांकि, उच्च न्यायालय का फैसला अभ्यर्थियों के पक्ष में था। आयोग ने उक्त फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में गुहार लगाई है। और वह इस बाबत कोई प्रतिक्रिया देने को तैयार नहीं है। वैसे यह पहला मामला नहीं है, जिसकी पैरवी करने या फिर सफाई देने के लिए आयोग को न्यायालय के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। ऐसे कुल 33 मामले हैं। चार तो सर्वोच्च न्यायालय में ही हैं। अब उस पर आरोपों की झड़ी सड़क पर लगने लगी है। जंतर-मंतर पर गत 23 अगस्त से लगातार धरने पर बैठे सिविल सेवा के प्रतियोगी परीक्षार्थियों का आरोप है, ''प्रारंभिक परीक्षा परिणाम में हेराफेरी हुई है। सो हमें प्राप्त हुए अंक बताए जाएं। साथ ही आयोग कटआफ अंक की जानकारी दे।'' दूसरी तरफ आयोग अपनी गोपनीयता का हवाला देते हुए ना-नुकुर कर रहा है। छात्रों ने कहा कि आरटीआई दाखिल कर जवाब मांगा गया तो आयोग ने न्यायालय में मामले का हवाला देकर जानकारी उपलब्ध कराने से इनकार कर दिया।

संघ लोक सेवा आयोग के इतिहास में यह पहली घटना है, जब सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा परिणाम के विरोध में इतनी बड़ी संख्या में छात्र सड़क पर उतर आए हैं। वे सभी आयोग का सामूहिक विरोध कर रहे हैं। आयोग द्वारा जारी किए गए नतीजे की पेजवार समीक्षा करते हुए प्रतियोगी परीक्षार्थी रामजी मिश्र कहते हैं, ''परीक्षा परिणाम कई दृष्टिकोण से अचंभित करते हैं। शुरुआती सौ रोल नंबरों में 26 परीक्षार्थियों का चयन किया गया है, जबकि अंतिम 26 परीक्षार्थियों का चयन 21,065 रोल नंबरों में किया गया। आश्चर्य है कि अंत में चयन का अनुपात करीब 900 परीक्षार्थियों में एक है।'' उन्होंने कहा कि नतीजों के, पेज एक पर पहले रोल नंबर से 2352 तक के रोल नंबर में 468 छात्र चुने गए हैं, जबकि अंतिम पेज पर 114301 छात्रों में चुने जाने वालों की संख्या 324 है। परीक्षार्थियों ने कहा, कि जब इस बाबत आयोग के अधिकारियों से पूछा गया तो उन लोगों ने कहा कि शुरू में आवेदन जमा करने वाले परीक्षार्थी ज्यादा गंभीर होते हैं, इसलिए वे ज्यादा सफल रहे। आयोग का यह जवाब परीक्षार्थियों के गले नहीं उतर रहा है। वे इसे हास्यास्पद बतला रहे हैं। जंतर-मंतर पर बैठे परीक्षार्थी यह भी जानना चाहते हैं कि पिछले साल के अनुपात में सीट ज्यादा होने के बावजूद रिजल्ट कम दिए जाने का आधार क्या है? इसके लिए वे लोग आयोग के अध्यक्ष डी.पी. अग्रवाल को जिम्मेदार बता रहे हैं। धरने पर बैठे एक छात्र ने कहा, ''आयोग के सूत्रों से जानकारी मिली है कि प्रारंभिक परीक्षा में 18,000

परीक्षार्थियों को चुना गया था, पर अध्यक्ष ने अंतिम समय में इस पर रोक लगा दी। और काट-छांट कर 12,199 परिणाम घोषित कर दिए।''

मामला इतना भर नहीं है। परीक्षार्थी अजय का कहना है कि आयोग प्रारंभिक परीक्षा में अतिरिक्त रोल नंबर आवंटित करता रहा है। यह जानकारी वह अब तक दबाए बैठा था। उन्होंने कहा, ''आरटीआई से मिली जानकारी के अनुसार वर्ष 2003 में आयोग की तरफ से 92 अतिरिक्त रोल नंबर आवंटित किए गए थे। जबकि, वर्ष 2010 की प्रारंभिक परीक्षा में 4245 अतिरिक्त रोल नंबर आवंटित किए गए हैं।'' दरअसल अशीष गुप्ता के सवालों का 6 जुलाई, 2010 को जवाब देते हुए, आयोग ने जानकारी दी कि वर्ष 2010 की प्रारंभिक परीक्षा के लिए 547694 परीक्षार्थियों ने आवेदन जमा कराए, जिसके बाद परीक्षा में बैठने के लिए सभी परीक्षार्थियों को 000001 से लेकर 551939 तक रोल नंबर आवंटित किया गया।

फिलहाल इस बात की जानकारी नहीं दी गई है कि इस वर्ष कितने परीक्षार्थी परीक्षा में उपस्थित हुए हैं, पर उक्त आंकड़े से साफ होता है कि आयोग ने 4245 अतिरिक्त रोल नंबर आवंटित किए हैं। वर्ष 2006 में सर्वाधिक अतिरिक्त रोल नंबर आवंटित किए थे। उसकी संख्या 7868 है। आयोग इसकी ठोस वजह नहीं बता रहा है।

संघ लोक सेवा आयोग के सचिव कार्यालय से एक अधिकारी ने बताया कि कई छात्र साथ मिलकर 10-10 आवेदन जमा कराते हैं। उनका रोल नंबर सिलसिलेवार न आए, इसलिए रैंडमाइजेशन की प्रक्रिया होती है। इससे रोल नंबरों की संख्या बढ़ जाती है।

परीक्षार्थियों ने बताया, कि लंबे समय से भ्रम

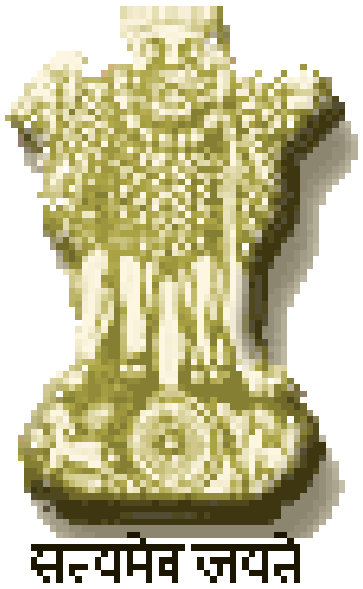

फैला हुआ है कि सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा में 'सामान्य अध्ययन' के लिए निश्चित कट-आफ तय किया जाता है। पर यह सच नहीं है। आयोग ने एक सवाल के जवाब में बताया है कि प्रारंभिक परीक्षा में 'सामान्य अध्ययन' और 'वैकल्पिक विषय' के लिए अगल-अलग कट-आफ तय नहीं किए जाते हैं। दरअसल आयोग की ओर से बरती जाने वाली गोपनीयता के कारण ही भ्रम पैदा होता है, जिसकी तरफ आयोग कोई ध्यान नहीं देता है। इसका फायदा फुटकर कोचिंग संस्थान उठाते आ रहे हैं।

यहां सभी परीक्षार्थी चयन प्रक्रिया में पूरी पारदर्शिता लाने की बात कर रहे हैं। वे आयोग से मूल्यांकन के आधार की जानकारी चाहते हैं। इसमं अपने प्राप्तांक का ब्योरा, कट-आफ अंकों का खुलासा और इंटरव्यू बोर्ड के सदस्यों के बारे में जानकारी शामिल है। अब वे आयोग के उस तर्क को मानने के लिए तैयार नहीं हैं, जिसमें कहा गया है कि चयन प्रक्रिया को उजागर करने से बड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं।

आयोग पर पहले भी गंभीर सवाल उठते रहे हैं। इससे साफ होता है कि संघ लोक सेवा आयोग गोपनीयता की आड़ में कई परीक्षार्थियों को उलझाए हुए है। चितरंजन कुमार, सैयद शब्बीर अली आदि ऐसे ही परीक्षार्थी हैं। टीएसए से जुड़े चितरंजन कुमार कहते हैं, ''गोपनीयता की आड़ में आयोग भारी घपला कर रहा है। यह ताज्जुब की बात है कि धौलफर हाउस में कोई अधिकारी सही जानकारी तक नहीं देता है।''

चितरंजन कुमार दो बाद सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में बैठ चुके हैं। उनका दावा है वर्ष 2008 की मुख्य परीक्षा के दौरान हिन्दी द्वितीय पत्र में उन्होंने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। इसके बावजूद उन्हें 300 में महज 90 अंक दिए गए। इसके बाद आयोग से पत्राचार करने व 'सूचना का अधिकार' कानून का उपयोग करने पर मालूम हुआ कि उत्तर फस्तिका के साथ छेड़छाड़ हुई है। चितरंजन ने बातचीत में कहा, ''मैंने मूल कापी के साथ तीन अतिरिक्त कापियां ली हैं। आयोग का कहना है कि मैंने दो कापियां ही ली थीं। हालांकि आयोग पहले एक अतिरिक्त कापी लेने की बात कह रहा था।'' आगे वे कहते हैं, ''मैं हिन्दी साहित्य का छात्र हूं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मुझे जेआरएफ दे रहा है और संघ लोक सेवा आयोग हिन्दी के एक पेपर में मात्र 30 फीसद अंक देता है। जबकि वर्ष 2007 की मुख्य परीक्षा में 55 प्रतिशत नंबर देता है।'' इस पर आयोग के एक अधिकारी ने कहा, ''चितरंजन मेरी समझ से पागल है। वह सभी को परेशान किए हुए है।'' पर उक्त अधिकारी ने चितरंजन के दावे पर कुछ नहीं कहा। उन्होंने प्राप्तांक और स्केलिंग से जुड़े सवाल पर इतना भर कहा कि कट-आफ और प्राप्तांक के ब्यौरे से जुड़ा मसला न्यायालय में है। सो इस संबंध में वे कुछ नहीं कह सकते हैं। पर वे आयोग

देश की नौकरशाही को चुनने का काम केन्द्र सरकार की एजेंसी यूपीएससी अर्थात संघ लोक सेवा आयोग के जिम्मे है। आइएएस और आइपीएस जैसी शीर्ष केन्द्रीय सेवाओं में स्थान पाने के लिए लाखों विद्यार्थी इस एजेंसी द्वारा आयोजित परीक्षाओं में प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। आज कल यही विद्यार्थी यूपीएससी के खिलाफ आंदोलन चला रहे हैं। उनका कहना है कि आयोग में वैसे ही धांधली होती है, जैसे दूसरी भर्तियों में आम तौर पर पाई जाती है। सिविल सेवा के अभ्यर्थी आरोप लगा रहे हैं कि संघ लोक सेवा आयोग ने प्रारंभिक परीक्षा में भारी हेराफेरी की है। अभ्यर्थियां की ओर से रखे जाने वाले नए-फराने साक्ष्य चैंकाने वाले हैं, जिससे आयोग संदेह के घेरे में आ गया है। इस धांधली के खिलाफ अभ्यर्थियों ने आयोग को अदालत में ला खड़ा किया है।

को पाक-साफ बताते हैं।

पर यहां आरटीआई से जो जानकारियां मिली हैं, उससे मालूम पड़ता है कि आयोग के अंदरखाने में सबकुछ ठीक-ठाक नहीं है। वह 'सूचना के अधिकार' कानून के तहत एक ही सवाल का भिन्न जवाब देने का आदी हो गया है। ऐसे कुछेक मामले सामने आए हैं। इससे अभ्यर्थियों का संदेह गहराया है। उनके बीच यह धारणा बल पकड़ रही है कि आयोग को दाल के साथ अतिरिक्त नमक खाने की आदत है। यह उस आयोग का हाल है, जिसका गठन देश के उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्तियों के लिए किया गया है। यहां साफ है कि आयोग के अंदरखाने में कुछ ऐसी बाते हैं जिसे वह दबाना चाहता है। चितरंजन अकेले परीक्षार्थी नहीं हैं, जो हेराफेरी का आरोप लगा रहे हैं। बृजीस आरजू का मामला और भी चैंकाता है। वर्ष 2005 की मुख्य परीक्षा के दौरान, उन्हें दूसरे वैकल्पिक विषय यानी उर्दू में अनुपस्थित बताया गया। बाद में पूछताछ करने पर मानवीय भूल बताकर अंक भेजे गए। आरजू को आयोग के इस कारनामे से बड़ी शिकायत रही। उनका पक्का मानना था, कि इसमें भारी गड़बड़ी हुई है। कुछ ऐसा ही मामला सैयद शब्बीर अली का है। शब्बीर अंग्रेजी साहित्य के विद्यार्थी रहे हैं। वर्ष 2006 की मुख्य परीक्षा का परिणाम आया तो पता चला कि वे अनिवार्य पेपर अंग्रेजी में ही असफल करार कर दिए गए हैं। फिलहाल यह मामला दिल्ली उच्च न्यायालय में विचाराधीन है। शब्बीर कहते हैं, ''आयोग का कहना है कि स्केलिंग प्रक्रिया के माध्यम से ये अंक दिए गए हैं। आयोग मूल कापी दिखाने को तैयार नहीं है। उनकी दलील है कि इससे आयोग की गोपनीयता प्रभावित होगी।''

दरअसल पूरा मामला सिविल सेवा परीक्षा में बरती जाने वाली गोपनीयता से जुड़ा है। परीक्षार्थी इसमें पारदर्शिता लाने की बात कह रहे हैं। उन्हें यकीन है कि गोपनीयता के नाम पर आयोग गड़बड़ी फैला रहा है। चितरंजन का कहना है कि प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा में स्केलिंग के नाम पर जो उलट-फेर किया जाता है, उसमें कुछ लोग अपना स्वार्थ साधते हैं। वह इसके माध्यम से गड़बड़ी फैला रहा है। और तमाम शिकायतों के बावजूद अपनी कार्य-प्रणाली में किसी आंतरिक बदलाव के लिए तैयार नहीं है। इन छात्रों के बीच खबर गर्म है कि 2009 में 268 वैसे परीक्षार्थियों का चयन किया गया है, जिनके माता-पिता आईएसएस अधिकारी हैं या रह चुके हैं। वे लोग शीर्ष स्थान प्राप्त शाह फैजल पर भी सवाल उठा रहे हैं। कह रहे हैं कि यह सरकार की रणनीति का हिस्सा है।

चितरंजन कुमार, तो यहां तक कहते है, ''संघ लोक सेवा आयोग एक गैर लोकतांत्रिक संस्था है। यह अभ्यर्थियों के हित का थोड़ा भी ध्यान नहीं रखती है, बल्कि हमेशा अपनी गलतियों पर परदा डालने में लगी रहती है। साथ ही अदालती कार्यवाही को लंबा खींचने में अपनी पहुंच का इस्तेमाल करती है।''

दरअसल नौकरशाही की अवधारणा को स्थापित करने वाले जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने कहा है, ''नौकरशाही को स्वभावत: न्यूनतम जानकारी प्राप्त सांसद ही प्रिय होते हैं, क्योंकि सूचना में ही उनकी ताकत छिपी होती है। नौकरशाही हमेशा सूचना प्राप्ति के प्रत्येक संसदीय प्रयासों के विरुद्ध संघर्ष करती है।'' तो क्या आयोग इसी राह चलकर गोपनीयता का स्वांग रचता रहा है? हालांकि अभ्यर्थी पारदर्शिता की बात करते हैं। पर, आयोग इसकी जरूरत नहीं समझता। नोएडा स्थित एक मैनेजमेंट कालेज के प्राध्यापक व प्रतियोगी परीक्षार्थी मनोज यादव कहते है, ''आरोप लगने पर उत्तर प्रदेश सरीखे राज्यों के लोक सेवा आयोग ने स्वयं को पारदर्शी बनाए रखने की कोशिश की है तो यूपीएससी को भी इस बाबत सोचना चाहिए।'' अब जब आयोग की चयन प्रक्रिया की गोपनीयता उसे संदिग्ध बनाती है, तो पारदर्शिता से ही उसकी

साख बची रह सकती है। अन्यथा आयोग फिलहाल जो कर रहा है उसे तो सीनाजोरी ही कहा जाएगा।

म.प्र. में तंत्र जनतंत्र के अनुरूप एक अच्छी पहल

आजादी के पूर्व में देश को विपन्नता, अशिक्षा, बेरोजगारी से मुक्ति दिलाने की प्रतिबद्धताएं दोहरायी जाती थी। आजादी के 6 दशक व्यतीत हो चुके है किंतु समस्याएं जस की तस बनी हुई है। इसके लिए देश में अपनाए गये विकास के मॉडल में खोट समझी जाये अथवा प्रयासों की कमी मानी जाये। यह एक गंभीर विशय है। मध्यप्रदेश में आजादी के बाद दस पंचवर्षीय योजना पूर्ण हो चुकी है और 11 वीं योजना की देहलीज पर कदम रख रहे है। वर्ष 2003 में प्रदेश में राजनैतिक परिवर्तन होने के पश्चात योजना विकास और प्रषासकीय पहल में कुछ बुनियादी बदलाव किए गये है। इनका उद्देश ?य विकास को समाज में सुखद बदलाव का साधन बनाना रहा है। मध्यप्रदेश में बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा के क्षेत्र में जो पहल आरंभ हुई है उसमें गति आने के पीछे बढ़ती हुई जनभागीदारी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हुआ है। प्रदेश में प्रमुख रूप से अर्थव्यवस्था खेती पर निर्भर रही है। खेती की अधोसरंचना विकास के लिए पिछले पांच-छ-वर्ष में भगीरथ प्रयास हुए है। सिंचाई का अतिरिक्त रकवा बढ़ाए जाने के साथ खेतों में जलाशय बनाने का काम जनभागीदारी के आधार पर आरंभ किया गया जिससे लघु सीमांत किसानों के खेतों तक पानी पहुंचाने का सपना पूरा हुआ है। किसानों पर कर्ज के बढ़ते बोझ को देखते हुए किसानी के लिए मिलने वाली कर्ज की दरों को घटाया गया है। पिछले दशकों में 18 प्रतिशत ब्याज पर किसानों को कर्ज दिया जाता था जिसे प्रदेश में क्रमशः घटाकर 7 प्रतिशत, 5 प्रतिशत और अब 3 प्रतिशत कर दिया है। इससे किसानों को काफी राहत मिली है। इसी तरह प्राकृतिक आपदाओं में अब तक किसानों को प्रतिकात्मक राहत दी जाती थी। इस राहत को तीन से चार गुना बढ़ा दिया गया है। आजादी के बाद किसानों को आर्थिक सुरक्षा दिलाने के नाम पर फसल बीमा की योजना वर्षो पहले आरंभ की गयी किंतु उसका लाभ कभी भी किसानों को नहीं मिला। अलबत्ता उनकी बीमा किश ?त राशि जमा होती रही और अंत में उन्हें टका से जवाब दिया गया कि प्राकृतिक आपदा से हुई क्षति मानदण्ड पर खरी नहीं उतरी। पिछले पांच वर्षों में फसल बीमा योजना को किसानोन्मुखी बनाया गया है और उसे तहसील स्तर से पटवारी हल्का स्तर और ग्राम स्तर तक इकाई के रूप में माना जाने लगा है। सरकार का ख्याल है कि इसे किसान के खाते के स्तर तक सीमित किया जाये और इसे इकाई माना जाये। इससे किसान को होने वाली क्षति फसल की हानि का भुगतान कराने में आसानी होगी। यह क्रांतिकारी परिवर्तन मध्यप्रदेश के किसानों को सुकून लेकर आया है।

मध्यप्रदेश में निजाम बदलने का आगाज बुनियादी परिवर्तनों से मिलता है। इसके लिए प्रदेश में व्यवस्था को जनोन्मुखी बनाया गया है। जिनमें जनदर्शन, राज्य स्तर पर समाधान ऑनलाइन, जिला कार्यालयों में समाधान एक दिन, सुराज मिशन और लोक कल्याण षिविरों के आयोजन को विषेष सहायता मिली है। जनदर्शन कार्यक्रमों का ही नतीजा है कि सरकार गांव गांव तक पहुंची और उसे जनता की समस्याओं की मौके पर जानकारी मिली। जिनका समाधान करना सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता के रूप में स्वीकार किया है। सरकार के सभी काम आम आदमी पर ही केन्द्रित हो रहे है। आदिवासियों के खिलाफ बरसों से दर्ज मामले राज्य सरकार ने वापिस लेकर आदिवासियों को सम्मान दिया है। हजारों झुग्गी वासियों को उनकी आधिपत्य की भूमि के अधिकार

प्रदेश में ग्रामीण सचिवालय व्यवस्था को सुदृढ बनाने के प्रयास किये जाने का विचार है। गांव में सार्वजनिक निस्तार भूमि के प्रबंधन में पंचायतों की भागीदारी खसरा और नक्षा की प्रति, ग्रामसभा में रखी जाने का प्रावधान, अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति का नाम सार्वजनिक किए जाने, ग्रामसभा के सम्मेलन हर माह बुलाए जाने, गांव का खसरा एवं नक्षा हर वर्ष जुलाई में खातेदारों को वितरित किए जाने जैसी अनुशंसाओं पर विचार किया जा रहा है। राजस्व कार्यालयों के आधुनिकीकरण और सुदृढीकरण के किए जाने से पटवारी से लेकर तहसीलदार तक को जवाबदेह बनाया जायेगा और इससे निर्धारित समय में किसान को राहत मिलेगी। जवाबदेह प्रशासन हकीकत बनेगा। प्रदेश में पहली बार राजस्व से जुड़े मुद्दों पर इतनी गहरायी से मंथन और चिंतन किया गया है जिससे आभास होता है कि सरकार किसानों की है। गांव, गरीब और किसान ही प्रषासन की धुरी बन चुके है।

पत्र सौंपकर और आदिवासियों को वन भूमि पर अधिकार पत्र सौंपकर उनकी जिन्दगी में सुकून पहुंचाया है। पांच वर्षो में राज्य सरकार ने बिजली प्रदाय पर 4600 करोड रूपये की सब्सिडी प्रदान कर बिजली मंहगी होते हुए भी बिजली की पूर्ति सुनिष्चित की है और बिजली की पूर्ति को आसान बनाया है।

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है और अधिकांश आबादी 52117 गांवों में निवास करती है। कृषि के आर्थिक और सामाजिक ताने बाने को सरसता पूर्वक चुस्त दुरूस्त करने के लिए राज्य सरकार ने क्रांतिकारी परिवर्तन करने का संकल्प लिया है, जो राज्य सरकार द्वारा आयोजित मंथन बैठकों में मुखरित हुआ है। सरकार की प्रमुख सात प्राथमिकताएं है जिनमें खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाना, स्वास्थ्य शिक्षा, अधोसंरचना विकास जैसे कार्यों को शामिल किया गया है। मंथन बैठकों की समूह बैठकों में जो निर्णय लिये गये है उन पर सरकार गंभीरता से विचार कर रही है और इनके क्रियान्वयन से निष्चय ही गांव में समरसता का वातावरण बनेगा। किसानों और ग्रामवासियों को राजस्व प्रकरणों के लिए बार-बार जिला और तहसीलों के चक्कर लगाने और न्यायालयों में माथापच्ची करने से निजात मिलेगी। मंथन बैठको में लिये गये निर्णय और अनुषंसाओं पर प्रशासनिक और आर्थिक दृष्टि से विचार किया जा रहा है। इनका अमल समयबद्ध कार्यक्रम में होने से प्रशासन जहां चुस्त होगा वहीं जन-जन को सहज सरल और पारदर्षी प्रशासन का आभास होगा। प्रदेश में ग्रामीण सचिवालय व्यवस्था को सुदृढ बनाने के प्रयास किये जाने का विचार है। गांव में सार्वजनिक निस्तार भूमि के प्रबंधन में पंचायतों की भागीदारी खसरा और नक्षा की प्रति, ग्रामसभा में रखी जाने का प्रावधान, अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति का नाम सार्वजनिक किए जाने, ग्रामसभा के सम्मेलन हर माह बुलाए जाने, गांव का खसरा एवं नक्षा हर वर्ष जुलाई में खातेदारों को वितरित किए जाने जैसी अनुशंसाओं पर विचार किया जा रहा है। राजस्व कार्यालयों के आधुनिकीकरण और सुदृढीकरण के किए जाने से पटवारी से लेकर तहसीलदार तक को जवाबदेह बनाया जायेगा और इससे निर्धारित समय में किसान को राहत मिलेगी। जवाबदेह प्रशासन हकीकत बनेगा। प्रदेश में पहली बार राजस्व से जुड़े मुद्दों पर इतनी गहरायी से मंथन और चिंतन किया गया है जिससे आभास होता है कि सरकार किसानों की है। गांव, गरीब और किसान ही प्रषासन की धुरी बन चुके है। मध्यप्रदेश में पहली बार 17 किलोमीटर प्रतिदिन सड़के बनने का कीर्तिमान बना है। इसी तरह प्रदेश में विद्युत पूर्ति और उपभोग का रिकार्ड पांच वर्षों में बना है। वर्ष 2009-10 में 2303 किलोमीटर लंबी सड़के बनाकर गांव में बारहमासी सड़क संपर्क सुनिष्चित किया गया है। स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना में चालू वर्ष के दस माह में 273 करोड रूपये का कर्ज बांटा गया। 11138 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया। स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत 44554 अनुसूचित जाति जनजाति के व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया। इसी तरह 55000 महिला स्वरोजगारी और अल्पसंख्यकों के 168007 व्यक्तियों के अलावा 3342 निशक्तजन स्वरोजगारी व्यक्तियों को लाभ पहुंचाया गया।

मध्यप्रदेश ग्रामीण आजीविका योजना के अंतर्गत गांवों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया गया। मजे की बात है कि पहली बार सुदूर अंचल में रहने वाले आदिमजाति के 32 बैगा परिवारों को हाथकरघा का प्रशिक्षण देकर उन्हें दस्तकार बनाया गया। इसी क्रम में आजीविका हाट विकसित किये गये। स्थानीय संसाधनों से कुटीर शिल्प विकसित किये गये। मंडला, श्योपुर, मुरैना और डिंडोरी जैसे आदिवासी जिलों में रस्सी बनाने, काष्ठ की सामग्री बनाने जैसे कार्य उपलब्ध कराये गये। मध्यप्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी परिवर्तन किया गया है। इसी तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड में पहला मेडीकल कालेज सागर में खोला गया है। जिससे बुन्देलखण्ड में स्वास्थ्य और चिकित्सा की अधोसंरचना का विकास होगा। शनैः-शनैः जनता को स्वराज से सुराज की अनुभूति हो रही है। प्रशासकीय तंत्र को जनतंत्र की आकांक्षाओं के अनुसार प्रभावी बनाने में राज्य सरकार की पहल कारगर साबित हो रही है।

समाज में नारी का स्थान

जिस प्रकार तार के बिना वीणा और धुरि के बिना रथ का पहिया बेकार होता है, उसी तरह नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन। इस सच्चई को भारतीय ऋषियों ने बहुत पहले ही जान लिया था। इसलिये वैदिक काल में मनु महाराज ने ये घोषणा करके कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं, नारी की महत्ता प्रतिपादित की। भारतीय इतिहास की सारी उथल- पुथल के बावजूद भारतीय नारी के ऐसे गुण उसके चरित्र से जुड़े रहे जिसके कारण वह विश्व और विशेषकर यूरोप की नारियों से पूरी तरह अलग रही।इन गुणों में प्रमुख हैं- नम्रता, लज्जा और मर्यादा। कुछ लोग इन गुणों को नारी की दासता के चिन्ह मानते हैं, वस्तु- स्थिती यह है कि इन्हीं विशेषताओं के कारण नारी पुरुष सेऊँची उठ जाती है। नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो, शिक्षित हो, पुरुष उसे अपनी दासी न समझे- ये सभी बाते सही हैं और नारी ही के लिये नहीं पुरुष के लिये भी लाभप्रद है किन्तु स्वतन्त्रता की अति न पुरुष के लिये अचछी है न नारी के लिये। दोनों को एक- दूसरे का सम्मान करते हुए परिवार और समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिये।कहीं कहीं भारतीय नारी पश्चिम की नारी का अनुकरण करते हुए तितली बन रही है और परिवार के प्रति अपना कर्तव्य भूलने लगी है।इसका दुष्परिणाम हो रहा है। परिवार टूट जाता है, जीवन का सुख समाप्त हो जाता है।

भारतीय नारी

ऐतिहासिक तौर पर भारतीय नारी की भूमिका में काफ़ी फ़र्क आया है। परम्परागत तौर पर मध्य वर्ग में नारी की भूमिका घरेलू कामों से जुड़ी रहती थी जैसे कि बच्चों की देखभाल करना और ज़्यादातर औरतें पैसे कमाने नहीं जाती थीं। गरीब नारी में, खासकर के मेहनती वर्ग में पैसों की कमी की वजह से नारी को काम करना पडता था हालांकि औरतों को दिये जाने वाले काम हमेशा मर्दों को दिये जाने वाले कामों से प्रतिष्ठा और पैसों दोनो में छोटे होते थे । धीरे-धीरे, घर की नारी का काम न करना धन और प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाने लगा जबकि नारी के काम करने का मतलब उस घर को निचले वर्ग का गिना जाता था।

प्रमुख भारतीय नारियां

प्रथम महिला आई.ए.एस. -- अन्ना जार्ज

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम महिला -- अन्नापूर्ण देवी

नौका से पूरे विश्व का चक्कर लगाने वाली भारतीय महिला -- उज्ज्वला पाटिल

प्रथम भारतीय महिला सर्जन -- डा. प्रेमा मुखर्जी

ओलम्पिक खेल में भाग लेने वाली प्रथम भारतीय महिला खिलाड़ी -- मेरी लीला रो

एवरेस्ट पर दो बार पहुंचने वाली प्रथम महिला -- सन्तोष यादव

भारतीय वायु सेना की पहली महिला पायलट -- हरिता कौर देयोल

भारत की पहली महिला मुख्य चुनाव आयुक्त -- वी.एस. रमा देवी

सबसे अधिक समय तक अन्तरिक्ष में रहने वाली महिला -- शैतोन लुसिड

हिन्दू पदपातशाही के संस्थापक छत्रपति शिवाजी की मां -- जीजाबाई अन्य

रानी लक्ष्मीबाई किरण बेदी लता मंगेशकर इंदिरा गांधी मदर टेरेसा सानिया मिर्ज़ा

कल्पना चावला आज नारी का योगदान हर क्षेत्र में है।

दलाली

–अक्षय जैन

मेरा सबसे छोटा बेटा गोटू, मुझसे कहने लगा, पापा मैं बड़ा होकर क्या बनने वाला हूं, इसका फैसला मैंने कर लिया।

मैंने कहा, इससे ज्यादा खुशी मेरे लिये और

क्या हो सकती है? एक पिता होने के नाते मुझसे जो कुछ भी बन पड़ेगा, मैं तुम्हारे लिए करूंगा। कर्म किए जाओ, फल की इच्छा मत रखो। फल तो ईश्वर अपने आप तुम्हें देगा।

गोटू ने कहा, पापा, ये सब गुजरे जमाने की बातें हैं। वही काम करना चाहिए जिसमें फल मिलें। कम से कम, मैं तो ऐसी जिन्दगी नहीं जीना चाहता हूं कि एक दिन अचानक पता चले कि जिन्दगी तो पूरी हो गई और अभी भी किराये के मकान में रह रहे हैं।

मैंने कहा, भई, हम लोग कभी भी इतने व्यावहारिक नहीं रहे। समाज और देश के बारे में ज्यादा सोचते थे। अपने बारे में यही रवैया था कि जो भी मिले, उसी में गुजर-बसर कर लो। अच्छे दिन आएंगे तो सबके आएंगे। हमारे भी आएंगे।

गोटू ने कहा, पापा, आप तो अभी भी खुशफहमियों में जी रहे हैं। हालात बद से बदतर हो रहे हैं। जहां देखिये, वहीं लूट-खसोट और छीना-झपटी मची हुई है। कुछ लोग बेहद कम समय में जरूरत से ज्यादा अमीर हो गये हैं।

मैंने कहा, देखो बेटा, कोई अकारण अमीर नहीं हो जाता। उसके पीछे विलक्षण प्रतिभा और कड़ी मेहनत होती है। तुम्हें भी अमीर बनना हो तो कड़ी मेहनत के लिये तैयार रहना होगा।

गोटू ने कहा, मैंने तो अपना कैरियर चुन लिया है। और मेरा विश्वास है कि संसार की कोई ताकत अब मुझे अमीर बनने से नहीं रोक सकती। इसके लिये मुझे किसी तरह की कड़ी मेहनत करने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।

मैंने अवाक होकर पूछा, या तो तुम्हें किसी अज्ञात खजाने के रहस्य का पता चल गया है या कोई ऐसा केमिकल हाथ लग गया है, जो पीतल को सोना कर दे। भई, मुझे भी तो बताओ, रातोरात अमीर बनने के पीछे तुम्हारी योजना क्या है?

गोटू ने कहा, पापा, टर्की की एक कंपनी ने मुझे अपना भारतीय प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया है। टर्की की कंपनी भारत में यूरिया बेचना चाहती है। मेरा काम बहुत मामूली है और कमाई करोड़ों में है। टर्की की कंपनी और सरकार या सरकार के किसी सार्वजनिक निगम के बीच मुझे सौदा करवाना है जो मैं जानता हूं कि यह जरा भी मुश्किल काम नहीं है। कहिए, कैसी लगी आपको मेरी योजना?

मैंने गुस्से में कहा, तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि तुम दलाली करना चाहते हो? तुम दलाल बनना चाहते हो? देश को बेचकर तुम अमीर होना चाहते हो? इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है।

गोटू ने कहा, कौन इस देश को नहीं बेच रहा है, मुझे बताइये? कांग्रेस पिछले पचास सालों से इस देश को बेचने में लगी हुई है। मार्क्सवादी भी पीछे नहीं हैं। समाजवादी भी डटे हुए हैं। और तो और भारतीय जनता पार्टी भी शरमाते, लजाते हुए इस देश को बेचने के लिये तैयार है। भारतीय उद्योगपतियों को देखिये। विदेशी कंपनियों के एजेण्ट बनने में अपनी शान समझते हैं। आपको सिर्फ एक विदेशी कंपनी के मेरे एजेण्ट बनने पर एतराज है। यह तो कोई बात नहीं हुई?

मैंने समापन करते हुए कहा, बेटे, इतिहास में हमेशा से दो धाराएं चलती रही हैं। एक तरफ देश को बेचने वाले लोग हैं जिन्हें वक्त आने पर जनता सड़क पर पीट-पीट कर अधमरा कर देगी। दूसरी तरफ देश के लिये लड़ने वाले लोग हैं। आखिर, एक व्यक्ति को जीने के लिये कितने धन की जरूरत है? जब यह देश ही नहीं बचेगा तो दलाली से कमाया हुआ करोड़ों रुपया भी किस काम का?

जनता से दूर जनता का राज

श्याम नारायण रंगा 'अभिमन्यु'

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। विश्व के सबसे बडे इस लोकतंत्र मे तंत्र का निर्माण लोक द्वारा किया जाता है और जनता का जनता के द्वारा जनता के लिए शासन का निर्माण होता है। परन्तु वर्तमान में जो तस्वीर नजर आती है उससे ये लगता है कि लोक अपने तंत्र का निर्माण तो करता है परन्तु एमएलए या एमपी तक से मिलने के लिए तरस जाता है और जीतने के बाद ये जनता से इतने दूर हो जाते हैं कि आम जन को इनसे मिलने के लिए किसी खास का सहारा लेना पडता है। बात कहने कि यह है कि यह कैसी विडम्बना है कि एमएलए एमपी को एमएलए एमपी बनाने वाली जनता ही इनसे

निर्माण के बाद यही लोक इस तंत्र में इतना उलझ जाता है कि अपने ही बनाए जनप्रतितिनिधियों से वो एक मुलाकात तक नहीं कर पाता। मेरे दादाजी आज इस संसार में नहीं है लेकिन मैंने उनके मह से सुना था कि एक समय वो था जब देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री या किसी केबिनेट मंत्री से मिलना कोई बडी बात नहीं थी। यह वह दौर था जब आजादी नई नई आई थी दादाजी बताया करते थे कि राष्ट्रपति भवन के गलियारे में, संसद के गलियारे में आदि ऐसे स्थानों पर भारत भर से आए लोगों का तांता लगा रहता था और उस समय प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति महोदय अपनी देश की जनता से मिलने आते थे और उनके सुख दुख की सुनते थे। परन्तु वर्तमान हालात देखकर मन द्रवित हो जाता है कि इस देश [illegible] भाग्य विधाता [illegible] आम जन, [illegible] ही दूर हो जाती है। आज लोकतंत्र में तंत्र लोक से दूर हो गया है। जब आमजन का काम इन हुक्मरानों से पडता है तो यह आम आदमी किसी की सिफारीश भिडाने की जुगत लगाता है, किसी ऐसे व्यक्ति को ढढता है जो नेताजी का खास हो जिसकी नेताजी के सामने चलती हो जिसकी नेताजी मानते हो और फिर वह नेताजी के सामने इस तरह से पेश आता है जैसे कोई गुनहगार अपने गुनाह की माफी मांग रहा हो और नेता इस आम आदमी के सामने 'हाँ देख लूंगा' की ऐसी वाणी निकालता है जैसे उसने कोई बहुत बडा उपकार कर दिया हो। आम जन से दूर होता यह नेता वह दिन भूल जाता है कि वह कैसे वोट मांगने इस आम आदमी के द्वार पर गया था और किस प्रकार एक याचक की तरह वोट की भीख मांगी थी और बेचारा आम आदमी अपने द्वार आए इस खास अतिथि की सेवा में लग गया था और अतिथि को भगवान का रूप समझ कर उसने इस भगवान को सिंहासन पर बैठा दिया था। नेताजी भूल जाते हैं कि यह वहीं आम आदमी है जिसने चुनाव के दौरान नेताजी को सिक्कों से, गुड से, केलों से और तो और अपने खून तक से तौला था और चाहे उस दिन इस आदमी ने खुद ने कोई कमाई न की हो परन्तु घर आए नेताजी को नोटों की माला पहनाई थी और आज जब चुनाव जीत कर नेताजी मंत्री बन गए या विधान सभा या संसद में चले गए तो अपने ही इस आदमी से इतने दूर हो गए कि यह आदमी सोचता है कि क्या मैंने माला पहना कर, सिक्कों से तौल कर कोई गलती तो नहीं कर दी। जनता से दूर होता यह राज जनता का राज नहीं रह गया है। आज राज कहने को तो आम आदमी का है लेकिन वास्तव में राज मंत्रियों का हे, अफसरों का है।

मैं आपको इस लेख के माध्यम से कहना चाहता ह कि आप आज ही प्रयास करो और सोचो कि आपको अपने देश के प्रधानमंत्री माननीय मनमोहन सिंह से मिलना है या महामहीम माननीया राष्ट्रपति महोदया से मिलना है या सोनिया गाँधी से मिलना है या लालकृष्ण आडवाणी से मिलना है। पहले पहल तो इस देश के आम आदमी के दिमाग में यह एक बहुत बडा काम है और ऐसा करना उसके लिए असंभव है और वह यह

भारत के ये खास लोग जो संसद में बैठते हैं जो लालबत्तियों में घूमते है आखिर इनको किस बात का डर है कि आम जन से ही दूर भागते फिरते है। सुरक्षा के नाम पर इनके चारों और एक ऐसा घेरा बना दिया गया है कि इस घेरे ने इन तथाकथित जन प्रतिनिधियों को आम जन से दूर कर दिया है। और बाकी इनके आस पास इनके दरबारियों की ऐसी भीड जमा हो गई है जिन्होंने इनके दरबार में स्थान पाकर अपने आप को तो बडा बना लिया है लेकिन इन लोगों को आम आदमी की पहच से बहुत दूर कर दिया है। आम आदमी के लिए ये भारत के खास विशिष्ट लोग चॉद हो गए हैं जिन्हें धरती के लोग देख तो सकते हैं लेकिन प्राप्त नहीं कर सकते।

सोच कर खुश है कि यार मुझे क्या काम इनसे मैं क्यूं मिलूं। हालात यह है कि सोनिया गाँधी या मनमोहन सिंह या लालकृष्ण आडवाणी अपनी ही पार्टी के एमएलए और एमपी तक से नहीं मिलते। ये एमएलए और एमपी भी इन लोगों के खास आदममियों से या इनके दरबार के दरबारियों से मिल कर खुश हो जाते है तो आम जन से मिलने की बात तो छोड ही दी जाए। और अगर कोई भावुक आम आदमी इनसे मिलने का प्रयास करे भी तो शायद उसे एक बहुत बडा समय लग जाएगा और वह इन लोगों से मिल ही नहीं पाएगा।

मेरा कहने का मतलब यह है कि भारत के ये खास लोग जो संसद में बैठते हैं जो लालबत्तियों में घूमते है आखिर इनको किस बात का डर है कि आम जन से ही दूर भागते फिरते है। सुरक्षा के नाम पर इनके चारों और एक ऐसा घेरा बना दिया गया है कि इस घेरे ने इन तथाकथित जन प्रतिनिधियों को आम जन से दूर कर दिया है। और बाकी इनके आस पास इनके दरबारियों की ऐसी भीड जमा हो गई है जिन्होंने इनके दरबार में स्थान पाकर अपने आप को तो बडा बना लिया है लेकिन इन लोगों को आम आदमी की पहच से बहुत दूर कर दिया है। आम आदमी के लिए ये भारत के खास विशिष्ट लोग चॉद हो गए हैं जिन्हें धरती के लोग देख तो सकते हैं लेकिन प्राप्त नहीं कर सकते।

अब अगर हम इसके कारणो में जाए तो कई बाते सामने आती है। समस्या यह है कि जहाँ एमएलए एमपी मंत्री बनने के बाद नेता अपने को खास समझने लगता है वहीं भारत की जनता की मानसिकता ने उसे ऐसा गुलाम बना रखा है कि वह आज भी सामंतशाही की अपनी समझ से छुटकारा नहीं पा पाई है। आज इस देश का आम नागरिक नेता मंत्री एमएलए एमपी को इतना बडा समझता है जैसे कोई भगवान का अवतार हो गया हो। वह अपने छोटे से छोटे से फंक्शन से लेकर बडे से बडे प्रोग्राम में नेताजी को बुलाकर अपने को भाग्यवान समझता है और अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढी हुई मानता है। आम आदमी ने आज यह मान लिया है कि साहब ये तो बडे आदमी है। यह आम आदमी यह भूल गया है कि इस खास को खास आदमी आम आदमी ने ही बनाया है और अगर यह न चाहे तो यह खास आज भी आम बन जाए। आम आदमी यह भूल गया है कि राज जनता का है और इस तंत्र का निर्माण भारत की जनता ने ही किया है। इस देश की जनता की इसी समझ का फायदा इस देश के नेता उठा रहे है। इस देश का नेता जानता है कि भारत की जनता इतनी महान् है कि वह पाँच साल में सारे दुःख भूल जाएगी और वह फिर से जाकर इस जनता को मुर्ख बना देगा। मुझे किसी विद्वान व्यक्ति की कही पंक्तियाँ याद आ रही है कि 'जिस देश के नेता धूर्त होते है, उस देश की जनता मुर्ख होती है।' मैं आगे यह बात जोडना चाहगा कि इन धूर्तों ने इन मुर्खों को सुधारने का कभी प्रयास नहीं किया और न करेंगे। इन मुर्खों में से ही कोई धूर्त और निकलेगा जो भोली भाली जनता पर राज करेगा। हम सब ने यह मान लिया है कि यह व्यवस्था ऐसी ही है और ऐसी ही रहेगी। आज भारत का आम आदमी स्वयं अपने को लाचार, कमजोर, बेचारा समझता है। वह अपने को दबा हुआ रखने का आदि हो गया है। हम अपने परिवार में खुश है, हम अपने बच्चों की प्रगति चाहते हैं और बच्चों की प्रगति में खुश हैं। हमारी सोचने की शक्ति ने बहुत सी बातों के साथ समझौता कर लिया है। इस तरह आज लोकतंत्र में लोक ही तंत्र से दूर हो गया है और जनता के राज में राज बनाने वाली जनता ही अपने राज से अनभिज्ञ है।

आतंकवाद जड़ से ख़त्म हो

आतंकवकी समस्या आज के समय की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है आतंकवाद की समस्या जिस पर कोई एक देश न हो कर साड़ी दुनिया विचार मग्न है.पर जब तक पूरी दुनिया एक जुट हो कर इस चीज़ को नहीं समझेगी आतंकवाद जड़ से नहीं ख़त्म हो सकता

आतंकवाद आज के युग की सबसे बड़ी समस्या बन कर उभरा है.आज जब मैं अपने चारो ओर देखता हूँ आये दिन कुछ न कुछ आतंकवादी गतिविधियों की सुचना मिल ही जाती है.पता नहीं ये लोग कब समझेंगे की उनके इस तरीके , जिसे वो जेहाद कहते हैं से सिर्फ बेगुनाहों को सजा ही मिलती है.ट्विन टावर और ताज होटल जैसे आतंकवादी कारनामों से कई परिवार उजाड़ गए.कितनो की मांगे सूनी हो गई. कितने बच्चे अनाथ हो गए.पर ये सिलसिला कब रुकेगा.सरकार को इसके लिए कोई ठोस कदम उठाना चाहिए.और इन आतंकवादियों से इस बारे में बातचीत का कोई तरीका ढूंढा जाये.आज जब तकनीक इतनी विकसित हो गई है तो फिर ये तो कोई बड़ी बात नहीं है पर आतंकवादियों की हत्या से यह समस्या नहीं सुलझ सकती क्यूंकि एक आतंकवादी मरेगा तो 10 और लोग उसको जेहादी समझ कर आतंकवादी बन जायेंगे और समस्या और बढ़ जाएगी इसलिए लोगो के सहयोग से इन आतंकवादियों को पकड़ा जाये और उनकी बातों पर भी विचार किया जाये.लोगो को भी इसके लिए जागरूक करना होगा की ये आतंकवादी क्या कर रहे हैं और क्या सोच कर कर रहे हैं.आगे आकर सरकार को मदद करनी होगी तभी दुनिया इस आतंकवाद नाम के कीड़े से बच पायेगी.

माना तुमसे कमतर हैं
कहीं कहीं हम बेहतर हैं
पहचान हमारी खतरे में
हम शब्दों के बुनकर है

वो जज़्बाती अक्वल सा है
हम तो जन्म से पत्थर हैं
आना कुछ दिन बाद यहाँ
हालात शहर में बदतर हैं

मौत से हम घबराएं कैसे
जिंदा सब कुछ सह कर हैं
अबकी साँसें थमी हैं जाके
यूँ मरे तो उनपे अक्सर हैं

गैर देश में नज़र है तनहा
खुशियाँ सारी घर पर हैं

www.publicpointnews.com

धूम्रपान - सामाजिक समस्या

धूम्रपान आधुनिक काल की देन नहीं है। पौराणिक काल से ही इसका प्रचलन रहा है। राजा-महाराजाओं द्वारा सुसज्जित हुक्कों द्वारा धूम्रपान करना शान-ओ शौकत माना जाता था। कस्बों, चौपालों पर भी बुजुर्ग सामूहिक रूप से हुक्कों के माध्यम से धूम्रपान किया करते थे। परंतु युवकों को इसकी आदत नहीं थी। धूम्रपान को बुराई के रूप में समझा जाता था। आजादी के पूर्व पश्चिमी सभ्यता का रंग भारतीय युवकों पर चढने लगा। सिगरेट पीना भी शान समझने लगे, जितनी मंहगी सिगरेट उतना ही उसका सम्मान। युवकों का शौक आदत बन गई और आज हम धूम्रपान की गहरी बीमारी से ग्रसित हैं। वर्ल्ड लंग फाउंडेशन और अमेरिकन केंसर सोसाईटी के अनुमान के मुताबिक तंबाकू जनित बीमारियों के इलाज के कारण विश्व के विभिन्न देशों के 500 अरब डॉलर खर्च हो जाते हैं। केंसर विशेषज्ञों की रिपोर्ट के अनुसार धूम्रपान से अगले एक वर्ष में 60 लाख लोग अपनी जान गवा सकते हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है तंबाकू जनित बीमारियों के चलते विश्व भर में प्रत्येक 10 में से एक व्यक्ति की मौत हो जाती है। इस हिसाब से अगले एक साल के अंदर केंसर, हृदय रोग, एम्फीसेमा जैसे तंबाकू जनित कई खतरनाक रोगों के शिकार होकर 60 लाख लोग अपनी जान गवां सकते हैं। रिपोर्ट में 2020 तक विश्व के सालाना तंबाकू जनित मौतों की संख्या बढकर 70 लाख हो जाने की आशंका जताई गई है। विश्व में तकरीबन एक अरब लोग सिगरेट पीते हैं। इनमें से 36 फीसदी विकसित देशों से और 50 फीसदी विकासशील देशों के हैं। धूम्रपान करने वाली महिलाओं की संख्या 25 करोड़ के लगभग है, इसमें 22 फीसदी विकसित देशों से संबंधित हैं। धूम्रपान से फेफड़ों का कैंसर होने की संभावना पुरुषों में 23 गुना और महिलाओं में 13 गुना ज्यादा होती है। सिगरेट पीने वाले एक तिहाई से आधे लोगों की मौत हो जाती है। धूम्रपान करने वाला व्यक्ति सिगरेट न पीने वाले से 15 वर्ष कम जीता है। चीन में महिलाओं पर किए गये एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि धूम्रपान करने वाली महिलाओं को दिल की

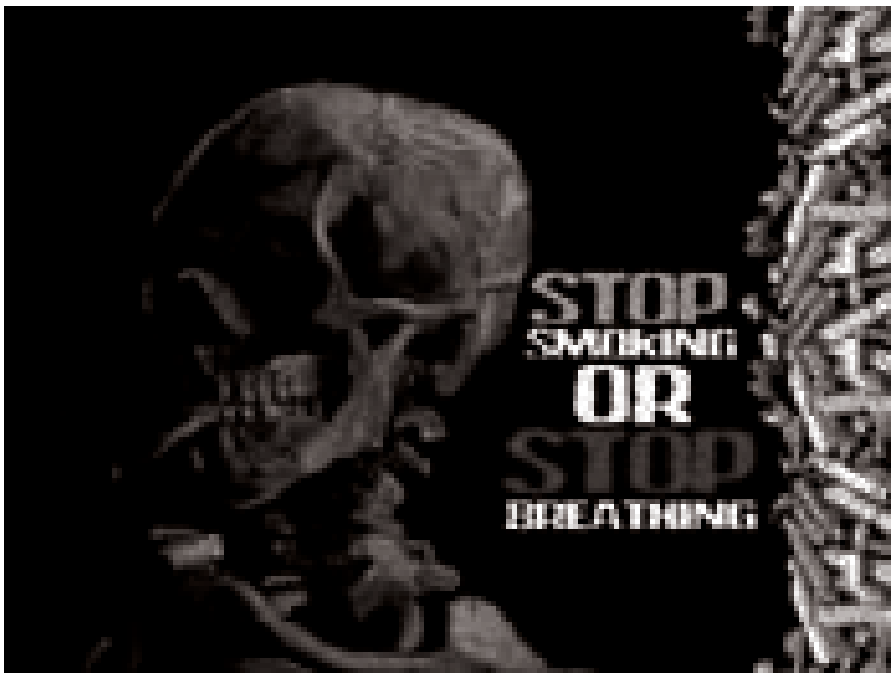

महात्मा गांधी ने कहा था

महात्मा गांधी ने धूम्रपान एवं मद्यपान पर कहा था कि ''मद्यपान एक व्यक्ति और परिवार को भौतिक, नैतिक, मानसिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से दुष्प्रभावित करती है।'' स्वतंत्रता के पश्चात् धूम्रपान नियंत्रण पर कोई सुदृढ़ नीति सरकार द्वारा नहीं बनाई गयी। 1975 में सर्वप्रथम सरकार की नींद खुली एवं सिगरेट एक्ट 1975 बनाया गया जिसके अंतर्गत सिगरेट के पैकेट पर चेतावनी लिखा जाना अनिवार्य कर दिया गया। यह चेतावनी वैधानिक थी परंतु इसका कोई व्यापक असर धूम्रपान करने वालों पर नहीं पड़ा। धूम्रपान बढ़ता ही गया। सरकार की ढुलमुल नीति एवं राजनैतिक अनिच्छा से धूम्रपान की खपत भारत में बढ़ती गई। आखिरकार 2003 में सिगरेट एण्ड अदर टोबैको प्रोडक्ट (प्राव्हीविशन ऑफ एडवरटाईसमेन्ट एण्ड रेग्यूलेशन एक्ट) 2003 बनाया गया। 2003 के इस कोटपा एक्ट में सिगरेट एवं तंबाकू के उत्पादकों के विज्ञापन को प्रतिबंधित कर दिया गया तथा शैक्षणिक संस्थानों के नजदीक सिगरेट एवं तंबाकू की बिक्री पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके साथ ही अनेक कानूनी प्रावधान रखे गए ताकि धूम्रपान पर नियंत्रण एवं अंकुश लगाया जा सके। परंतु प्रभावशाली नियंत्रण नहीं हो सका

www.publicpointnews.com

बीमारी तथा दिल का दौरा पडने़ का खतरा होता है। तथा महिलाओं के पैर की धमनियां प्रभावित होती हैं, इससे पैर काटने तक की स्थिति निर्मित हो सकती है। भारत में भी धूम्रपान गंभीर समस्या है। देश की 13500 करोड़ की वार्षिक उत्पादन क्षमता धूम्रपान के कारण घट जाती है, केवल 2 प्रतिशत लोग ही धूम्रपान छोडने़ का साहस कर पाते हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद 47 में मद्यनिषेध के लक्ष्यों का उल्लेख किया गया है। इस नीति के मूल प्रवर्तक महात्मा गांधी थे, उन्होंने धूम्रपान एवं मद्यपान पर कहा था कि ''मद्यपान एक व्यक्ति और परिवार को भौतिक, नैतिक, मानसिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से दुष्प्रभावित करती है।'' स्वतंत्रता के पश्चात् धूम्रपान नियंत्रण पर कोई सुदृढ़ नीति सरकार द्वारा नहीं बनाई गयी। 1975 में सर्वप्रथम सरकार की नींद खुली एवं सिगरेट

एक्ट 1975 बनाया गया जिसके अंतर्गत सिगरेट के पैकेट पर चेतावनी लिखा जाना अनिवार्य कर दिया गया। यह चेतावनी वैधानिक थी परंतु इसका कोई व्यापक असर धूम्रपान करने वालों पर नहीं पड़ा। धूम्रपान बढ़ता ही गया। सरकार की ढुलमुल नीति एवं राजनैतिक अनिच्छा से धूम्रपान की खपत भारत में बढ़ती गई। आखिरकार 2003 में

सिगरेट एण्ड अदर टोवैको प्रोडक्ट (प्राव्हीविशन ऑफ एडवरटाईसमेन्ट एण्ड रेग्यूलेशन एक्ट) 2003 बनाया गया। 2003 के इस कोटपा एक्ट में सिगरेट एवं तंबाकू के उत्पादकों के विज्ञापन को प्रतिबंधित कर दिया गया तथा शैक्षणिक संस्थानों के नजदीक सिगरेट एवं तंबाकू की बिक्री पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके साथ ही अनेक कानूनी प्रावधान रखे गए ताकि धूम्रपान पर नियंत्रण एवं अंकुश लगाया जा सके। परंतु प्रभावशाली नियंत्रण नहीं हो सका। कोटपा एक्ट 2003 में बन गया परंतु यह 2006 तक लागू नहीं किया जा सका था, क्योंकि भारत के विभिन्न न्यायालयों में इस कोटपा एक्ट 2003 को चुनौती दी गई थी। कई जनहित याचिकाएं भी लगीं।

आखिरकार 30 मई 2008 को कोटपा एक्ट लागू किया गया तथा 2 अक्टूबर 2008 से प्रभावशील कर सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान वर्जित अथवा प्रतिबंधित कर दिया गया। 2008 के अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर तक इसका आंशिक प्रभाव रहा परंतु 2010 आते-आते पूर्व की तरह स्थिति सामान्य हो गई, अब भी सार्र्वजनिक स्थलों पर धड़ल्ले से धूम्रपान हो रहा है। कोई दण्डनीय कार्यवाही नहीं होती। इस एक्ट के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कोई आधारभूत ढांचा ही नहीं है। सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान को कौन कैसे रोकेगा, क्या प्रक्रिया है, कैसे समाप्त किया जाएगा। कोई नहीं जानता।

तात्पर्य यही है कि धूम्रपान कानून के डंडे से नहीं रोका जा सकता यह तो स्वयं जनता की जागरुकता की समस्या है। परिवार को, समाज को जागरुक होना पड़ेगा, जब तक धूम्रपान निषेध जनता का आंदोलन नहीं बनेगा, इसका निवारण संभव नहीं है, यह एक सामाजिक समस्या है इसकी प्रारंभिक जागरुकता विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में होना चाहिये, तथा झुग्गी-बस्ती एवं गरीब वर्ग को इसके दुष्परिणाम पर निरंतर जानकारी देने पर ही इस गंभीर बीमारी का निदान संभव है। भारत में चण्डीगढ़ शहर धूम्रपान मुक्त शहर माना जाता है।

हरित क्रांति का सच

-रमेश दुबे

जिस हरित क्रांति की सफलता के गीत गाए जा रहे हैं उसने एकांगी कृषि रणनीति को बढ़ावा दिया और खेती-किसानी को बाजार के हवाले कर दिया। चूंकि बाजार का स्वरुप अपने आप में शोषणकारी होता है। इसलिए बहुसंख्यक किसान शोषण के दुष्चक्र में फंस कर रह गए। अनाज के भरे गोदाम और खाली पेट की विडंबना का मूल कारण यह बाजार तंत्र ही है। अब इन्हीं खाली पेटों को दो रुपये की दर से अनाज बांटकर भरने की कवायद जारी है।

मनुष्य और पर्यावरण पर हरित क्रांति के नकारात्मक प्रभावों के बावजूद नीति-निर्माताओं ने कोई सबक नहीं सीखा और अदूरदर्शी कृषि विकास रणनीति को आगे बढ़ाने में लगे रहे। उदाहरण के लिए पंजाब में किसानों को मुफ्त बिजली दी गई, जिससे भूजल का दोहन अंधाधुंध बढ़ा और वहां के अधिकांश ब्लाक डार्क घोषित कर दिए गए देश को भुखमरी के हालात से बाहर निकालने में हरित क्रांति के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हरित क्रांति के रूप में जिस तकनीक का पदार्पण हुआ, उसका स्वरूप पूंजी प्रधान था और वह बाहरी आदानों इनफट्स पर आधारित थी। फिर यह उन्हीं क्षेत्रों में अपना कमाल दिखा पाई, जो पहले से साधन संपन्न थें जैसे- पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दक्षिण भारत के चुनिंदा क्षेत्र। इससे पिछड़े क्षेत्र और पिछड़ गए। फिर हरित क्रांति के पूंजी व तकनीक प्रधान होने के कारण छोटे व सीमांत किसान उसे बड़े पैमाने पर नहीं अपना सके। इससे ग्रामीण जीवन में नए विभाजन पैदा हुए ।

हरित क्रांति में उन फसलों को प्राथमिकता मिली, जिनका बाजार में अच्छा मूल्य मिलता हो जैसे- गेहूं, धान, कपास, गन्ना। इसका परिणाम यह हुआ कि किसान पेट के लिए नहीं अपितु बाजार के लिए खेती करने लगे। हरित क्रांति के अगुआ और भारत का अन्न भंडार माने जाने वाला पंजाब राज्य यदि कुपोषण के मामले में अफ्रीका के सबसे निचली पायदान के देश गैबान से भी नीचे है तो इसका कारण यही है कि पेट के लिए नहीं, अपितु बाजार के लिए खेती हो रही हैं।

नकदी फसलों को प्रमुखता मिलने के कारण दलहनी, तिलहनी फसलें व मोटे अनाजों की खेती अनुर्वर व सीमांत भूमियों पर धकेल दी गई। अब इन फसलों की खेती किसान अपनी जरूरत भर के लिए करने लगे। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि फसल चक्र रूका और मिट्टी की उर्वरता, नमीनपन, भुरभुरेपन में कमी आई। इसकी कृत्रिम भरपाई के लिए रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, रसायनों, सिंचाई आदि का प्रयोग बढ़ा।

इससे कृषि मित्र जीव-जंतुओं का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ और मिट्टी की ऊपरी परत कठोर हुई। मिट्टी की ऊपरी परत के कठोर होते ही वर्षा जल के भूजल बनने के रास्ते बंद हुए। दूसरी ओर सिंचाई की जरूरत बढ़ने से भूजल के अंधाधुंध दोहन को बढ़ावा मिला। इससे न केवल पानी की कमी हुई, अपितु वह प्रदूषित भी हुआ और खेती की लागत भी बढ़ी। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के माध्यम से होने वाला प्रदूषण पेयजल व अनाजों के माध्यम से मनुष्य के शरीर में भी पहुंचना शुरू हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामीण लोग भी उन बीमारियों का शिकार होने लगे जो कभी महानगरों तक ही सीमित थीं।

भारत जैसे शाकाहारी देश में दालें प्रोटीन आपूर्ति की महत्वपूर्ण स्रोत होती हैं लेकिन नकदी फसलों की खेती के लोभ में दलहनों की खेती उपेक्षा का शिकार हो गई है। दूसरी ओर कनाडा, म्यांमार जैसे मांसाहारी देशों ने

भारतीय मांग को देखते हुए, दालों की खेती को प्रोत्साहन देना शुरू किया, जिसका परिणाम हुआ कि हम आयातित दालों पर निर्भर हो गए। क्या इसे देश का दुर्भाग्य नहीं कहेंगें कि कनाडा जैसे मांसाहारी देश हमें दाले खिला रहा है? चूंकि आयातित दाल महंगी पड़ती है इसलिए गरीबों की थाली से वह दूर जाने लगी है।

देश को भुखमरी के हालात से बाहर निकालने में हरित क्रांति के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हरित क्रांति के रूप में जिस तकनीक का पदार्पण हुआ, उसका स्वरूप पूंजी प्रधान था और वह बाहरी आदानों इनफट्स पर आधारित थी। फिर यह उन्हीं क्षेत्रों में अपना कमाल दिखा पाई, जो पहले से साधन संपन्न थें जैसे- पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दक्षिण भारत के चुनिंदा क्षेत्र। इससे पिछड़े क्षेत्र और पिछड़ गए। फिर हरित क्रांति के पूंजी व तकनीक प्रधान होने के कारण छोटे व सीमांत किसान उसे बड़े पैमाने पर नहीं अपना सके। इससे ग्रामीण जीवन में नए विभाजन पैदा हुए

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के अनुसार एक शाकाहारी व्यक्ति के लिए प्रतिदिन 48 ग्राम दालों की जरूरत होती है लेकिन 2008 में भारत में प्रति व्यक्ति औसत दाल खपत मात्र 31 ग्राम रह गई। दालों की खपत का यह राष्ट्रीय औसत है। समाज के कमजोर वर्गों की थाली से तो दालें लगभग गायब हो चुकी हैं।

दालों जैसी स्थिति खाद्य तेलों की भी है। आज से दो दशक पूर्व पाम आयल गिने चुने घरों में ही प्रयुक्त होता था, लेकिन आज भारत चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा खाद्य तेल आयातक देश बन चुका है। 2009-10 में भारत ने 32,000 करोड़ रूपये का खाद्य तेल आयात किया। जो सरसों का तेल रसोई घरों की शान हुआ करता था उसे आयातित खाद्य तेलों ने रसोई घर से खदेड़ दिया।

हरित क्रांति ने धीरे-धीरे कृषि एवं ग्रामीण जीवन मौसमी बना दिया। कृषि कार्य के मौसमी बनते ही वर्ष के कुछेक महीनों को छोड़कर शेष मौसम में गांवों में फरुष व पशु अनुपयोगी हो गए। इससे फरुषों का महानगरों की ओर पलायन हुआ और पशुओं की बूचड़खानों में बिक्री शुरू हुई। इसे गेहूं पट्टी के किसी भी गांव में देखा जा सकता है। इस प्रकार दलहन, तिलहन व सब्जी उगाकर खाने वाला आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय मनीआर्डर के रुपयों से आयातित दाल व खाद्य तेल तथा साप्ताहिक बाजारों में बिकने वाली सब्जी खाने पर बाध्य हुआ। यहीं से भारत में कुपोषण की शुरूआत होती है। यह निर्विवाद सत्य है कि हरित क्रांति से भले ही देश में खाद्य सुरक्षा आई हो, लेकिन पोषण सुरक्षा नष्ट करने में इसकी अग्रणी भूमिका निभाई।

मनुष्य और पर्यावरण पर हरित क्रांति के नकारात्मक प्रभावों के बावजूद नीति-निर्माताओं ने कोई सबक नहीं सीखा और अदूरदर्शी कृषि विकास रणनीति को आगे बढ़ाने में लगे रहे। उदाहरण के लिए पंजाब में किसानों को मुफ्त बिजली दी गई, जिससे भूजल का दोहन अंधाधुंध बढ़ा और वहां के अधिकांश ब्लाक डार्क घोषित कर दिए गए। फिर राजनीतिक दलों और उनके नेताओं ने वोट बैंक हासिल करने के लिए फसलों के समर्थन मूल्य में एकांगी नीति अपनाई। उदाहरण के लिए पंजाब में गेहूं और उत्तर प्रदेश में गन्ने का ऊंचा न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करने के लिए केंद्र सरकार पर दबाव बनाया गया, ताकि किसानों के वोट थोक में मिलें। इसी प्रकार की राजनीति अन्य राज्यों में भी खेली जाने लगी। इससे चुनिंदा फसलों का उत्पादन बढ़ा, लेकिन इसी के अनुरूप भण्डारण क्षमता में बढ़ोत्तरी न होने के कारण खुले में अनाज सड़ने की नौबत आ गई।

इस प्रकार एकांगी कृषि रणनीति अपनाने से समन्वित कृषि विकास में बाधा आई और हरित क्रांति थक-हारकर बैठ गई।

पंजाब में 1990 के दशक से ही उत्पादकता में ठहराव आने लगा। राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो पिछले एक दशक से खाद्यान्न उत्पादन 22-23 करोड़ टन के आसपास बना हुआ है जबकि जनसंख्या में प्रतिवर्ष डेढ़ करोड़ टन की वृद्धि हो रही है। इसका दुष्परिणाम प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता में गिरावट के रूप में सामने आ रहा है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन की रिपोर्ट के अनुसार- 2007

में प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता 151 किलो वार्षिक रह गई है जो कि 1950 के औसत (152 किलोष् से भी कम है।

1991 में शुरू हुई उदारीकरण की नीतियों में सेवा व विनिर्माण क्षेत्र को प्रमुखता मिलने के कारण खेती-किसानी के प्रति उपेक्षा का रूख अपनाया गया। दूसरे, वैश्विक वित्तीय संस्थानों (अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंकष् के दबाव के कारण भी सरकार ने कृषि क्षेत्र को दी जाने वाली सब्सिडी से अपने हाथ खींच लिए है। इसका परिणाम यह हुआ कि किसान अपनी वित्तीय जरूरतों के लिए निजी साहूकारों पर निर्भर होते गए, जो उन्हें फांसी के फंदे तक ले गया। पिछले डेढ़ दशक में दो लाख से अधिक किसानों ने आत्महत्या की। स्वयं भारत सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि देश के चालीस फीसदी किसान खेती छोड़ना चाहते हैं बशर्ते उन्हें वैकल्पिक रोजगार मिले। तीसरे, विश्व व्यापार समझौते के प्रावधानों के कृषि क्षेत्र में लागू होने के बाद उन कृषि उपजों का आयात भी बढ़ा जिनकी देश में बहुतायत है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत के गोदामों गेहूं रखने की जगह नहीं हैं वहीं दक्षिण भारत की आटा मिलें, आस्ट्रेलिया से गेहूं आयात कर रही हैं क्योंकि आयातित गेहूं सस्ता पड़ रहा है। अब विकसित देश भारत पर दबाव बना रहे हैं कि वह अपने विशाल कृषि क्षेत्र को विकसित देशों के सब्सिडी सिंचित कृषि उपजों के लिए खोले। देर सबेर भारत सरकार को इस मांग मानने के लिए बाध्य होना पड़ेगा, तब हमारी कृषि और बदहाल होगी।

जिस हरित क्रांति की सफलता के गीत गाए जा रहे हैं उसने एकांगी कृषि रणनीति को बढ़ावा दिया और खेती-किसानी को बाजार के हवाले कर दिया। चूंकि बाजार का स्वरुप अपने आप में शोषणकारी होता है। इसलिए बहुसंख्यक किसान शोषण के दुष्चक्र में फंस कर रह गए। अनाज के भरे गोदाम और खाली पेट की विडंबना का मूल कारण यह बाजार तंत्र ही है। अब इन्हीं खाली पेटों को दो रुपये की दर से अनाज बांटकर भरने की कवायद जारी है।

समग्रत: जिस हरित क्रांति की सफलता के गीत गाए जा रहे हैं उसने एकांगी कृषि रणनीति को बढ़ावा दिया और खेती-किसानी को बाजार के हवाले कर दिया। चूंकि बाजार का स्वरूप अपने आप में शोषणकारी होता है। इसलिए बहुसंख्यक किसान शोषण के दुष्चक्र में फंस कर रह गए। अनाज के भरे गोदाम और खाली पेट की विडंबना का मूल कारण यह बाजार तंत्र ही है। अब इन्हीं खाली पेटों को दो रुपये की दर से अनाज बांटकर भरने की कवायद जारी है।

जनयुद्ध की हुंकार

भाई मिडिया ? -- अब तो मुखर हो जा

माननीय रविशंकरजी ,रामदेव सरीखे संत और

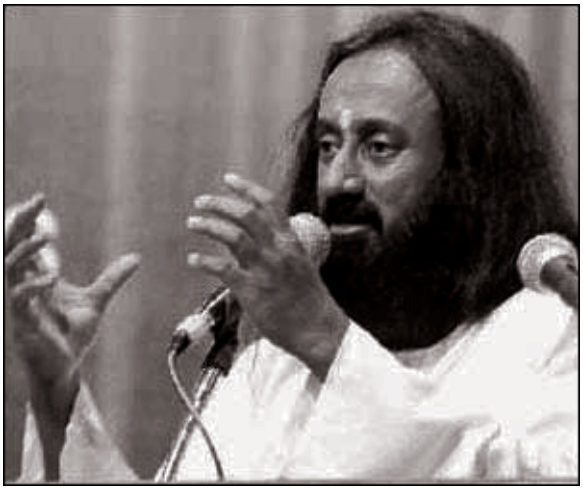

अन्ना हजारे,किरण बेदी जैसे प्रबुद्ध नागरिको द्वारा भ्रस्टाचार के विरुद्ध जन युद्ध की घोषणा और उद्घोधन में आजादी की दूसरी लड़ाई के कथन सुनकर निश्चित ही देशवासियों को गहन अँधेरे में रौशनी की एक किरण दिखाई दी है .

किसी गजल की पंक्तिया भी है की **एक न एक शमा अँधेरे में जलाए रखिये सुबह होने को है माहोल बनाए रखिये .**

इस दशक में यह प्रमुख उपलब्धि के रूप में रेखांकित की जायेगी के देश के संत -महात्मा ही नहीं अपितु प्रमुख बुद्धिजीवियों ने भी नासूर की तरह पक चुके भ्रस्टाचार पर समूचे देश के नागरिक के गुस्से और खीज को मुखर किया है .

आजादी के 6 दशक बाद भले ही देश में आर्थिक विकास , समृद्धि और वैभव की उपलब्धिया गिनाई जाए , किन्तु चारित्रिक-नैतिक पतन का चरम भी देशवासी देख रहे है की भ्रस्टाचार की दीमक विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के ताने -बाने को चट कर रही है .जिसका हमला प्रतिदिन चर्या में आम नागरिक के हितो पर हुआ है - हो रहा है और आम नागरिक त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहा है .

योगगुरु रामदेव भ्रस्ताचारियो द्वारा स्विस बेंक में जमा देश की अकूत सम्पदा को वापिस लाने का निरंतर आव्हान कर रहे थे अब इस नित बड़ते दवाब में केंद्रीय मंत्री ने भी इस सन्दर्भ में सकारात्मक संकेत दिए है ,जो देर आयद दुरुस्त आयद की तर्ज पर सुखद ही कहा जाएगा .

किन्तु भ्रस्ताचारियो के विरुद्ध कठोर एवं त्वरित कार्यवाही के प्राविधान के साथ ही सदाचारियो को समाज में सम्मानित किये

जाने पर भी विचार किया जाना अपेछित है

..इस दिशा में प्रिट और दृश्य मिडिया को ही पहल करनी होगी

बैताल पचीसी

बैताल पचीसी (वेताल पचीसी या बेताल पच्चीसी (संस्कृत-बेतालपञ्चविंशतिका) पच्चीस कथाओं से युक्त एक ग्रन्थ है। इसके रचयिता बेतालभट्ट बताये जाते हैं जो न्याय के लिये प्रसिद्ध राजा विक्रम के नौ रत्नों में से एक थे। ये कथायें राजा विक्रम की न्याय-शक्ति का बोध कराती हैं। बेताल प्रतिदिन एक कहानी सुनाता है और अन्त में राजा से ऐसा प्रश्न कर देता है कि राजा को उसका उत्तर देना ही पड़ता है। उसने शर्त लगा रखी है कि अगर राजा बोलेगा तो वह उससे रूठकर फिर से पेड़ पर जा लटकेगा। लेकिन यह जानते हुए भी सवाल सामने आने पर राजा से चुप नहीं रहा जाता।

बैताल पचीसी की कहानियाँ भारत की सबसे लोकप्रिय कथाओं में से हैं। इनका स्रोत राजा सातवाहन के मन्त्री गुणादय द्वारा रचित बड कहा नामक ग्रन्थ को दिया जाता है जिसकी रचना ई. पूर्व 495 में हुई थी । कहा जाता है कि यह किसी पुरानी प्राकृत में लिखा गया था और इसमे 7 लाख छन्द थे। आज इसका कोई भी अंश कहीं भी प्राप्त नहीं है। कश्मीर के कवि सोमदेव ने इसको फिर से संस्कृत में लिखा और कथासरित्सागर नाम दिया। बड़कहा की अधिकतम कहानियों को कथा सरित्सागर में संकलित कर दिए जाने के कारण ये आज भी हमारे पास हैं। वेताल पन्चविन्शति यानी बेताल पच्चीसी कथा सरित सागर का ही भाग है। समय के साथ इन कथाओं की प्रसिद्धि अनेक देशों में पहुँची और इन कथाओं का बहुत सी भाषाओं में अनुवाद हुआ। बेताल के द्वारा सुनाई गई यो रोचक कहानियाँ सिर्फ़ दिल बहलाने के लिये नहीं हैं, इनमें अनेक गूढ अर्थ छिपे हैं। क्या सही है और क्या गलत, इसको यदि हम ठीक से समझ ले तो सभी प्रशासक राजा विक्रम कि तरह न्याय प्रिय बन सकेंगे, और छल व द्वेष छोडकर, कर्म और धर्म की राह पर चल सकेंगे। इस प्रकार ये कहानियाँ न्याय, राजनीति और विषण परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती हैं।

www.publicpointnews.com

खतरनाक होगा ग्लोबल वार्मिंग का असर

-सचिन शर्मा

ग्लोबल वार्मिंग दुनिया के लिए कितनी बड़ी समस्या है, ये बात एक आम आदमी समझ नहीं पाता है। उसे ये शब्द थोड़ा टेक्निकल लगता है इसलिए वो इसकी तह तक नहीं जाता है। लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि यह एक दूर की कौड़ी है और फिलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है। कई लोग इस शब्द को पिछले दशक से ज्यादा सुन रहे हैं इसलिए उन्हें ये बासी लगने लगा है।

भारत में भी ग्लोबल वार्मिंग एक प्रचलित शब्द नहीं है और भाग-दौड़ में लगे रहने वाले भारतीयों के लिए भी इसका अधिक कोई मतलब नहीं है। लेकिन विज्ञान की दुनिया की बात करें तो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं। इसको 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा खतरा बताया जा रहा है। यह खतरा तृतीय विश्वयुद्ध या किसी क्षुद्रग्रह (एस्टेरोइड) के पृथ्वी से टकराने से भी बड़ा माना जा रहा है।

ये हुई कुछ ऊपरी बातें जो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर कही गईं लेकिन अगर हम इसकी तह में जाएँ तो हमें पता चलेगा कि वाकई यह विषय बहुत महत्वपूर्ण है। पूरी दुनिया इससे प्रभावित हो रही है। अगर इसे नहीं संभाला गया तो यह किसी विश्वयुद्ध से ज्यादा जान-माल की हानि कर सकता है। सबसे पहले हमें इसकी कुछ शुरुआती बातें समझनी होंगी।

माना जाता है कि पिछली शताब्दी में यानी सन 1900 से 2000 तक पृथ्वी का औसत तापमान 1 डिग्री फैरेनहाइट बढ़ गया है। सन 1970 के मुकाबले वर्तमान में पृथ्वी 3 गुणा तेजी से गर्म हो रही है। इस बढ़ती वैश्विक गर्मी के पीछे मुख्य रूप से मानव ही है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन, गाड़ियों से निकलने वाला धुँआ और जंगलों में लगने वाली आग इसकी मुख्य वजह हैं। इसके अलावा घरों में लक्जरी वस्तुएँ मसलन एयरकंडीशनर, रेफ्रिजरेटर, ओवन आदि भी इस गर्मी को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार ग्रीन हाउस गैस वो होती हैं जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश तो कर जाती हैं लेकिन फिर वो यहाँ से वापस %स्पेस% में नहीं जातीं और यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो 21वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 से 8 डिग्री तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे।

दुनिया के कई हिस्सों में बिछी बर्फ की चादरें पिघल जाएँगी, समुद्र का जल स्तर कई फीट ऊपर तक बढ़ जाएगा। समुद्र के इस बर्ताव से दुनिया के कई हिस्से जलमग्न हो जाएँगे। भारी तबाही मचेगी। यह तबाही किसी विश्वयुद्ध या किसी एस्टेरोइड के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिए वो दिन बहुत बुरे साबित होंगे।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारक = जैसा कि ऊपर बताया गया है कि ग्लोबल वार्मिंग के पीछे मुख्य रूप से ग्रीन हाउस गैसों का होना है। तो सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि ये गैसें कौन-सी हैं और कैसे पैदा होती हैं। ग्रीन हाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसें शामिल होती हैं। इनमें भी सबसे अधिक उत्सर्जन कार्बन डाइऑक्साइड का होता है। इस गैस का उत्सर्जन सबसे अधिक %पॉवर प्लांट्स से होता है।

याद रखें कि बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है। अगर हम ये सोचें कि एक अकेले हमारे सुधरने से क्या हो जाएगा तो इस बात को

याद रखें

बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है। अगर हम ये सोचें कि एक अकेले हमारे सुधरने से क्या हो जाएगा तो इस बात को ध्यान रखें कि हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। सभी लोग अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें तो ग्लोबल वार्मिंग को भी परास्त किया जा सकता है

ध्यान रखें कि हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। सभी लोग अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें तो ग्लोबल वार्मिंग को भी परास्त किया जा सकता है

बिजली संयंत्रों को बिजली पैदा करने के लिए भारी मात्रा में जीवाश्म ईंधन (मसलन कोयला) का उपयोग करना पड़ता है। इससे भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड पैदा होती है। माना जाता है कि संसार में 20 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड गाड़ियों में लगे गैसोलीन इंजन की वजह से उत्सर्जित होती है। इसके अलावा विकसित देशों के घर किसी भी कार या ट्रक से ज्यादा कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं। इनको बनाने में कार्बन डाइऑक्साइड की बहुत मात्रा उत्सर्जित होती है। इसके अलावा इन घरों में लगने वाले उपकरण भी इन गैसों का उत्सर्जन करते हैं।

जागरूकता ही उपाय = ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का कोई इलाज नहीं है। इसके बारे में सिर्फ जागरूकता फैलाकर ही इससे लड़ा जा सकता है। हमें अपनी पृथ्वी को सही मायनों में ग्रीन बनाना होगा। अपने %कार्बन फुटप्रिंट्स (प्रति व्यक्ति कार्बन उर्त्सजन को मापने का पैमाना) को कम करना होगा। हम अपने आसपास के वातावरण को प्रदूषण से जितना मुक्त रखेंगे इस पृथ्वी को बचाने में उतनी बड़ी भूमिका निभाएँगे।

याद रखें कि बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है। अगर हम ये सोचें कि एक अकेले हमारे सुधरने से क्या हो जाएगा तो इस बात को ध्यान रखें कि हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। सभी लोग अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें तो ग्लोबल वार्मिंग को भी परास्त किया जा सकता है। ये एक ऐसा राक्षस है जो जब तक सो रहा है, हम सुरक्षित हैं लेकिन अगर यह जाग गया तो हमें कहीं का नहीं छोड़ेगा।

कहाँ से होता है ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन
पॉवर स्टेशन से - 21.3 प्रतिशत
इंडस्ट्री से - 16.8 प्रतिशत
यातायात और गाड़ियों से - 14 प्रतिशत
खेती-किसानी के उत्पादों से - 12.5 प्रतिशत
जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल से - 11.3 प्रतिशत
रहवासी क्षेत्रों से - 10.3 प्रतिशत
बॉयोमॉस जलने से - 10 प्रतिशत
कचरा जलाने से - 3.4 प्रतिशत

बढ़ रहा है खतरा हमने टेलीविजन के माध्यम से संसार में ग्लोबल वार्मिंग की वजह से बढ़ रहे खतरों को देखा है। आर्कटिक में पिघलती हुई बर्फ, चटकते ग्लेशियर, अमेरिका में भयंकर तूफानों की आमद बता रही है कि हम मौसम परिवर्तन% के दौर से गुजर रहे हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि इसका असर सिर्फ समुद्र तटीय इलाकों पर ही नहीं पड़ेगा बल्कि सभी जगह पड़ेगा।

माना जा रहा है कि इसकी वजह से उष्णकटिबंधीय रेगिस्तानों में नमी बढ़ेगी। मैदानी इलाकों में भी इतनी गर्मी पड़ेगी जितनी कभी इतिहास में नहीं पड़ी। इस वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियाँ पैदा होंगी। वैज्ञानिकों के अनुसार आज के 15.5 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान के मुकाबले भविष्य में 22 डिग्री सेंटीग्रेट तक तापमान जा सकता है।

हमें ध्यान रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाराज नहीं कर दें कि वह हमारे अस्तित्व को खत्म करने पर ही आमादा हो जाए। हमें उसे मनाकर रखना पड़ेगा। हमें उसका ख्याल रखना पड़ेगा, तभी तो वह हमारा ख्याल रखेगी

धृतराष्ट्र

सत्यवती के चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुये। जब चित्रांगद और विचित्रवीर्य छोटे ही थे तभी शान्तनु का स्वर्गवास हो गया था इसलिये उनका पालन पोषण भीष्म ने किया। भीष्म ने चित्रांगद के बड़े होने पर उसे राजगद्दी पर बिठा दिया किन्तु कुछ समय बाद ही वह गन्धर्वों से युद्ध करते हुये मारा गया। भीष्म ने उसके भाई विचित्रवीर्य को राज्य सौंपने के बाद भीष्म को विचित्रवीर्य के विवाह की चिन्ता हुई। उसी समय काशीराज की तीन कन्याओं, अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का स्वयंवर होने वाला था। भीष्म ने वहाँ जाकर अकेले ही सभी राजाओं को हरा दिया और तीनों कन्याओं का हरण करके हस्तिनापुर ले आये। बड़ी कन्या अम्बा ने भीष्म को बताया कि वह राजा शाल्व को प्रेम करती है। यह सुन कर भीष्म ने उसे राजा शाल्व के पास भिजवाया और अम्बिका और अम्बालिका का विवाह विचित्रवीर्य के साथ करवा दिया। राजा शाल्व ने अम्बा को स्वीकार नहीं किया अत: वह हस्तिनापुर वापिस लौट आयी और भीष्म से बोली, हे आर्य! आप मुझे लाये हैं अत: आप मुझसे विवाह करें। किन्तु भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा के कारण उसका अनुरोध अस्वीकार कर दिया। अम्बा नाराज हो कर परशुराम के पास गई और अपनी व्यथा सुना कर मदद माँगी। परशुराम ने कहा, हे देवि! मैं आपका विवाह भीष्म के साथ करवाउँगा। परशुराम ने भीष्म को बुलवाया किन्तु भीष्म उनके पास नहीं गये। परशुराम क्रोधित होकर भीष्म के पास पहुँचे और दोनों में युद्ध छिड़ गया। दोनों कुशल योद्धा थे, अत: हार-जीत का फैसला ना हो पाया। अंत में देवताओं ने हस्तक्षेप कर इस युद्ध को बन्द करवाया। अम्बा वन में तपस्या करने चली गई। विचित्रवीर्य की कोई सन्तान नहीं हुई और वे क्षय रोग से पीड़ित हो कर मृत्यु को प्राप्त हो गये। कुल का नाश होने के भय से माता सत्यवती ने भीष्म से कहा, पुत्र! इस वंश को नष्ट होने से बचाने के लिये मेरी आज्ञा है कि तुम इन दोनों रानियों से पुत्र उत्पन्न करो। माता का आदेश सुन कर भीष्म ने कहा, माता! मैं अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं कर सकता। माता सत्यवती को अत्यन्त दु:ख हुआ। अचानक उन्हें अपने पुत्र वेदव्यास की याद आयी। याद करते ही वेदव्यास वहाँ उपस्थित हो गये। सत्यवती ने उन्हें देख कर कहा, पुत्र! तुम्हारे सभी भाई नि:सन्तान ही स्वर्गवासी हो गये। अत: वंश का नाश होने से बचाने के लिये मैं तुम्हें आज्ञा देती हूँ कि तम उनकी पत्नियों से सन्तान उत्पन्न करो वेदव्यास उनकी आज्ञा मान कर बोले, माता! आप उन दोनों रानियों से कह दें कि वे एक वर्ष तक नियम व्रत का पालन करते रहें तभी उनको गर्भ धारण होगा।

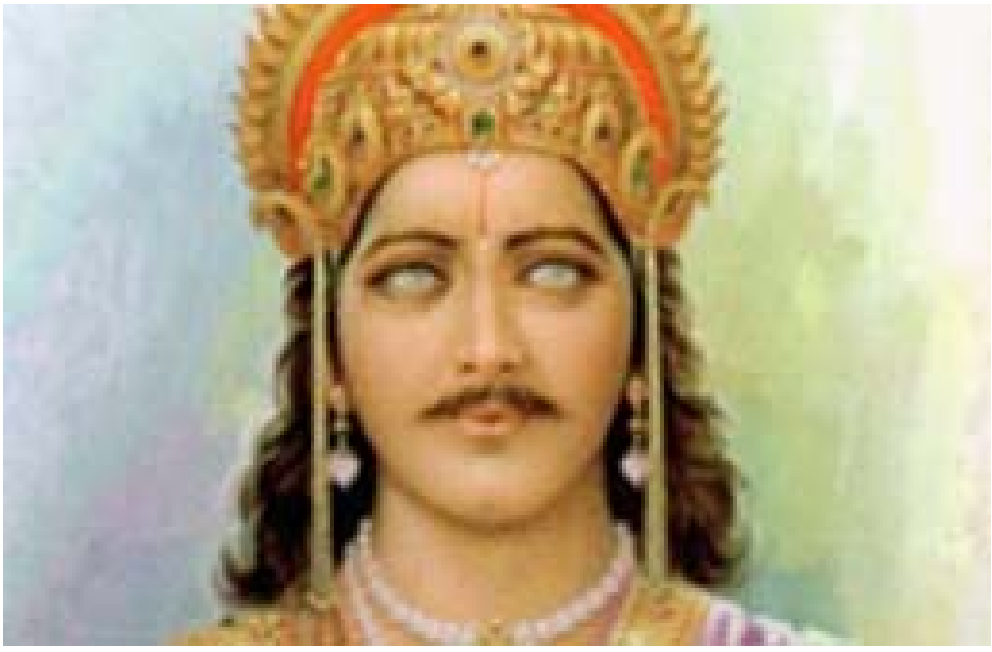

धृतराष्ट्र का जन्म

एक वर्ष व्यतीत हो जाने पर वेदव्यास सबसे पहले बड़ी रानी अम्बिका के पास गये। अम्बिका ने उनके तेज से डर कर अपने नेत्र बन्द कर लिये। वेदव्यास लौट कर माता से बोले, माता अम्बिका का बड़ा ही तेजस्वी पुत्र होगा किन्तु नेत्र बन्द करने के दोष के कारण वह अंधा होगा। सत्यवती को यह सुन कर अत्यन्त दु:ख हुआ। उन्होंने वेदव्यास को छोटी रानी अम्बालिका के पास भेजा। अम्बालिका वेदव्यास को देख कर भय से पीली पड़ गई। उसके कक्ष से लौटने पर वेदव्यास ने सत्यवती से कहा,माता! अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु रोग से ग्रसित पुत्र होगा। इससे माता सत्यवती को और भी दु:ख हुआ। उन्होंने बड़ी रानी अम्बालिका को पुन: वेदव्यास के पास जाने का आदेश

दिया। इस बार बड़ी रानी ने स्वयं न जा कर अपनी दासी को वेदव्यास के पास भेज दिया। दासी ने आनन्दपूर्वक वेदव्यास से भोग कराया। इस बार वेदव्यास ने माता सत्यवती के पास आ कर कहा, माते! इस दासी के गर्भ से वेद-वेदान्त में पारंगत अत्यन्त नीतिवान पुत्र उत्पन्न होगा। इतना कह कर वेदव्यास तपस्या करने चले गये। समय आने पर अम्बा के गर्भ से जन्मांध धृतराष्ट्र, अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु रोग से ग्रसित पाण्डु तथा दासी के गर्भ से धर्मात्मा विदुर का जन्म हुआ। धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर के लालन पालन का भार भीष्म के ऊपर था। तीनों पुत्र बड़े होने पर विद्या पढ़ने भेजे गये। धृतराष्ट्र बल विद्या में, पाण्डु धनुर्विद्या में तथा विदुर धर्म और नीति में निपुण हुये। युवा होने पर धृतराष्ट्र अन्धे होने के कारण राज्य के उत्तराधिकारी न बन सके। विदुर दासीपुत्र थे इसलिये पाण्डु को ही हस्तिनापुर का राजा घोषित किया गया। भीष्म ने धृतराष्ट्र का विवाह गांधार की राजकुमारी गांधारी से कर दिया। गांधारी को जब ज्ञात हुआ कि उसका पति अन्धा है तो उसने स्वयं अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली।

महाभारत से

धृतराष्ट्र पाण्डु का बड़ा भाई था। उसके सौ पुत्र कौरव नाम से विख्यात हुए । महाभारत जैसे वृहत युद्ध में यद्यपि कौरवों की ओर से अन्याय हुआ था तथापि धृतराष्ट्र की सहानुभूति अपने पुत्रों की ओर ही रही। वयोवृद्ध होने पर भी न्यायसंगत बात उसके मुंह से नहीं निकली। उसने संजय के द्वारा पांडवों के पास यह संदेश भिजवाया था कि कौरवों के पास अपरिमित सैन्य बल है अतः वे लोग कौरवों से युद्ध न करें। युधिष्ठिर ने संजय से पूछा कि उसने पांडवों के किस कर्म से यह अनुभव किया है कि वे लोग युद्ध के लिए उद्यत हैं? श्रीकृष्ण ने कहा-यदि पांडवों के

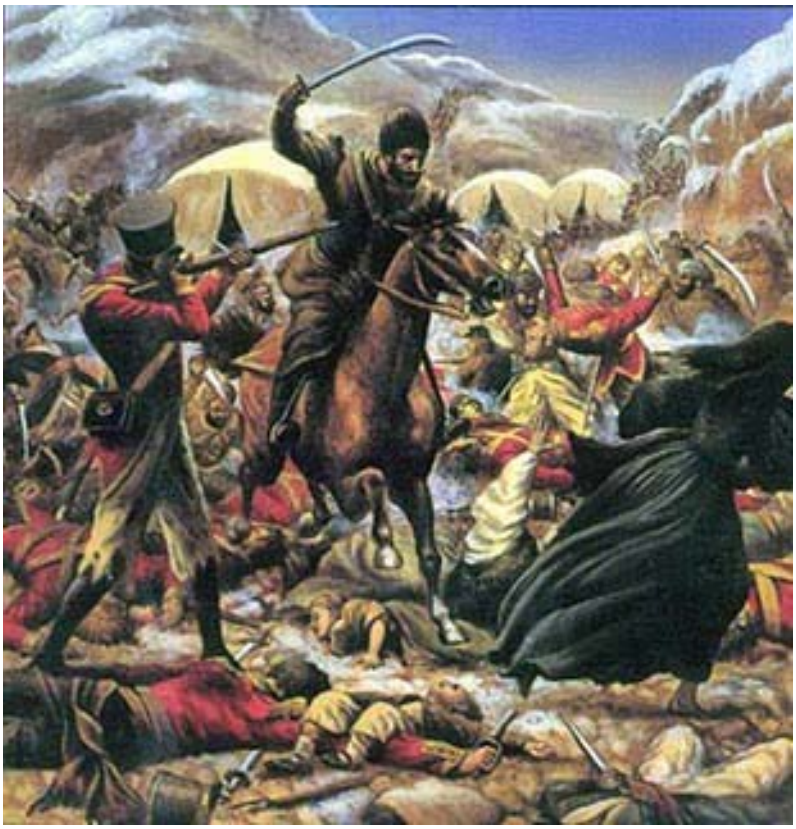

अधिकार की हानि नहीं हो तो दोनों में संधि कराना श्रेयस्कर है अन्यथा क्षत्रिय का धर्म स्वराज्य-प्राप्ति के लिए युद्ध में प्राणों का स्वाहा कर देना है। जैसा संदेश उसने पांडवों के पास भेजा था, वैसा कुछ कौरवों को समझाने का प्रयास उसने नहीं किया। विदुर (धृतराष्ट्र के छोटे भाई) ने भी धृतराष्ट्र को बहुत समझाया कि पांडवों का सर्वस्वहरण करने के उपरांत वे सब उनसे शांति की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? अन्याय से पांडव तो लड़ेंगे ही। भावी आंशका से ग्रस्त होकर धृतराष्ट्र अपने पुत्रों को युद्ध से नहीं रोक पाया। हुआ भी ऐसा ही। संभावित महाभारत युद्ध में सभी कौरवों का नाश हो गया। पांडवों के अधिकांश सैनिक तथा पांचाल नष्ट हो गये। दुर्योधन की मृत्यु के उपरांत धृतराष्ट्र अपने प्राण त्यागने को उद्यत हो उठा। व्यास तथा विदुर ने अपने पुराने कथनों का स्मरण दिलाकर और इस दुर्घटना को अनिवार्य बतलाकर धृतराष्ट्र को शांत किया तथा आदेश दिया कि वह पांडवों से मैत्रीभाव रखने का प्रयास करे। धृतराष्ट्र ने ऐसा ही करने का आश्वासन दिया किंतु वह पांडवों पर बहुत क्रुद्ध रहा। तदनंतर वह स्त्रियों तथा प्रजाजनों सहित मृत वीरों के अंत्येष्टिकर्म आदि के लिए रणभूमि की ओर चल पड़ा। मार्ग में कृपाचार्य, अश्वत्थामा तथा कृतवर्मा से भेंट हुई। उन तीनों वीरों ने पांचालों से लिए प्रतिशोध के विषय में सविस्तार वृत्तांत धृतराष्ट्र को सुनाया और यह बताकर कि वे पांडवों से छिपकर भाग रहे हैं- अश्वत्थामा व्यास मुनि के आश्रम की ओर, कृपाचार्य हस्तिनापुर तथा कृतवर्मा अपने देश की ओर बढ़े। हस्तिनापुर में रूदन करती हुई महिलाओं के मध्य रोती हुई द्रौपदी, पांडव, सात्यकि तथा कृष्ण भी थे। धृतराष्ट्र उनसे भी मिले। भीम की लौह-प्रतिमा को उन्होंने गले लगाकर चूर-चूर कर दिया। कृष्ण ने उनके क्रोध को शांत किया, फटकारा भी, तब वे पांडवों को हृदय से लगा पाये।

त्वचा की देखरेख

त्वचा शरीर का सबसे बड़ी अंग प्रणाली है। यह सख्त और नमनशील है और अपने नीचे के ऊतकों को हवा, पानी, विदेशी पदार्थों और बैक्टीरिया से बचाती है। यह चोट के प्रति संवेदनशील है और उसमें अपनी मरम्मत करने की उल्लेखनीय क्षमता है। बहरहाल, अपनी इस लोच के बावजूद त्वचा लंबे समय तक दाब, अत्यधिक बल या घर्षण बरदाश्त नहीं कर सकती।

त्वचा पर लगातार दाब त्वचा को पोषण और आक्सीजन आपूर्ति करने वाली रक्त वाहिकाओं को निचोड़ देता है। जब त्वचा को बहुत समय तक रक्त नहीं मिलता है तो ऊतक मर जाते हैं और एक प्रेशर अल्सर बनता है।

प्रेशर अल्सर लकवाग्रस्त व्यक्ति के जीवनकाल में पेश आने वाली एक प्रमुख जटिलता है। यह आकलन किया गया है कि मिसाल के तौर पर रज्जुमज्जा चोट वाले तीन में से एक व्यक्ति में चोट आने के बाद के शुरुआती दिनों में प्रेशर सोर हो जाता है जबकि 50 प्रतिशत और 80 प्रतिशत में बाद में होता है। प्रेशर सोर से बचा जा सकता है लेकिन यह उन लोगों में भी हो जा सकता है जिन्हें बढ़िया सेवा और अच्छे उपकरण दिए गए हैं। इन सोर को ठीक होने में अकसर ढेर सारा समय, धन और सेवा की जरूरत पड़ती है; प्रेशर सोर की वजह से महीनों बिस्तर पर पड़े रहना पड़ सकता है, खास कर तब जब यह आपरेशन के कारण हुआ हो। इसमें हजारों डॉलर खर्च हो सकते हैं और इसमें आपकी नौकरी, स्कूल या परिवार का मूल्यवान समय खर्च हो सकता है।

प्रेशर सोर, प्रेशर अल्सर, बेड सोर, डेकुबिटी और डेकुबाइटस अल्सर शब्द हैं जो त्वचा के एक क्षेत्र के नष्ट होने को परिभाषित करते हैं जहां अत्यधिक दाब या बल का प्रयोग हुआ हो। यह स्थिति एक तरह से त्वचा और उसके नीचे के विभिन्न ऊतकों को हुई क्षति है।

दाब के चलते त्वचा क्षति आम तौर पर शरीर में वहां होती है जहां हड्डी त्वचा की सतह के बहुत निकट होती है, जैसे कूल्हे। हड्डी के ये उभरे हुए हिस्से त्वचा पर अंदर से दबाव डालते हैं। अगर बाहर भी कोई सख्त सतह हो तो त्वचा प्रवाह से कट जाती है। चूंकि प्रवाह की दर लकवा के कारण घट चुकी होती है, त्वचा तक आक्सीजन कम पहुंचता है और त्वचा का प्रतिरोध घटा देता है। शरीर इसकी भरपाई क्षेत्र में अधिक रक्त भेज कर करने की कोशिश करता है। इससे सूजन हो सकती है जिससे रक्त वाहिकाओं पर और भी दबाव बढ़ सकता है और त्वचा का स्वास्थ्य और भी खतरे में पड़ सकता है।

त्वचा पर फोड़ा का मतलब कई हफ्तों तक अस्पताल में भर्ती रहना या बिस्तर पर आराम करना हो सकता है ताकि फोड़ा ठीक हो सके। जटिल प्रेशर सोर में आपरेशन या त्वचा के प्रतिरोपण की आवश्यकता भी पड़ सकती है।

किसको होता है प्रेशर सोर? किसी को भी प्रेशर सोर हो सकता है अगर वह लंबे समय तक एक ही मुद्रा में रहे जिससे शरीर के किसी खास हिस्से में जबरदस्त दाब पड़े, और उनमें पूरी गतिशीलता वाले लोग भी

शामिल हैं। व्हीलचेयर पर या बिस्तर पर रहने वाले लोगों को खास तौर पर हो सकता है क्योंकि उन्हें अपनी मुद्रा बदलने में दिक्कत होती है, या बिना किसी सहायता के भार दूसरी तरफ नहीं डाल सकते। जब सीमित गतिशीलता के साथ क्षीण संवेदना के संयोग होने पर किसी व्यक्ति को प्रेशर सोर होने की आशंका ज्यादा होती है क्योंकि वह यह समझ नहीं पाता कि कब दबाव हटाने के लिए भार बदले।

संवेदना की कमी बस कहानी का एक ही हिस्सा है। ट्रॉमा या रोग से संबंधित लकवा त्वचा के जैवरसायन को ही प्रभावित करता है। मिसाल के तौर पर, त्वचा को तनन शक्ति प्रदान करने वाले कोलाजेन जैसे प्रोटीनों का खासा क्षरण होता है; यह त्वचा को कमजोर और कम तन्य बनाता है। कालप्रभाव की प्रक्रिया भी त्वचा के फटने की प्रक्रिया बढ़ा सकती है। ज्यदा उम्र के लोगों में प्रेशर सोर होने का खतरा ज्यादा होता है।

शरीर के हड्डी वाले उभरे हुए हिस्से (कूल्हे, तलवे और कुहनी, टेलबोन और इश्चियम) के गिर्द की मांसपेशियों के उपयोग नहीं किए जाने से मांसपेशी का क्षरण (एट्रोफी) होता है जिससे त्वचा के टूटने का खतरा बढ़ता है।

घर्षण का बल या कतरना -- किसी सतह के हिसाब से त्वचा ऊतकों को घसीटा जाना, जैसे बिस्तर या कुर्सी में खींचे जाने से रक्तवाहिकाएं फैल या मुड़ जाती हैं जिससे प्रेशर अल्सर हो जाता है। उठाने की जगह किसी सतह पर खिंचे जाने से छीलन या खराश आ जा सकती हैं। कोई ठोकर लगने या गिरने से त्वचा को क्षति पहुंच सकती है जो ऐसे नहीं दिखेगी। प्रेशर सोर कपड़ों, बंधनों या सख्त वस्तुओं से भी हो सकती है जो आपकी त्वचा पर दबाव डालती हैं। साथ ही, सीमित संवेदना वाले लोग जलने से त्वचा क्षति के शिकार हो सकते हैं।

अत्यधिक आद्रता भी ऐसे लोगों में प्रेशर

सोर होने का कारण जो सकते हैं जिन्हें पसीना बहुत निकलता है और/या जो व्यवभिचारी हैं।

पोषण- खराब पोषण किसी व्यक्ति के समग्र स्वास्थय के लिए खतरा बनता है, लेकिन लकवाग्रस्त व्यक्ति में प्रेशर सोर के विकास होने और उसके बहुत धीमी रफ्तार से ठीक होने का खतरा होता है। शरीर को त्वचा को स्वस्थ रखने, किसी क्षति को दुरूस्त करने और संक्रमणों से लड़ने के लिए प्रोटीन और विटामिन जैसे विभिन्न पोषकों की आवश्यकता पड़ती है। पोषक तत्वों से वंचित शरीर की प्रेशर सोर जैसी जटिलताओं को दूर रखने की क्षमता सीमित होती है।

वजन की समस्यास- सामान्य से ज्यादा वजन वाले लोगों में प्रेशर सोर होने का खतरा ज्यादा होता है; सामान्य से कम वजन वाले लोगों के लिए भी ज्यादा खतरा होना संभव है। सामान्य से ज्यादा वजन वाले व्यक्ति के लिए अतिरिक्त वजन शरीर को त्वचा के संवेदनशील हिस्से पर दाब बढ़ाने के लिए बाध्य करता है। मांसपेशी और बॉडी मास को आप पैड की तरह सोच सकते हैं, उसकी कमी तनाव के प्रति त्वचा को कम लचीला बनाती है।

प्रेशर सोर के खतरों को बढ़ाने वाले अन्य कारकों में खराब स्वास्थ्य, डिहाइड्रेशन, खराब साफ-सफाई, धूम्रपान, एनिमिया, डायबीटीज जैसी गंभीर बीमारियां, संवहनी रोग, मस्तिष्क-संस्तम्भता, खराब उपकरण, नशाखोरी और अवसाद शामिल हैं। चिकित्सा साहित्य बताता है कि अवसादग्रस्त लोग त्वचा स्वास्थ्य जैसे अपनी देखरेख के महत्वपूर्ण मुद्दों के प्रति कम सजग होते हैं।

प्रेशर सोर के प्रकार- प्रेशर सोर को उनकी गहराई और आकार और ऊतक स्तरों को क्षति की गंभीरता के आधार पर चार चरणों

में श्रेणीबद्ध किया गया है। ये चरण हैं- चरण 1 (आरंभिक लक्षण), चरण 2 (फफोले और कभी-कभी मूंह खुलना या अल्सर), चरण 3 (क्षति ऊतक के अंदर गहराई तक पैठ जाती है) और चरण 4 (क्षति मांसपेशी तथा हड्डी तक)।

चरण 1- लगभग हमेशा कोई प्रेशर सोर त्वचा पर एक लाल धब्बे की तरह शुरू होता है। यह लाल इलाका सख्त और/या गरम महसूस हो सकता है। काली या सांवली चमड़ी वाले लोगों को यह इलाका चमकीला या औसत से ज्यादा गहरा प्रतीत होगा। इस चरण में ऊतकों में टूट दुरुस्त की जा सकती है; जैसे ही दाब हटाया जाएगा त्वचार सामान्य स्थिति में लौट जाएगी।

देखरेख- दाब के किसी भी स्रोत को हटाएं। प्रभावित क्षेत्र को गरम पानी से साफ करें और सुखा रखें। जब तक इसका रंग बदला रहे, इससे किसी तरह का भी दाब हटा कर त्वचा को पूर्ण बहाली का मौका दें। अगर प्रेशर सोर बैठने वाले इलाके में हो, व्यक्ति को जहां तक संभव हो बैठने से परहेज करना चाहिए। कारण जानने के लिए बैठने और बिस्तर समर्थन प्रणाली का पूरा मुआइना करें। ढेर सारा तरल लें, आराम करें और संतुलित एवं पोषक आहार लें। त्वचा को साफ और सूखा रखना नहीं भूलें। और अपनी त्वचा का बार-बार मुआइना करें। अगर कुछ दिनों में प्रेशर सोर ठीक नहीं हुआ या और बिगड़ गया तो अपने डाक्टर से संपर्क करें।

चरण 2- प्रेशर सोर ने कोई फफोला या खुरंड बना दिया है और/या त्वचा की सतह में उसका मुंह खुलना शुरू हो गया हो। संभवत- कुछ मवाद भी निकलने लगा हो। इसका मतलब है कि उसके नीचे के ऊतक के मरने की शुरूआत हो गई है। अगतर तुरंत दाब नहीं हटाया गया और त्वचा क्षेत्र पर ध्यान नहीं दिया गया तो प्रेशर सोर बहुत

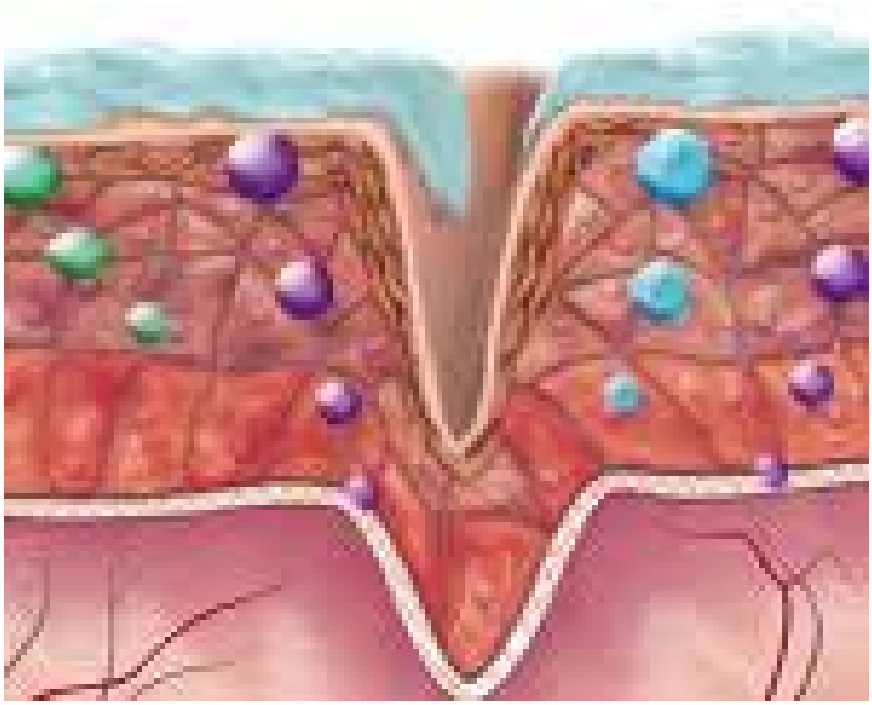

तेजी के साथ एक खतरनाक स्तर तक बढ़ जाएगा जहां संक्रमण हड्डी पर हमला कर सकता है और आपके स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है।

देखरेख- क्षेत्र से तमाम दाब हटा दें। अपने डाक्टर से संपर्क करें। घाव को साफ और शुष्क रखें और त्वचा का बार-बार मुआइना करें। स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के निर्देशों का पालन करें जिसमें घाव भरने के लिए विशेष रूप से प्रभावित क्षेत्र को नमक घोल से साफ करने और विशेष पट्टी बांधने को कहा जाता है।

चरण 3- प्रेशर सोर के इस चरण तक मृत ऊतक में छिद्र या अल्सर बन जाता है। क्षत ऊतक सबक्युटेनस या त्वचा ऊतक के तीसरे तह तक पहुंच जाता है और उसके बाद हड्डी तक भी पहुंच सकता है।

देखरेख- चरण 1 और 2 के निर्देशों का ही पालन करें। आम तौर पर इस चरण में विशेषज्ञता वाले इलाज की जरूरत पड़ती है। इसमें अकसर डिब्राइडमेंट या आपरेशन से मृत ऊतकों को निकालने और घाव से बाहरी पदार्थ हटाने की आवश्यकता पड़ती है। इसके बाद की देखरेख में विशेष पैकिंग एजेंट, मेडिकेटेड क्रीम, एंटी बायटिक्स दवाएं और दाब हटाने के लिए और भी विशेष प्रकार के बैठने या सोन की सतह शामिल हैं।

चरण 4- यह प्रेशर सोर का सबसे खराब चरण है। नुकसान मांसपेशियों तक और शायद हड्डियों तक भी पहुंच चुका है। ड्रेनेज लगभग हमेशा उपस्थित रहता है। गंभीर मामलों में अत्यधिक मवाद हो सकता है।

देखरेख- अगर आपको बुखार है, देखें कि हरा या पीला मवाद तो नहीं निकल रहा है और घाव गरम है। आपको संक्रमण हो सकता है। जब भी किसी प्रेशर सोर में कोई संक्रमण बनता है, इर्दगिर्द के तमाम ऊतकों के भी संक्रमित होने का खतरा हो जाता है। अगर

ऐसा होता है तो सेप्सिस (रक्त में जहर फैलने का एक प्रकार) की आशंका हो जाती है। इलाज नहीं होने पर यह मारक हो जाता है।

चौथे चरण के त्वचा सोर का मतलब कई हफ्ते तक अस्पताल में इलाज है जिसके बाद हफ्तों तक बिस्तर पर आराम करना होता है। अकसर उन्नत चरण में प्रेशर सोर में आपरेशन या त्वचा के प्रतिरोपण (अकसर पैर से त्वचा ली जाती है और प्रेशर सोर के इलाके में उसे सी दिया जाता है) की आवश्यकता पड़ती है। इन आपरेशनों में 100,000 डालर या उससे ज्यादे का खर्च आ सकता है रोजमर्रा के जीवन से लंबे समय तक अलग रहना पड़ सकता है।

डेक्यट्रानोमर मनके या नए हाइड्रोफिलिक पोलीमर के चलते पुराने अल्सर में आपरेशन से पूरी तरह बचा जा सकता है। ये बिना आपरेशन के जख्म भरने की रफ्तार तेज करते हैं। वास्तव में, हाइड्रोफिलिक जेल जैसे ढेर सारे टॉपिकल एजेंट और हाइड्रोकॉलाइड ड्रेसिंग जैसी नई ड्रेसिंग उपलब्ध होती जा रही हैं जो प्रेशर सोर के ठीक होने की प्रक्रिया में मदद और उसकी गति तेज करती हैं।

इसके अतिरिक्त, कुछ नए तरह के इलाज हैं जिनका व्यापक उपयोग नहीं हो रहा है, लेकिन जिन्हें बहुत अच्छी सफलता मिली है। उनमें से एक शून्यता की मदद से बंद करने का उपचार कहा जाता है। वायु-रोधी या एयर टाइट फोम ड्रेसिंग और वैकुअम पंप का उपयोग किया जाता है जो घाव के इर्दगिर्द नकारात्मक दाब सृजित करता है। यह रक्त प्रवाह को बढ़ाता है और घाव को भरने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक अन्य संभावना है जिसे इलेक्ट्रोथेरापी कहते हैं। इस तरीके में, बिजली की एक बहुत ही सुक्षम धारा का प्रयोग घाव भरने की गति तेज करने में किया जाता है। चूंकि यह प्रेशर सोर का नया तरीका है, आपको सही उपकरणों वाले प्रशिक्षित लोगों की खोज करनी पड़ सकती है।

बुनियादी इलाज

दाब राहत ,घाव को सैलाइन घोल से सींचना वजन को बार बार बदलना,विशेष सीट कुशन औरबिस्तर ,ऊतक हटाने के लिए उपयुक्त व्हर्लपूल,टॉपिकल एंटीबायोटिक मलहम,जेल-फोम पट्टियां,हाइड्रोकॉलोयड पट्टियां ,एंटीबायोटिक,डिब्रीडमेंट ,त्वचा प्रतिरोपण ,आपरेशन से सफाई वैक असिस्टेड क्लोजर थेरापी, इलेक्ट्रोथेरापी

यह ध्यान देना अहम है कि त्वचा के नियमित मुआइने और सही उपकरण से त्वचा समस्याओं से लगभग बिल्कुल बचा जा सकता है। विशेष बिस्तर, तोशक, या सीट कुशन समेत दाब हटाने में मदद करने वाली विविध सतहें बिस्तर पर या किसी कुर्सी पर आपके शरीर को समर्थन देने के लिए उपलब्ध हैं।

बचाव

बचाव की पहली लाइन अपनी त्वचा की देखरेख के प्रति जवाबदेह होना है। प्रेशर सोर के खतरों वाले लोगों को त्वाचा के मुआइना का तरीका तैयार करना चाहिए जिसपर रोजाना अमल करना चाहिए। सीमित क्षमता वाले या बिस्तर तक सीमित लोगों को केयरटेकर रोजाना मुआइना में सहायता करें; व्हीलचेयर पर रहने वाले बच्चों के अभिभावकों को उनकी त्वचा का मुआइना करना चाहिए।

नियमित रूप से समर्थन सतहों का मुआइना करना भी यह सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है कि वे अच्छी हालत में हैं। इसका मतलब अपने व्हीलचेयर, टायलेट, ऑटो-ट्रांसपोर्ट की सीट और ऐसी तमाम सीट कुशन का मुआइना करना जिसे दिन में आप इस्तेमाल करते हों। बाजार की सीट प्रणालियों और कुशन के बारे में जानकारी पाने के लिए किसी सीटिंग विशेषज्ञ से बात करें। इसके अतिरिक्त, दाब से मुक्ति दिलाने वाली सोने की सतहें हैं जो प्रेशर सोर से वजन हटा देती हैं।

प्रेशर सोर को जटिलताओं से बचाने के लिए भरपूर विटामिन और खणिज वाले भोजन लेना आवश्यक है। स्वस्थ भोजन त्वचा में दिखेगा; स्वस्थ त्वचा रोजाना पेश आने वाले दाबों और तनावों का ज्यादा अच्छे ढंग से सामना कर सकती हैं। साथ ही, अगर कोई त्वचा क्षति हुई है, रक्त में पोषक तत्वों की स्वस्थ आपूर्ति बहुत तेजी से ठीक करेगी। प्रोटीन और एमिनो एसिड शरीर को त्वचा, मांसपेशियां और हड्डियों को मजबूत रखने में मदद करते हैं। और विटामिन सी तथा ई जैसे विटामिन मरम्मत में त्वचा की मदद करते हैं।

व्हीलचेयर वाले लोगों को नियमित रूप से मुद्रा बदलने की जरूरत पड़ती है। अगर कोई शरीर के ऊपरी हिस्से का उपयोग करता है तो उसे अपने शरीर को कुछ सेकंड के लिए व्हीलचेयर की सीट से उठाना चाहिए। यह बैठने की जगह से लगी त्वचा को दाब से कुछ देर के लिए छुटकारा मिल जाता है जिसकी उसको बहुत जरूरत होती है।

जिन लोगों के शरीर के ऊपरी हिस्से में गतिशीलता नहीं होती है, उन्हें सहायता की जरूरत पड़ती है। कुछ लोगों को व्हीलचेयर में टिल्ट का उपयोग करने की जरूरत पड़ सकती है (पूरी सीट टिल्ट कर दी जाती है लेकिन बैठने की मुद्रा वही बनी रहती है)।

बिस्तर में पड़े व्यक्ति को हर एक या दो घंटे के बाद हिलाना डुलाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त ध्यान देने की जरूरत है कि व्यक्ति को हिलाने-डुलाने में उसकी त्वचा में खिंचाव नहीं आए।

असरदार होते हैं मंत्र

टी.सी.चन्दर

मन्त्रों के प्रभाव को लेकर देश-विदेश में निरन्तर शोध भी होते रहे हैं। डॉ. लिवर लिजेरिया एवं अन्य का मानना है कि ह्रीं, ?, हरि आदि के उच्चारण का शरीर के विभिन्न भागों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डॉ. लिजेरिया ने अपने 17 साल के शोध में पाया कि हरि के साथ ? को जोड़कर उच्चारण किया जाए तो इसका सकारात्मक प्रभाव शरीर की पाचों ज्ञानेन्द्रियों पर पड़ता है। मंत्रों के प्रयोगों और उनके प्रभावों के अनगिनत उदाहरण हमारे ग्रन्थों में मौजूद हैं। देखने-पढ़ने में मन्त्रों के शब्दों का कोई खास अर्थ नहीं मालूम पड़ता। पर मन्त्र हमारी सोई शक्ति को जगाने और संकल्प को वातावरण में विसरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मन्त्रों का अति सूक्ष्म पर बड़ा प्रभाव होता है। मन्त्र विज्ञान एक अनूठा विज्ञान है जिसका उचित लाभ मिलना इसके ज्ञाता गुरु और उपयुक्त साधक पर निर्भर करता है और तभी मन्त्र की महिमा सामने आती है।

मन्त्रों के सही उच्चारण, शब्दों के उचित संयोजन, साधक की श्रद्धा, जप, एकाग्रता, सदाचार आदि का मन्त्र जाप के फलदायी प्रभावों को प्रभावित करते हैं। यदि साधक की साधना में किसी प्रकार की कमी है तो अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। मन्त्रोच्चार में शब्दों का सही संयोजन और अक्षरों तथा मात्राओं का सही उच्चारण होना चाहिए। संस्कृत में ह्रस्व और दीर्घ की गलती भी महत्व रखती है। साधक को पूर्ण श्रद्धा, संयम और एकाग्रता के साथ अपना कार्य करना चाहिए अन्यथा मन्त्र का प्रभाव बदल जाएगा। मन्त्रों का प्रभाव ब्रह्माण्डव्यापी होता है। रामचरिमानस के रचयिता तुलसीदास के अनुसार-

मन्त्र जाप मम दृढ़ विस्वासा।
पंचम भजन सो बेद प्रकासा।।

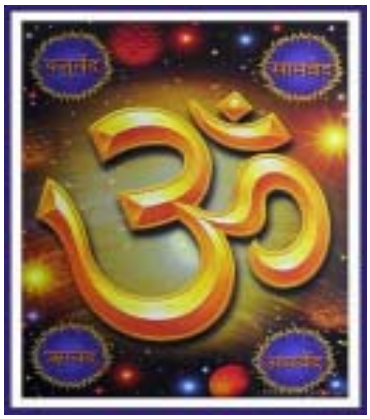

मन्त्रों के प्रभाव को लेकर देश-विदेश में निरन्तर शोध भी होते रहे हैं। डॉ. लिवर लिजेरिया एवं अन्य का मानना है कि ह्रीं, ?, हरि आदि के उच्चारण का शरीर के विभिन्न भागों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डॉ. लिजेरिया ने अपने 17 साल के शोध में पाया कि हरि के साथ ? को जोड़कर उच्चारण किया जाए तो इसका सकारात्मक प्रभाव शरीर की पाचों ज्ञानेन्द्रियों पर पड़ता है। यहां तक कि नि:सन्तान दम्पति को सन्तान की प्राप्ति हो जाती है। यह आज के शोध के परिणाम हैं पर हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों साल पहले इस बात को जानकर शास्त्रों में लिख दिया था। उनके द्वारा मन्त्रों के प्रभाव को लेकर की गयी खोज में उन्हौंने स्थूल शरीर को ही नहीं अपितु समूचे विश्व को आधार बनाया था।

निराकार और साकार को लेकर भी विभिन्न धर्मानुयायियों में चर्चा होती रही है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि आकृति और शब्द का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। किसी सम्बोधन या शब्द के साथ आकृति का सम्बन्ध होना अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी होता है। जैसे हाथी शब्द दो अक्षरों और दो मात्राओं के मेल से बना है, इसके साथ उस शाकाहारी पशु की विशालकाय आकृति का सम्बन्ध है जो जंगल में रहता है और बुद्धिमान होता है। हाथी शब्द के उच्चारण के साथ ही उसकी छवि मानसपटल पर आ जाती है।

ऋषि-मुनियों का मानना था कि हमारा भौतिक शरीर अन्नमय है, इसके भीतर प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय चार शरीर और भी हैं। यदि शरीर से प्राणमय निकल जाए तो अन्नमय शरीर निर्जीव हो जाएगा। प्राणमय शरीर का संचालन भी मनोमय शरीर करता है। मन के संकल्प-विकल्प के आधार पर ही प्राणमय शरीर क्रियाशील रहता है और मनोमय शरीर के भीतर विज्ञानमय शरीर होता है। पांचों ज्ञानेन्द्रियां और बुद्धि को विज्ञानमय शरीर कहते हैं। बुद्धि के द्वारा किये गये निर्णय के अनुसार शारीरिक अंग सक्रिय होकर सम्बन्धित कार्य को पूरा करते हैं। इस विज्ञानमय शरीर से भी अधिक गहराई में आनन्दमय शरीर होता है। हम जो भी प्रयास करते हैं वह आनन्द के लिए करते हैं, परमात्मा आनन्दस्वरूप होता है और इस कोष के निकट स्थित कोष को आनन्दमय कोष कहते हैं। इस प्रकार हम जिस आनन्द का अनुभव करते हैं वह परमात्मा का आनन्द है। वह आनन्दस्वरूप है और मन्त्र उस परमात्मा तक के पांचों कोषों को प्रभावित करता है। ईश्वर नाम के जप का इन कोषों, समस्त नाड़ियों और सातों केन्द्रों में सात्विक प्रभाव पड़ता है।

लक्ष्मी प्राप्ति की सिद्ध तंत्र विधियाँ

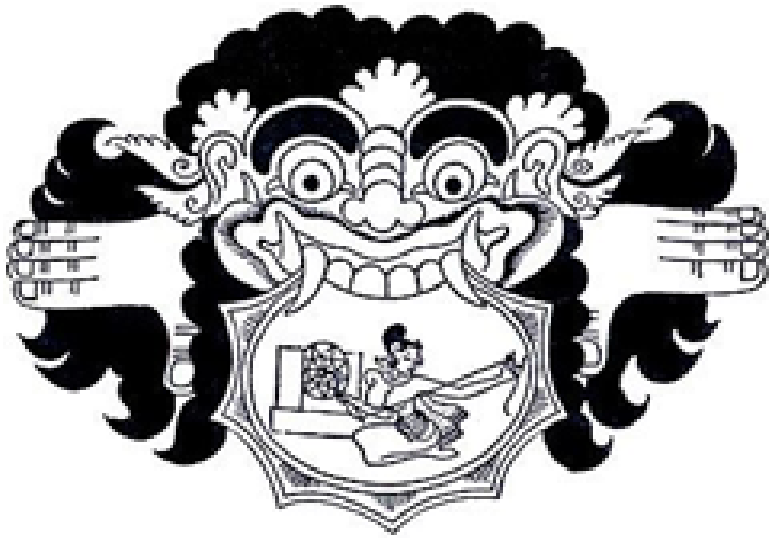

तंत्र शास्त्र भारत की एक प्राचीन विद्या है। विश्वास है कि तंत्र ग्रंथ भगवान शिव के मुख से आविर्भूत हुए हैं। उनको पवित्र और प्रामाणिक माना गया है। हमने यहाँ तंत्र द्वारा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए विभिन्न सिद्ध तंत्र विधियाँ उपलब्ध कराई गई हैं।

हरिद्रा तंत्र

हरिद्रा का प्रचलित नाम हल्दी है। हरिद्रा (हल्दी) कई प्रकार की होती है। एक हल्दी खाने के काम में नहीं आती पर चोट लगने और दूसरे औषधीय गुणों में उसे महत्व दिया जाता है। ये रंग में सभी पीली होती है और पवित्रता का तत्व सभी में होता है। हमारे दैनिक प्रयोग में आने वाली हल्दी पीली (बसंती) और लाल (नारंगी) दो प्रकार की होती है। यद्यपि वह वर्ण भेद बहुत सूक्ष्म होता है, सामान्य दृष्टि में वह पीली ही दिख पड़ती है। इसी में कोई-कोई गाँठ काले रंग की निकल आती है। हालाँकि ऐसा कदाचित ही कभी होता है, किन्तु यदि किसी को यह काली हल्दी की गाँठ प्राप्त हो जाए तो समझना चाहिए कि लक्ष्मी प्राप्ति का एक श्रेष्ठ दैवी साधन मिल गया है।

यह काली हल्दी (गहरे कत्थई रंग की) देखने में जितनी कुरूप, अनाकर्षक और अनुपयोगी प्रतीत होती है, वस्तुत: वह उतनी ही अधिक मूल्यवान, दुर्लभ और दिव्य गुणयुक्त होती है। यदि किसी को ऐसी हल्दी प्राप्त हो जाए तो उसे घर लाकर दैनिक पूजा के स्थान पर रख दें। यह जहाँ भी होती है, सहज ही वहाँ श्री-समृद्धि का आगमन होने लगता है। उसे नए कपड़े में अक्षत और चाँदी के टुकड़े अथवा किसी सिक्के के साथ रखकर गाँठ बाँध दें और धूप-दीप से पूजा करके गल्ले या बक्से में रख दें तो आश्चर्यजनक अर्थ लाभ होने लगता है। व्यापारी वर्ग इसे गल्ले (पैसों की थैली या तिजोरी) में रखते हैं।

लक्ष्मी साधना के अंतर्गत इस हरिद्रा तंत्र की विधि यह है कि किसी भी अष्टमी से इसकी पूजा आरंभ करें। सर्वप्रथम प्रात: उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो, ठीक सूर्योदय के समय पूर्व की ओर मुख करके आसन पर बैठें। तत्पश्चात? इस हल्दी की गाँठ को धूप-दीप देकर नमस्कार करें। यह क्रिया ठीक सूर्योदय के समय की जाती है, परन्तु स्थान ऐसा हो कि साधक सूर्यनारायण के दर्शन कर सके। उदय होते हुए सूर्यनारायण को नमस्कार करके, सामने आसन पर प्रतिष्ठित हरिद्रा खण्ड (हल्दी की गाँठ) को नमस्कार करते हुए माला से 108 बार इस मंत्र का जाप करना चाहिए- ? ह्रीं सूर्याय नम:।

इस विधि से प्रतिदिन इसकी पूजा की जाए तो बहुत लाभ होता है। अष्टमी के दिन उपवास रखकर, विशेष रूप से पूजा करनी चाहिए। उस दिन व्रत रखने, फलाहार करने, यथाशक्ति कुछ दान-पुण्य करने से इसका विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

हरिद्रा तंत्र की साधना में यह तथ्य स्मरण रखना चाहिए कि इसके साधक के लिए मूली, गाजर और जमींकन्द (सूरन) का प्रयोग वर्जित है। अत: खाद्य रूप में इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

नैवेद्य तंत्र

यह एक अति सरल तंत्र प्रयोग है। इसकी साधना इस प्रकार की जाती है कि शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन सायंकाल चंद्रमा को धूप-दीप देकर श्वेत पदार्थ का नैवेद्य अर्पित करें। नैवेद्य के पास ही दीपक जलाकर रख दें। यह क्रिया ऐसे स्थान पर की जानी चाहिए, जहां चंद्रमा की किरणें आ रही हों। झरोखा, जीना अथवा छत पर जहां चांदनी हो, वहीं नैवेद्य तथा दीपक रखें, अंधेरे में अथवा चंद्रमा के परोक्ष स्थान पर रखने से साधना निष्फल हो जाती है। नियमानुसार की गई यह साधना भी व्यवसायी, उद्यमी, राज्य कर्मचारी वर्ग को बहुत लाभप्रद सिद्ध होती है।

www.publicpointnews.com

अश्व-जिह्वा तंत्र

घोड़ी की शारीरिक संरचना में कुछ ऐसा वैचित्र्य है कि प्रसव के समय उसकी जीभ का अग्र भाग अपने आप गिर जाता है। यह भी दुर्लभ वस्तु है, कारण कि एक तो घोड़े-घोड़ी पालने का रिवाज समाप्त हो गया है, दूसरे जहां कहीं भी घोड़ी हो तो उसके प्रसव के समय वहां उपस्थित रहने का संयोग ही नहीं बन पाता। फिर भी प्रयास से सब कुछ संभव है।

मार्जारी की भांति घोड़ी की भी लगातार देखभाल की जाए तो प्रसव के समय उसके मुख से गिरी हुई जीभ प्राप्त हो जाती है। विचित्र बात यह है कि घोड़ी के मुख से जीभ गिरने के बाद उसे फिर नई जीभ आ जाती है। अस्तु बिल्ली की नाल की तरह उसे भी सुखाकर और हल्दी लगाकर रख देना चाहिए। यह जीभ बहुत समृद्धिदायक मानी गई है।

किसी शुभ मुहूर्त में उस जीभ को धूप-दीप देकर लक्ष्मीजी को ध्यान करते हुए बटुए में, भण्डार में, कोष में अथवा जेवरों की पिटारी में रख देना चाहिए। उसके प्रभाव से घर में धन-धान्य की वृद्धि होने लगती है।

अडार तंत्र

दारिद्रय निवारण और लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अडार तंत्र की साधना करनी चाहिए। स्मरण रहे कि यह साधना मुख्यत: स्त्रियों (गृहिणियों) के द्वारा की जाती है। जिस घर में स्त्री न हो, वहां पुरुष भी यह साधना कर सकते हैं। अडार तंत्र का परिणाम थोड़े ही दिनों में अपना प्रभाव दिखाने लगता है।

सायंकाल घर में जितनी भी लालटेन, चिमनी, कुप्पी, दीपक, बल्ब, ट्यूबलाइट, कंदील आदि हों, उन्हें थोड़ी देर के लिए जला दें। कम से कम दो-तीन दीपक सभी घरों में रहते हैं, उन्हें जलाकर घर में इस तरह से रखें कि सर्वत्र प्रकाश फैल जाए, अंधेरा न रहने पाए। यथास्थान ऐसी प्रकाश व्यवस्था 10-15 मिनट अथवा 2-3 घंटे तक के लिए की जा सकती है। बाद में अन्य प्रकाश यंत्रों को बुझाकर एक मुख्य प्रकाश यंत्र को रातभर जला रहने दें। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि दीपक को कभी फूंक से न बुझाएं। मुख से फूंक मारकर दीपक बुझाना निषिद्ध है। किसी वस्त्र या हाथ के माध्यम से हवा का झोंका मारकर ही उसे बुझाना चाहिए। इस क्रम में यह भी अनिवार्य नियम है कि दीपक से कुछ जलाएं भी नहीं। बहुधा स्त्रियां दीपक से ही चूल्हा, तपता आदि जलाती हैं। यह बहुत ही अमंगलकारी होता है। इस क्रिया से दरिद्रता, ऋण, अभाव बढ़कर श्री-सम्पत्ति की हानि होती है। अत: दीपक से भूलकर भी कोई अग्नि प्रयोग न करें। उसके लिए अलग से माचिस या अंगारों का प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक शनिवार और अमावस्या के दिन घर का कूड़ा-कचरा, रद्दी सामान बाहर फेंकना चाहिए, फर्श की धुलाई (लिपाई-पुताई) करना, सायं पूरे घर को प्रकाशित करना तथा समस्त वस्तुओं को झाड़-पोंछकर यथाक्रम रखना यही अडार तंत्र है।

नोट - तांत्रिक साधना का मूल उद्देश्य सिद्धि से साक्षात्कार करना है। यह एक अत्यंत ही रहस्यमय शास्त्र है। चूंकि इस शास्त्र की वैधता विवादित है अत: हमारे द्वारा दी जा रही सामग्री के आधार पर किसी भी प्रकार के प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तांत्रिक की सलाह अवश्य लें। अन्यथा किसी भी प्रकार के लाभ-हानि की जिम्मेदारी आपकी होगी।

कहानी

एक और द्रोपदी

-विकेश निझावन

कहानियां अपने युग और परिवेश की पहचान होती हैं। ऐसी कहानियां जो आपको कुछ सोचने को मजबूर करें, जो आपकी अंतरात्मा को झकझोर दें, जो आपको अपने वातावरण के रंग से सराबोर कर दें, ऐसी कहानियां किसे अच्छी नहीं लगती ? ये हमारी भावनाओं और दैनिक जीवन का सच्चा इतिहास होती हैं। ऐसा इतिहास जिसमें केवल पात्र और परिचय बदल जाते हैं। यह कहानी चाहे भोपाल की हो या लंदन की या इलाहाबाद की या फिर न्यूयार्क की। वही कहानी सर्वप्रिय है जो आपके दिल को छू जाती है । पब्लिकप्वाइन्ट के कहानी स्तंभ के लिये हिन्दी के सभी पाठकों, लेखकों और पढने लिखने के शौकीन लोगों से मौलिक कहानियां आमंत्रित हैं। यहा प्रस्तुत हैं विकेश निझावन की एक कहानी एक और द्रोपदी

जीजाजी अपने बॉस के साथ उनकी इर्म्पोटेड इम्पाला में बैठ कर केवल दो घण्टे के लिए आए थे। देहरादून जा रहे थे गाडी ज़रा इधर को घुमा ली ।बहाना था कि बहुत दिन से हमारी कोई चिट्ठी नहीं गई थी और वे काफी चिन्तित हो आए थे। यह बात दीदी कह बैठती तो ज्यादा अजीब न लगता। जीजाजी के मुंह से सुनकर तो जैसे अपने ही मुंह का जायका बिगड गया।

अम्मा तो इसी बात पर निहाल हो आई कि जमाई बाबू हमारा हालचाल पूछने आए हैं। जीजाजी के सर पर हाथ फेरती अम्मा उन्हें भीतर तक ले आई थी- आओ-आओ भीतर आओ न। सब कुछ दरवाजे पर खडे ही कह डालोगे। ये तो चबर-चबर सवाल-जवाब ही किए जाएगी।

छोटी साली है अम्मा! एक नहीं दस सवाल भी करेगी तो जवाब तो देना ही पडेगा। एकाएक वे पीछे चले आ रहे अपने बॉस की ओर मुडे थे- आइए राव साहब! मीट माई सिस्टर-इन-ला सुनीता।

-हाय! उन्होंने कहा और प्रत्युत्तर में मैंने अपने दोनो हाथ जोड दिए। यों अभी तक इस अदने से आदमी को खींसे निपोरते देख मैंने अन्दाजा लगा लिया था कि जीजाजी का कोई बॉस ही होगा। निश्चय ही जीजाजी की तरक्की के दिन नजदीक आने वाले लगते हैं। तभी तो गाडी देहरादून जाती हुई इधर को घुमा ली गई। बॉस को आकर्षित करने के लिए ससुर की आठ कनॉल की कोठी और उसमें रहने वाली एक खूबसूरत जवान लडकी क्या कम है।

-सुनीता पहले कुछ ठण्डा दे देना बाद में चाय लेंगे। हां! राव साहब चाय में शक्कर कम लेते हैं। मन हुआ पूछ लूं डायबिटीज के मरीज हैं क्या। पर मन ही मन खिसियाकर रह गई थी। जीजाजी सभी कमरे पार करते हुए राव साहब को पीछे दालान में ले गए। मैं किचन की ओर मुडी तो अम्मा ट्रे में दो गिलास पानी लिए खडी थी- ये पानी ले जा मैं चाय रखती हूं।

-ओह अम्मा तुम भी अजीब हो। ठण्डे का मतलब नहीं समझती! अम्मा के हाथों से ट्रे को लगभग छीनते हुए मैंने दोने गिलासों का पानी जग में पलटा और चीनी का बाऊल उठाते हुए बोली- अम्मा बाहर से दो निब्बू तोड लाइये।

चीनी हिलाते हुए ध्यान आया था राव साहब शूगर के मरीज नहीं हो सकते। वरना जीजा ठण्डे के लिए भी रोक देते। निब्बू-पानी लेकर बाहर गई तो जीजाजी अपना पुराना भाषण दोहरा रहे थे- पापा ने यह कोठी पन्द्रह साल पहले बनवाई थी। उस वक्त इस कोठी पर पांच लाख लगा था। अब तो इसकी कीमत पचास लाख से कम क्या होगी। जमीन के भाव ही देख रहे हैं न चार गुना हो गये हैं। मुझे देख कर मेरी तारीफ करना भूलना जीजाजी के लिए सबसे बडी चूक जाने वाली बात थी।

-अपनी सुनीता को संगीत में भी बराबर रूचि है। कुर्सी जरा आगे को सरकाते हुए बोले- एम ए भी तो संगीत में किया है।

अब मुझसे गाने की फरमाईश कर बैठेंगे। सुनीता तो चाबी की गुडिया है जब जी चाहा उसे किसी के सामने बिठा कर उसका गाना सुन लिया। नहीं सुनाऊंगी तो दीदी छोडेंगी मुझे।

दीदी और जीजा जी की चालों की पहले कहां खबर थी मुझे। पहली बार इनके कुलीग मिस्टर रंजन आए थे तो मैंने गाने से साफ इन्कार कर दिया था। और उसके लिए मुझे कितने खिताब दे दिए गये थे । घमण्डी अभिमानी बद्तमीज! दीदी ने यह भी स्पष्ट लिखा था कि रंजन जीजाजी के बॉस का भतीजा है । उसी के दम पर जीजाजी के प्रमोशन्ज के चांसिज हैं। पत्र पढते ही मेरी रूलायी फूट पडी थी ।बडा गुस्सा आया था। बॉस के भतीजे को पटाने के लिए मेरे गीत-संगीत का सहारा लिया जा रहा है। पन्द्रह दिन बाद दीदी खुद आ गई थीं और वही

बातें फिर से दोहरायी गयीं। लेकिन अब के मैं रोई नहीं थी। बस इतना ही कहा था- दीदी पापा के बाद संगीत मेरा सुख का नहीं दुख का का साथी रह गया है।

पापा के होते आए दिन छोटे-बडे समारोहों में गीत-संगीत के कार्यकम दिया करती थी और ढेरों इनाम जीत कर लाती। लेकिन पापा के बाद स्टेज का नाम सुनते ही मैं ठण्डी पड जाती। बस कभी-कभार रात क वक्त जब बहुत मन होता तानपूरा लिए पीछे वाले बरामदे में जा बैठती। एक-दो भजन ही रह गए थे अब तो जो बार-बार दोहराया करती। अम्मा को भी शायद यही अच्छा लगता था। तानपूरा उठाकर बाहर जाने को होती तो अम्मा प्राय: कह देतीं- वो सुन दे सुख के सब साथी दुख में न कोये।

-सुनीता अपना तानपूरा तो ले आओ। जीजाजी ने कहा तो मैं यंत्रवत-सी उठ खडी हुई। जरा भी न-नुकुर नहीं कर पायी। रंजन तो बॉस का भतीजा था अब बॉस खुद सामने हैं। उन्हें प्रसन्न करने में जरा भी कसर रह गई तो दीदी मुझे कच्चा न चबा जाएंगी।

-ले आ न शरमा क्यौं रही है। भीतर से आती अम्मा ने कहा तो मैं बुरी तरह से कुढ गई। क्या मैं इन्कार कर रही थी जो अम्मा के कहने की जरूरत आन पडी। कहीं बेटी के जरा भी इन्कार न करने पर बेटी की बेशर्मी पर पर्दा तो नहीं डाल रहीं।

तानपूरा उठाते हुए एक बार तो मन में आया कि इसकी खूंटियां घुमा कर तानपूरे के सारे तार ही तोड ड़ालूं। लेकिन इससे क्या मुक्ति मिल जाएगी मुझे? जीजाजी कहेंगे बिना तानपूरे के ही सुना दे। तुम्हारी आवाज में तो संगीत भी साथ ही मिला हुआ है। इतनी बढाई तो किसी ने संगीत-सम्राट तानसेन की भी न की होगी जितनी वे मेरी कर डालते हैं।

अरी चाय ठहर के पिएंगे पहले तानपूरा ले आ। अम्मा की आवाज से मैं एकबार फिर तिलमिला गई। कभी-कभी अम्मा से बहुत विद्रोह करने को जी चाहता है लेकिन अम्मा बेचारी भी क्या करे। पापा के बाद तो वे बावली सी हो आई हैं। जो कोई जैसा कहता है वैसा करती चली जाती हैं।

तानपूरा लेकर लौटी तो अम्मा और जीजाजी का चेहरा पूरी तरह से खिल गया। सच कहं तो उन्हें देख मैं इनके प्रति सहानुभूति से भर आयी थी। ये महाशय भजन या क्लासिकी क्या पसन्द करेंगे। तभी मीर की एक गजल मस्तिष्क में उभरी और मैंने उसे ही छेड दिया। अम्मा मेरी आधी गजल के बीच में से ही उठ गई थीं। एक तो गजल में उनकी कोई रूचि नहीं थी दूसरे जमाई बाबू के लिए चाय-पानी का इन्तजाम भी तो करना था।

- वाह! भई बहुत बढिया! अन्तिम पंक्ति के उत्तरार्द्व में ही उनकी दाद शुरू हो गई थी। लेकिन मुझे इसकी जरूरत नहीं थी। तानपूरा वहीं छोड एक झटके से मैं भीतर चली आई।

अम्मा केतली में चाय उंडेल रही थीं। बिस्किट नमकीन और पिन्नियां अम्मा ने प्लेटों में लगा दी थीं।

-कुछ और नहीं मंगवाना? अम्मा के लिए ये तीन चीजे रख देना कम नहीं था लेकिन मैं जानती थी अम्मा भी कहीं दीदी से डरती हैं। बॉस की आवभागत में कुछ कमी रह गई तो अम्मा को भी सुननी पड सकती हैं।

-जीजाजी की प्रिय पिन्नियां तुमने रख दी हैं और क्या चाहिये उन्हें। खाने की तीनों प्लेटें ट्रे में रख मैं बाहर ले आई। वही हुआ जो मैं सोचती चली जा रही थी। ट्रे पर नजर पडते ही अम्मा की बनाई पिन्नियों की तारीफ शुरू हो गई। चाय का आखिरी घूंट भरते हुए जीजाजी बोले- सुनीता राव साहब को जरा अपना बगीचा तो दिखाओ।

एक बाहर के व्यक्ति को हमारे बगीचे में क्या रूचि हो सकती है नहीं समझ पा रही थी मैं। पापा का लगाया बारह मासी नीबू, बादाम, लीची, आडू क़े बारे में जीजाजी बखान करते चले गए थे और राव साहब जीजाजी के हर वाक्य के बाद मेरी ओर देख कर मुस्करा पडते। सम्भवत: वे इन चीजों की तारीफ में हामी भर रहे हों लेकिन मेरे भीतर एक टीस बराबर उठ रही थी। जितना इन पेड-पौधों के बारे में सोचती हूं पापा बहुत याद आने लगते हैं।

कहां-कहां से किस-किस नर्सरी से पापा ये पेड पौधे जुटाकर लाए थे। पाईन-ट्री के लिए पापा ने शिमला का स्पेशल टूर बनवाया था। मैदानी इलाके में पहाडी वृक्ष लोग-बाग देख कर हैरान होते।

कभी गर्मियों में आइये राव साहब तब आमों की बहार देखिएगा। तो ये लोग गर्मियों में भी आने का सोच रहे हैं। जीजाजी दीदी तो आएं लेकिन इस आदमी को साथ ले आने का अर्थ?

हमारी और इस घर की एक-एक चीज क़ी तारीफ करने के बाद जीजाजी राव साहब की ले बैठे थे- राव साहब को फोटोग्राफी का बहुत शौक है। पिछले दिनों तुम्हारी दीदी के ऐसे फोटोज लिए कि देखते ही बनते थे। शौक तो तुम्हें भी है लेकिन राव साहब के खींचे फोटोज ज़रूर देखना।

अगर ऐसा ही था तो राव साहब के खिंचे फोटोग्राफ्स साथ क्यों नहीं ले आए।

-राव साहब अपना कैमरा तो लाइये। कुछ फोटोज यहां भी हो जाएं।

अजीब लोग हैं ये! आते हुए तो कहा था केवल दो ही घण्टे रूक पाएंगे। अब तीन घण्टे से ऊपर हो चले हैं और जनाब अभी फोटोज खींचने बैठेंगे।

राव साहब तुरन्त अपना इम्पोर्टेड कैमरा उठा लाए थे। लेकिन बडा बुरा हुआ बेचारों के साथ। कैमरे का कोई पुर्जा रास्ते में ही गिर गया था और सही फोटो आने के कोई आसार नहीं रह गए थे। बडी सोच में पड गए थे बेचारे। त्-त्-त! मन हुआ अफसोस जाहिर कर दूं। पर फिस्स-सी हंसी मेरे होंठों के बीच ही दब कर रह गई। अम्मा मेरी ओर देख कर आंखें न तरेरतीं तो शायद यह हंसी अपने पूरे उफान के साथ बाहर आ जाती।

-सुनीता! अपना कैमरा ही ला दे।
अम्मा मुझे पूरी तरह से जला देना चाहती है। अच्छा-भला जानती है मैं उस कैमरे को किसी को हाथ नहीं लगाने देती। लेकिन इस वक्त इन्कार कर देना क्या संभव था? इस कैमरे में मैं सारी दुनिया कैद कर लेना चाहती थी। इस घर का ऐसा कौन सा कोना होगा जिसका फोटो मैंने नहीं खींचा। अम्मा पापा के तो ढेरों फोटो लिए होंगे। जब फोटो खींचने लगती थी तब किसी को कहां पता चलने देती थी। बरामदे में रोटियां बेलती अम्मा -क्लिक! छत पर बाल सुखाती अम्मा-क्लिक! लॉन में आराम कुर्सी पर कुछ सोचते हुए पापा-क्लिक! हैंडपम्प के नीचे नहाते हुए पापा-क्लिक! पेडों पर उग आए बौर को एकटक देखते हुए पापा-क्लिक!

कोई त्यौहार खाली नहीं जाता होगा जब पापा खुद ही मेरे कैमरे में नई रील न डलवा लाते हों। महीने में एक-आध बार तो आउटिंग भी जरूर हो जाती। आकाश को छूते हुए देवदार के पेड पिंजोर बाग की ऊंची-ऊंची दीवारों पर फैला बौगनवेलिया छतबीर चिडिया घर के जानवर रॉक-गार्डन पापा खुद ही ले जाते सभी जगह।

जिस तरह से मेरी फोटोग्राफी में निखार आता गया था पापा हैरान थे। अम्मा तो बराबर चिल्लाती रहतीं- ऐसे शौक भी कभी लडकियों ने पाले। ये चीजें तो मर्द के हाथों में ही जंचें।कोई सिलाई-कढाई हो तो लडकियों के हाथ में शोभा भी दे।

-अम्मा जरा इसी तरह गुस्से में चिल्लाती रहना। मैं अभी आई एक मिनट! बस्सप्लीज! अगले ही पल कैमरा मेरे हाथों में होता। और टेढी भौहों वाली अम्मा-क्लिक! मेरा और पापा का ठहाका देर तक हवा में गूंजता रहता। अम्मा बेचारी की हमारे आगे जरा भी न चल पाती।

जिस दिन पापा का देहान्त हुआ मैं बिल्कुल जड हो आई थी। लगा था मस्तिष्क बिल्कुल खाली हो आया है। बस एक शून्य है जो मेरे बाहर भीतर व्याप गया है। बिल्कुल नहीं रोई थी मैं। लग तो रहा था अभी हंसी का फुहारा मेरे मुंह से फूट पडेगा। देखो तो पापा कैसे सोए पडे हैं। पहले सोते थे तो फ-र्-र - फ-र्-र खर्राटों की आवाज आया करती थी। अब तो सांस भी रोके हुए हैं। मुझे इन्हें सतर्क कर देना चाहिए। अगर देर तक इसी तरह पडे रहे तो मैं क्लिक%कर दूंगी।

-अरी तू क्या सोच रही है? अम्मा ने मुझे कंधे से आकर झिंझोडा था- तू तो सारी दुनिया अपने कैमरे में कैद कर लेना चाहती थी। अपने पापा को भी इसमें कैद क्यों नहीं करती। जल्दी उठ! नहीं तो ये लोग तेरे पापा को ले जाएंगे।

अम्मा यह क्या कह गई? में जार-जार फूट पडी थी- नहीं अम्मा! मैं पापा को इस हालत में अपने कैमरे में कैद नहीं कर सकती नहीं कर सकती!

-पगल मत बन! जल्दी उठ! और अम्मा ने खुद ही कैमरा मेरे हाथ में लाकर थमा दिया था।

मरे हुए पापा-क्लिक! नहीं पापा नहीं मर सकते। पापा कभी नहीं मर सकते। लेकिन पापा सच में मर गए थे। उस वक्त पापा की फोटो न खींची होती तो आज मैं सच में पछताती।

राव साहब कब से मेरे कैमरे के इन्तजार में खडे थे। यों मेरे कैमरा लाने तक उन्होंने अपने कैमरे के काफी पुर्जे इधर-उधर घुमा लिए थे लेकिन कहीं से मशीनरी ऐसी अड गई थी कि इस वक्त वह कैमरा न होकर मात्र एक डिब्बा ही रह गया था। चार-पांच फोटो लिए थे राव साहब ने । दो जीजाजी मेरे और अम्मा के। शेष मुझ अकेली के।

सुनीता जरा अपनी फोटोग्राफी का कमाल भी तो दिखाओ। जीजाजी बोले थे। एकाएक वे रावसाहब से मुखातिब हुए- राव साहब आपका और सुनीता का मुकाबला है इस वक्त। देखते हैं किसका खिंचा फोटो ज्यादा सुन्दर आता है। मुंह से फिसल गया था।

-दांव पर तो हम लगा ही चुके हैं। जीजाजी ने धीरे से कहा तो मैं जरा चौंकी थी। लेकिन मजाक करने का मूड बराबर बना हुआ था सो कह दिया- किसी द्रोपदी को लगा रहे हैं क्या?

पता नहीं क्यों जीजाजी एकाएक चुप से हो आए। चेहरे के भाव भी एकदम से बदल गए थे। मेरी इस बात पर इतना नाराज क्यों हो आए हैं? मैं तो मजाक कर रही थी।

लेकिन मेरे इस मजाक पर नाराज नहीं हुए थे वे। दरअसल मैं बात ही इतनी सच्ची कह गई थी कि जीजाजी उसे झेल ही नहीं पाए थे। दस-पन्द्रह मिनट के लिए जीजाजी बाजार

का कह कर गए तो अम्मा पूछने लगी- कैसा लगा लडक़ा ?

-लडक़ा ! में चौंकी थी- कैसा लडक़ा ? कौन लडक़ा ? अम्मा की बात पर सच में मैं असमंजस में पड आई थी।

-राव की ही बात कर रही हूं। उसने तो हां कर दी है।

-राव साहब ! यह क्या कह रही हो अम्मा ! वह लडक़ा है या आदमी ?

-बस-बस ! बहुत जुबान खुल गई है तेरी। अपनी उम्र का भी सोचा है कभी। पूरे तीस की होने को आ रही है। और फिर उसमें कमी भी क्या है। असिस्टैंट डॉयरैक्टर है। पचास हजार रूपया तन्खवाह लेता है।

-अम्मा मुझे सोचने का मौका दो।
-सोचने का मौका अब नहीं दूंगी। मैं सब समझती हूं। बाद में न-नुकुर कर जाएगी। मेरे को इतना बता दे कब तक मेरी छाती पर मूंग दलती रहेगी।

-अगर ऐसा ही है अम्मा तो तू हां कह दे।

सोचा था जीजाजी और राव साहब के लौटने तक अम्मा का मन अवश्य बदल जाएगा। लेकिन यह क्या ! वे लोग लौटे तो राव साहब के हाथ में मिठाई के दो डिब्बे थे।

-इन सब की क्या जरूरत थी ? अम्मा कह रही थी।

-मुंह तो मीठा करवाना था। अम्मा तेजी से रसोई की ओर मुडी और स्टील की दो तश्तरियां उठा लाई थीं। राव साहब ने एक तश्तरी में गुलाब-जामुन पलटे दूसरी में बर्फी।

-लीजिए पहले आप मुंह मीठा कीजिए ! राव साहब ने गुलाब-जामुन का डिब्बा मेरी ओर बढाया तो जीजाजी ठहाका मार कर हंसे- अरे भई ! ऐसे भी मुंह मीठा करवाया जाता है कभी !

राव साहब समझ गए थे। जरा झेंपते हुए उन्होंने एक गुलाब -जामुन उठा कर मेरे होंठों की तरफ बढा दिया।

-अरे-रे जरा रूकना ! जीजाजी एकाएक चिल्लाए- बस इसी तरह एक मिनट प्लीज ! अगले ही पल कैमरा उनके हाथ में था।

सुनीता को गुलाब-जामुन खिलाते हुए राव साहब- क्लिक !

एक द्रोपदी दांव पर लगती- क्लिक !

-ओह ब्यूटीफुल ! लवली ! देखो सुनीता हमने तुम्हें अपने कैमरे में कैद कर लिया। मुझे ! मन तो हुआ कह दूं- मुझे नहीं मेरी एक पूरी जिन्दगी को आपने इसमें कैद कर लिया। अब कैमरा राव साहब के हाथ में था। और मैं खुद को चीरहरण के लिए तैयार करने लगी थी।

मेरे सपनो का भारत तुम बना देना.

मेरे सपनो का भारत तुम बना देना.
एक कमरे में राम,एक कमरे में रहीम,
आंगन में ईशा को बिठा देना.
मेरे सपनो का भारत तुम बना देना.

जंहा न कोई हिन्दू, मुस्लिम,
ईशा का भी भेद मिटा देना.
सभी को इंसान एक दिन तुम बना देना.
मेरे सपनो का भारत तुम बना देना.

पूछे जो भी नाम तेरा आपना काम बता देना.
चले तू भी मुस्कुरा कर चले वो भी मुस्कुरा कर.
सभी को गले से लगा लेना.
मेरे सपनो का भारत बना देना.

www.publicpointnews.com

संस्कृत नीतिकथाओं में पंचतंत्र का पहला स्थान माना जाता है। यद्यपि यह पुस्तक अपने मूल रुप में नहीं रह गया है, फिर भी उपलब्ध अनुवादों के आधार पर इसकी रचना तीसरी शताब्दी के आस-पास निर्धारित की गई है। इस ग्रंथ के रचयिता पं. विष्णु शर्मा है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि जब इस ग्रंथ की रचना पूरी हुई, तब उनकी उम्र 80 वर्ष के करीब थी। पंचतंत्र को पाँच तंत्रों (भागों) में बाँटा गया है पंचतंत्र मित्रभेद, पंचतंत्र मित्रलाभ , पंचतंत्र संधि-विग्रह, पंचतंत्र लब्ध प्रणाश ,पंचतंत्र अपरीक्षित कारक मनोविज्ञान, व्यवहारिकता तथा राजकाज के सिद्धांतों से परिचित कराती ये कहानियाँ सभी विषयों को बड़े ही रोचक तरीके से सामने रखती है तथा साथ ही साथ एक सीख देने की कोशिश करती है। पंचतंत्र की कई कहानियों में मनुष्य - पात्रों के अलावा कई बार पशु-पक्षियों को भी कथा का पात्र बनाया गया है तथा उनसे कई शिक्षाप्रद बातें कहलवाने की कोशिश की गई है।पंचतन्त्र की कहानियां बहुत जीवंत हैं । इनमे लोकव्यवहार को बहुत सरल तरीके से समझाया गया है। बहुत से लोग इस पुस्तक को नेतृत्व क्षमता विकसित करने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं। इस पुस्तक की महत्ता इसी से प्रतिपादित होती है कि इसका अनुवाद विश्व की लगभग हर भाषा में हो चुका है।

बहुत समय पहले की बात हैं। एक सुदंर हरे-भरे वन में चार मित्र रहते थे। उनमें से एक था चूहा, दूसरा कौआ, तीसरा हिरण और चौथा कछुआ। अलग-अलगजाति के होने के बावजूद उनमें बहुत घनिष्टता थी। चारों एक-दूसरे पर जान छिडकते थे। चारों घुल-मिलकर रहते, खूब बातें करते और खेलते। वन में एक निर्मल जल का सरोवर था, जिसमें वह कछुआ रहता था। सरोवर के तट के पास ही एक जामुन का बडा पेड था। उसी पर बने अपने घोंसले में कौवा रहता था। पेड के नीचे जमीन में बिल बनाकर चूहा रहता था और निकट ही घनी झाडियों में ही हिरण का बसेरा था।दिन को कछुआ तट के रेत में धूप सेकता रहता पानी में डुबकियां लगाता। बाकी तिन मित्र भोजन की तलाश में निकल पडते और दूर तक घूमकर सूर्यास्त के समय लौट आते। चारों मित्र इकठ्ठे होते एक दूसरे के गले लगते, खेलते और धमा-चौकडी मचाते।

एक दिन शाम को चूहा और कौवा तो लौट आए, परन्तु हिरण नहीं लौटा। तीनो मित्र बैठकर उसकी राह देखने लगे। उनका मन खेलने को भी नहीं हुआ। कछुआ भर्राए गले से बोला वह तो रोज तुम दोनों से भी पहले लौट आता था। आज पता नहीं, क्या बात हो गई, जो अब तक नहीं आया। मेरा तो दिल डूबा जा रहा हैं।

चूहे ने चिंतित स्वर में कहा हां, बात बहुत गंभीर हैं। जरूर वह किसी मुसीबत में पड गया हैं। अब हम क्या करे? कौवे ने ऊपर देखते हुए अपनी चोंच खोली मित्रो, वह जिधर चरने प्राय: जाता हैं, उधर मैं उडकर देख आता, पर अंधेरा घिरने लगा हैं। नीचे कुछ नजर नहीं आएगा। हमें सुबह तक प्रतीक्षा करनी होगी। सुबह होते ही मैं उडकर जाऊंगा और उसकी कुछ खबर लाकर तुम्हें दूंगा।

कछुए ने सिर हिलाया अपने मित्र की कुशलता जाने बिना रात को नींद कैसे आएगी? दिल को चैन कैसे पडेगा? मैं तो उस ओर अभी चल पडता हूं मेरी चाल भी बहुत धीमी हैंम् तुम दोनों सुबह आ जाना । चूहा बोला मुझसे भी हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा जाएगा। मैं भी कछुए भाई के साथ चल पड सकता हूं, कौए भाई, तुम पौ फटते ही चल पडना। कछुआ और चूहा तो चल दिए। कौवे ने रात आंखो-आंखो में काटी। जैसे ही पौ फटी, कौआ उड चला उडते-उडते चारों ओर नजर डालता जा रहा था। आगे एक स्थान पर कछुआ और चूहा जाते उसे नजर आए कौवे ने कां कां करके उन्हें सूचना दी कि उन्हें देख लिया हैं और वह खोज में आगे जा रहा हैं। अब कौवे ने हिरण को पुकारना भी शुरु किया मित्र हिरण , तुम कहां हो? आवाज दो मित्र।

तभी उसे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। स्वर उसके मित्र हिरण का-सा था। उस आवाज की दिशा में उडकर वह सीधा उस जगह पहुंचा, जहां हिरण एक शिकारी के जाल में फंसा चटपटा रहा था। हिरण ने रोते हुए बताया कि कैसे एक निर्दयी शिकारी ने वहां जाल बिछा रखा था। दुर्भाग्यवश वह जाल न देख पाया और फंस गया। हिरण सुबका शिकारी आता ही होगा वह मुझे पकडकर ले जाएगा और मेरी कहानी खत्म समझो। मित्र कौवे! तुम चूहे और कछुए को भी मेरा अंतिम नमस्कार कहना।

कौआ बोला मित्र, हम जान की बाजी लगाकर भी तुम्हें छुडा लेंगे। हिरण ने निराशा व्यक्त की लेकिन तुम ऐसा कैसे कर पाओगे? कौवे ने पंख फडफडाए सुनो, मैं अपने मित्र चूहे

को पीठ पर बिठाकर ले आता हूं। वह अपने पैने दांतो से जाल कुतर देगा। हिरण को आशा की किरण दिखाई दी। उसकी आंखे चमक उठीं तो मित्र, चूहे भाई को शीघ्र ले आओ।

कौआ उडा और तेजी से वहां पहुंचा, जहां कछुआ तथा चूहा आ पहुंचे थे। कौवे ने समय नष्ट किए बिना बताया मित्रो, हमारा मित्र हिरण एक दुष्ट शिकारी के जाल में कैद हैं। जान की बाजी लगी हैं शिकारी के आने से पहले हमने उसे न छुडाया तो वह मारा जायेगा। कछुआ हकलाया उसके लिए हमें क्या करना होगा? जल्दी बताओ? चूहे के तेज दिमाग ने कौवे का इशारा समझ लिया था घबराओ मत। कौवे भाई, मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर हिरण के पास ले चलो।

चूहे को जाल कुतरकर हिरण को मुक्त करने में अधिक देर नहीं लगी। मुक्त होते ही हिरण ने अपने मित्रों को गले लगा लिया और रुंधे गले से उन्हें धन्यवाद दिया। तभी कछुआ भी वहां आ पहुचा और खुशी के आलम में शामिल हो गया। हिरण बोला मित्र, आप भी आ गए। मैं भाग्यशाली हूं, जिसे ऐसे सच्चे मित्र मिले हैं।

चारों मित्र भाव विभोर होकर खुशी में नाचने लगे। एकाएक, हिरण चौंका और उसने मित्रों को चेतावनी दी भाइयो, देखो वह जालिम शिकारी आ रहा हैं। तुरंत छिप जाओ। चूहा फौरन पास के एक बिल में घुस गया। कौआ उडकर पेड की ऊंची डाल पर जा बैठा। हिरण एक ही छलांग में पास की झाडी में जा घुसा व ओझल हो गया। परंतु मंद गति का कछुआ दो कदम भी न जा पाया था कि शिकारी आ धमका। उसने जाल को कटा देखकर अपना माथा पीटा क्या फंसा था और किसने काटा? यह जानने के लिए वह पैरों के निशानों के सुराग ढूंढने के लिए इधर-उधर देख ही रहा था कि उसकी नजर रेंगकर जाते कछुए पर पडी। उसकी आंखें चमक उठी वाह! भागते चोर की लंगोटी ही सही। अब यही कछुआ मेरे परिवार के आज के भोजन के काम आएगा।

बस उसने कछुए को उठाकर अपने थैले में डाला और जाल समेटकर चलने लगा। कौवे ने तुरंत हिरण व चूहे को बुलाकर कहा मित्रो, हमारे मित्र कछुए को शिकारी थैले में डालकर ले जा रहा हैं। चूहा बोला हमें अपने मित्र को छुडाना चाहिए। लेकिन कैसे?

इस बार हिरण ने समस्या का हल सुझाया मित्रो, हमें चाल चलनी होगी। मैं लंगडाता हुआ शिकारी के आगे से निकलूंगा। मुझे लंगडा जान वह मुझे पकडने के लिए कछुए वाला थैला छोड मेरे पीछे दौडेगा। मैं उसे दूर ले जाकर चकमा दूंगा। इस बीच चूहा भाई थैले को कुतरकर कछुए को आजाद कर देगें। बस।

योजना अच्छी थी लंगडाकर चलते हिरण को देख शिकारी की बांछे खिल उठी। वह थैला पटककर हिरण के पीछे भागा। हिरण उसे लंगडाने का नाटक कर घने वन की ओर ले गया और फिर चौकडी भरता %यह जा वह जा% हो गया। शिकारी दांत पीसता रह गया। अब कछुए से ही काम चलाने का इरादा बनाकर लौटा तो उसे थैला खाली मिला। उसमें छेद बना हुआ था। शिकारी मुंह लटकाकर खाली हाथ घर लौट गया।

सीख:

सच्चे मित्र हों तो जीवन में मुसीबतों का आसानी से सामना किया जा सकता हैं।

जनतन्त्र का जन्म

– रामधारी सिंह दिनकर

सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह,समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

जनता ? हां,मिट्टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े-पाले की कसक सदा सहनेवाली,
जब अंग-अंग में लगे सांप हो चुस रहे
तब भी न कभी मुंह खोल दर्द कहनेवाली।

जनता ? हां,लंबी - बडी जीभ की वही कसम,
जनता,सचमुच ही, बडी वेदना सहती है।
सो ठीक,मगर,आखिर,इस पर जनमत क्या है ?
है प्रश्न गूढ़ जनता इस पर क्या कहती है ?

मानो,जनता ही फूल जिसे अहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दूधमुंही जिसे बहलाने के
जन्तर-मन्तर सीमित हों चार खिलौनों में।

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
सांसों के बल से ताज हवा में उड़ता है,
जनता की रोके राह,समय में ताव कहां ?
वह जिधर चाहती,काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अंधकार
बीता; गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं;
यह और नहीं कोई,जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते जाते हैं।

सब से विराट जनतंत्र जगत का आ पहुंचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तय करो
अभिषेक आज राजा का नहीं,प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिये तू किसे ढूंढता है मूरख,
मन्दिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में ?
देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

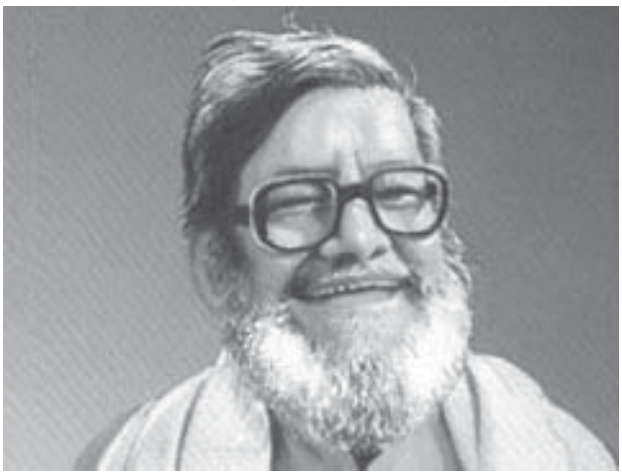

छापे

ठंडी आहें भर रहे, लक्ष्मीपति श्रीमान्,
नित्य नये छापे पड़े, क्या होगा भगवान्?

क्या होगा भगवान्, प्राण किस भांति बचाएं?
दो नम्बरवाली लक्ष्मी को कहां छिपाएं?

धरती में गाढ़ें तो सर्प बैठ जाएंगे,
रखें दोस्त के घर, वापस नहिं आ पाएंगे।

'लाकर' लेकर सो रहा, रे मन मूरख जाग,
ला-कर ला-कर रट रहा, इनकमटैक्स विभाग।

इनकमटैक्स विभाग, बैंक के अन्दर आकर,
धनी धुन रहे शीश, सील कर डाले लाकर।

कहं काका, जपते थे जिसकी निशि-दिन माला,
परेशान हैं आज उसी लक्ष्मी से लाला।

शिव का धनुष

विद्यालय में आ गए इंस्पेक्टर-स्कूल,
छठी क्लास में पढ़ रहा विद्यार्थी हरफूल।
विद्यार्थी हरफूल, प्रश्न उससे कर बैठे,
किसने तोड़ा शिव का धनुष बताओ बेटे!

छात्र सिटपिटा गया बिचारा, धीरज छोड़ा,
हाथ जोड़कर बोला, सर! मैंने ना तोड़ा।
यह उत्तर सुन आ गया सर के सर को ताव,
फौरन बुलवाए गए हेडमास्टर साव।

हेडमास्टर साब, पढ़ाते हो क्या इनको,
किसने तोड़ा धनुष नहीं मालूम है जिनको।
हेडमास्टर भन्नाया-फिर तोड़ा किसने?
झूठ बोलता है, जरुर तोड़ा है इसने।

इंस्पेकटर अब क्या कहे, मन ही मन मुस्कात,
ऑफिस में आकर हुई मैनेजर से बात।
मैनेजर से बात, छात्र में जितनी भी है,
उससे दुगुनी बुद्धि हेडमास्टर जी की है।

मैनेजर बोला, जी हम चन्दा कर लेंगे
नया धनुष उससे भी अच्छा बनवा देंगे।
शिक्षा-मंत्री तक गए जब उनके जज़बात,
माननीय गदगद हुए, बहुत खुशी की बात।

बहुत खुशी की बात, धन्य हैं ऐसे बच्चे,
अध्यापक, मैनेजर भी कितने सच्चे,
कह दो उनसे, चन्दा कुछ ज्यादा कर लेना,
जो बैलेन्स बचे, वो हमको भिजवा देना।